२७५

मूल्य : पौने दो रुपये (२७५ नये पैसे)

प्रथम संस्करण : जुलाई १९५७

आवरण : नरेन्द्र श्रीवास्तव

प्रकाशक : राजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली

मुद्रक : हिन्दी प्रिंटिंग प्रेस, दिल्ली

क्सपियर विश्व-साहित्य के गौरव, अंग्रेजी भाषा के अद्वितीय नाटककार शेक्सपियर का जन्म २६ अप्रैल, १५६४ ई० मे स्ट्रैटफोर्ड-आन्-ऐवोन नामक स्थान मे हुआ। उसकी बाल्यावस्था के विषय मे बहुत कम ज्ञात है। उसका पिता एक किसान का पुत्र था, जिसने अपने पुत्र की शिक्षा का अच्छा प्रबन्ध भी नही किया। १५८२ ई० मे शेक्सपियर का विवाह अपने से आठ वर्ष बडी ऐनहैथवे से हुआ और सम्भवतः उसका पारिवारिक जीवन सन्तोषजनक नही था। महारानी ऐलिज़ाबेथ के शासनकाल मे १५८७ ई० मे शेक्सपियर लन्दन जाकर नाटक कम्पनियो मे काम करने लगा। हमारे जायसी, सूर और तुलसी का प्राय. समकालीन यह कवि यही आकर यशस्वी हुआ और उसने अनेक नाटक लिखे, जिनसे उसने धन और यश दोनो कमाये। १६१२ ई० मे उसने लिखना छोड़ दिया और अपने जन्मस्थान को लौट गया और शेष जीवन उसने समृद्धि तथा सम्मान से बिताया। १६१६ ई० मे उसका स्वर्गवास हुआ।

इस महान् नाटककार ने जीवन के इतने पहलुओ को इतनी गहराई से चित्रित किया है कि वह विश्व-साहित्य मे अपना सानी सहज ही नही पाता। मारलो तथा बेन जानसन जैसे उसके समकालीन कवि उसका उपहास करते रहे, किन्तु वे तो लुप्त-प्राय. हो गये, और यह कविकुल-दिवाकर आज भी देदीप्यमान है।

शेक्सपियर ने लगभग ३६ नाटक लिखे है, कविताएँ अलग।

उसके कुछ प्रसिद्ध नाटक है—जूलियस सीजर, ऑथेलो, मैकवैथ, हैमलेट, लियर, रोमियो जूलियट (दु खान्त), ग्रीष्म-मध्यरात्रि का स्वप्न, वेनिस का सौदागर, बारहवी रात, तिल का ताड (मच एडू अवाउट नथिंग), शीतकाल की कथा, तूफान (सुखान्त)। इनके अतिरिक्त ऐतिहासिक नाटक है तथा प्रहसन भी है। प्राय: उसके सभी नाटक प्रसिद्ध है।

शेक्सपियर ने मानव-जीवन की शाश्वत भावनाओ को बड़े ही कुशल कलाकार की भाँति चित्रित किया है। उसके पात्र आज भी जीवित दिखाई देते है। जिस भाषा मे शेक्सपियर के नाटको का अनुवाद नही है वह भाषाओ मे कभी नही गिनी जा सकती।

भूमिका

'मैकबैथ' शेक्सपियर के दुःखात नाटको मे अत्यंत लोकप्रिय है। इसके रचनाकाल के सबध मे यद्यपि मतभेद है तथापि नाटक के पात्रो और उसकी रचना-शैली से पता चलता है कि शेक्सपियर ने इसकी रचना 'किग लियर' के पश्चात् की थी। इस प्रकार इसका रचना काल सन् १६०५-६ ठहरता है। वस्तुत. यह युग शेक्सपियर जैसे महान् मेधावी नाटककार के लिये अपनी दुःखांत कृतियो के अनुकूल भी था।

शेक्सपियर ने जिस प्रकार अपने अन्य नाटको के कथानको के लिये दूसरी पूर्ववर्त्ती कृतियो से प्रेरणा ली है उसी प्रकार मूलरूप मे मैकबैथ का कथानक भी उसका अपना नही है। यह एक दुखात नाटक हैं एव इसके कथानक का आधार विश्वविश्रुत अंग्रेजी लेखक राफेल होलिन्शेड को स्कॉटलैण्ड सबधी एक ऐतिहासिक कृति है।

मैकबैथ मे जिन घटनाओ का वर्णन है उन्हे पूर्णतया ऐतिहासिक अथवा काल्पनिक मान लेना भी युक्तियुक्त न होगा। 'कॉनसाइज् डिक्शनरी ऑफ नेशनल वाइओग्रॉफी' मे 'मॅकवैथ' के अतर्गत लिखा है—"मैकबैथ (मृ० १०५७) स्कॉटलैण्ड का बादशाह, स्कॉटलैण्ड के राजा डकन की फौजो का कमाण्डर तथा १०४० मे उसका कत्लकर राज्य पर अपना अधिकार करने वाला जिसे नॉर्थम्ब्रिया के अर्ल सिवार्ड ने १०५४ मे हराया तथा १०५७ मे मैलकॉम तृतीय ने मार डाला।"

मैकवैथ के सवध मे इतिहास मे और अधिक स्पष्ट उल्लेख न मिलने के कारण शेक्सपियर ने होलिन्शेड द्वारा कथित मैकबेथ के कथातत्त्व को अपने मनोनुकूल ढालने मे पूरी स्वतत्रता से

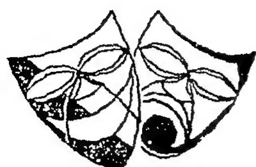
काम लिया। उसका उद्देश्य जितना एक दुखात नाटक लिखने का था उतना ऐतिहासिक नाटक लिखने का नही। अपनी अप्रतिम प्रतिभा से पात्रो का चयन कर, उन्हे नयी साज-सज्जा मे प्रस्तुत कर एवं घटनाओ का प्रभावोत्पादक वर्गीकरण करने के पश्चात् शेक्सपियर, मुख्य ऐतिहासिक घटना से कही अधिक अपनी इस कृति मे रोचकता उत्पन्न करने मे सफल हुआ है।

मैकबैथ का प्रकाशन शेक्सपियर की मृत्यु के पश्चात् हुआ। इसमे आरभ से अत तक जीवन और मृत्यु का रोमाचक सघर्ष वर्णित है। भयानक अमानुषीय घात-प्रतिघातो से दर्शक द्रवित एव उद्वेलित हो उठते हैं। मैकबैथ मे जीवन के प्रति व्यग्य भी प्रभूत मात्रा मे मुखरित है। इसमे शेक्सपियर ने अपनी असाधारण एव रहस्यपूर्ण मन.शक्ति को सतुष्ट करने के लिये दो हत्यारो की अवतारणा की है और जेसा कि साधारणतया उसकी सभी कृतियो मे होता है, इन दोनो हत्यारो मे विवेकपूर्ण स्पष्ट अतर भी दर्शाया है। हत्यारा होते हुए भी एक के प्रति दर्शक की सहानुभूति उमड पड़ती है और दूसरे के प्रति घृणा का उद्रेक।

प्रत्येक मनुष्य मे जब दानवता जागृत होती है, उसकी मनुष्यता लुप्त हो जाती है किंतु जीवन मे ऐसे भी स्थल आते हैं जहाँ वह परनक्रूर होते हुए भी अपनी मानवोचित भावनाओ से संचालित होने लगता है।

मानव-मन की गहराइयो का व्यग्यपूर्ण अकन मैकबैथ की विशेपता है। शेक्सपियर एक महान् नाटककार है और मैकबैथ उसकी अन्य महान् कृतियो मे अपना प्रमुख स्थान रखता है।

—रांगेय राघव



पात्र-परिचय

डंकन	:	स्काटलैंड का सम्राट्
मैलकॉम डोनलबेन	}	सम्राट् के पुत्र
मैकबैथ बैंको	}	सम्राट् की सेना के प्रमुख
लैनोक्स मैकडफ् रौस मैंटियथ ऐंङ्गस	}	स्कॉटलैंड के भद्र पुरुष
फ्लीन्स	:	बैंको का पुत्र
सिवार्ड	:	नॉर्थम्बरलैंड का अर्ल और
	:	अंगरेजी सेना के प्रमुख
बालक सिवार्ड		सिवार्ड का पुत्र
सीटॉन	:	मैकबैथ का अफसर
लड़का	:	मैकडफ का पुत्र
लेडी मैकबैथ	:	मैकबैथ की पत्नी
लेडी मैकडफ्	:	मैकडफ की पत्नी

[लेडी मैकडफ् की परिचारिकाएँ, हिकेट और तीन डाइन]
[अँगरेजी डॉक्टर, स्कॉच डॉक्टर, सार्जन्ट, कुली, वृद्ध पुरुष, हत्यारे, भद्र पुरुष, अफ़सर, सिपाही, परिचारकाएँ और दूत बैंको का भूत एवं अन्य पिशाच इत्यादि ।]

पहला अंक

दृश्य १

[एक रेगिस्तानी स्थान]

[बादलो की गडगड़ाहट के बीच बिजली चमकती है।
तीन डाइनो का प्रवेश]

पहली डाइन : ऐसे समय मे जब गड़गड़ाहट करते बादलो के बीच बिजली फट रही हो और पानी भी बरसता हो हम तीनो फिर कब मिलेगे ?

दूसरी डाइन : उसी समय जब यह युद्धनाद शात होकर यह घोषणा कर दे कि कौन जीत गया और कौन हार गया।

तीसरी डाइन : पर वह तो सूरज छिपने से पहले ही हो जायेगा।

पहली डाइन : पर हाँ, मिलेगे कहाँ ?

दूसरी डाइन : उसी उजाड़ मे।

तीसरी डाइन : वहाँ तो हमे मैकवैथ भी मिलेगा न ?

पहली डाइन आई, ग्रेमल्किन[1]।

दूसरी डाइन : पैड़ौक[2] मेरे पीछे पुकार रहा है।

तीसरी डाइन : अभी एक क्षण मे।

सभी : जिसमे दूसरो की भलाई है उससे हमे घृणा है और जिससे वे बुरा समझ कर घृणा करते है वही हमारे लिये अच्छा है। आओ,

---

१. Graymalkin (ग्रेमल्किन)—एक तरह की भूरी बिल्ली का नाम। प्रत्येक डाइन अपने साथ इस तरह का कोई पशु या पक्षी रखती है जो उसके इशारे पर कोई भी रूप बदल सकता है। इससे वे दूसरो पर जादू किया करती हैं।

२. Paddock (पैडोक)—इसी तरह एक मेढक का नाम।

कोहरे और धुन्ध-भरी हवा मे होकर उड चले।

[सभी जाती है।]

दृश्य २

[फोरेस के निकट एक शिविर]

[अन्दर भय-ध्वनि। सम्राट डंकन, मैलकॉम, डोनलबेन, लैनोक्स का अनुचरों के साथ प्रवेश। खून से भीगा हुआ एक सार्जेन्ट आता है।]

डंकन : कौन है यह जो इस तरह खून से भीगा हुआ है। उसकी दयनीय अवस्था से लगता है कि वह अभी रणभूमि से लौटा है। उससे हमे विद्रोहियो के बारे मे नवीनतम परिस्थिति का अवश्य कुछ पता लगेगा।

मैलकॉम : अरे, यह तो वही सार्जेन्ट है जो एक वफादार वीर सैनिक की तरह मुझे बन्दी होने से बचाने के लिये लडा था। स्वागत है, मेरे पराक्रमी मित्र! जिस समय तुम रणभूमि से चले थे उस समय युद्ध की क्या स्थिति थी, सम्राट यह तुमसे जानना चाहते है।

सार्जेन्ट : अभी से कुछ निश्चित नही कहा जा सकता स्वामी! दोनो सेनाओं के बीच अभी वैसा ही संघर्ष है जैसा होड मे बढते दो तैराक जब पूरी तरह थक जाते है तो आपस मे लिपट कर एक-दूसरे की चालो को काटने की कोशिश करते है। उस निर्दयी मैकडोनवाल्ड ने जिसमे दुष्टता प्रतिदिन बढती जाती है और जो स्वभाव से ही विद्रोही है, आयर्लैंड से हल्के शस्त्रो से सुसज्जित सेनाएँ और पश्चिमी द्वीपो से भारी शस्त्रो से सुसज्जित अश्वारोही बुलवा लिये हैं। लेकिन कुछ भी हो, वीर मैकबैथ के सामने वे सब कायर हैं। वे साक्षात वीरता देवी के पुत्र है। मैंने देखा कि

भाग्य को उपेक्षा-भरी दृष्टि से देखते हुए और अपनी तलवार घुमाकर मार-काट करते हुए जिस तरह उन्होने शत्रु के सीने तक पहुँचने का मार्ग बना लिया था उससे सच ही वे वीर कहलाने के अधिकारी है। वे तब तक वहाँ से नही हटे जब तक उन्होंने शत्रु के जबडे तक नही काट दिये और उसके सिर को काटकर हमारे मोर्चे की मुँडेर पर नही टाँक दिया।

डंकन : ओ मेरे वीर भाई ! मेरे योग्य और समर्थ साथी !

सार्जेन्ट : जैसे सूरज छिपते-छिपते कभी ऐसे भयानक तूफान उठते है जो जहाजो को उलटते हुए चले जाते है और फिर उसी भयावने स्वर मे गर्जन करते है, उसी तरह जहाँ लगता था कि अब कुछ सुख-चैन से बैठेगे उसी समय एक के ऊपर एक तूफान-सा आता ही जाता था। ओ स्कॉटलैण्ड के स्वामी ! मेरी बात ध्यान से सुनो। हमारे उन वीर सैनिको ने जिनकी रग-रग मे वीरता और न्याय का खून दौड रहा है उस भगोडी और हल्के-से सुसज्जित सेना को ऐसा खदेडा कि वह सिर पर पैर रख कर भाग जाने के लिये उतारू हो गई पर उसी समय नार्वे के राजा ने अवसर देखकर अपने चमकते हुए शस्त्रो से तथा और नई सेनाएँ बुलाकर हम पर अकस्मात हमला कर दिया।

डंकन : पर क्या इस पर हमारे सेनापति मैकबैथ और बैंको का खून नही खौला ?

सार्जेन्ट . अवश्य ! उनका खून उसी तरह चढ गया जैसे बाज़ का गौरैय्या देख कर और शेर का एक खरगोश देख कर चढ़ जाता है। मै यही कहूँगा स्वामी ! कि दूनी बारूद से लदी तोपो की तरह दूनी ताकत के साथ वे शत्रु की सेना पर टूट पडे। कौन जाने कि वे अपने घावो से बहते गरम खून मे नहाने के लिये कूदे थे या इसे एक

दूसरा गोलगोथा बनाना चाहते थे। मै नही समझता इसके अलावा उनका और कोई तात्पर्य्य था। लेकिन मैं इतना थक गया हूँ और मेरे शरीर पर घाव भी हैं जिससे मुझे बेहोशी-सी चढी आ रही है। मेरे घाव चिकित्सा के लिये बेचैन-से हो रहे है स्वामी!

डंकन : आह! तुम्हारे शरीर मे जैसे घाव है उन्ही के योग्य तुम्हारे वीरता से भरे हुए शब्द है। दोनो ही महान सम्मान के योग्य है। (अनुचरो से) जाओ, सार्जेन्ट की चिकित्सा की तुरन्त व्यवस्था करो।

[अनुचरो के साथ सार्जेन्ट जाता है।]

[रौस का प्रवेश]

कौन आ रहा है यहाँ ?

मैलकॉम : रौस, श्रेष्ठ 'थेन' हैं।

लैनोक्स : उनकी आँखो मे कैसी उतावली मालूम हो रही है। ठीक भी है, जो व्यक्ति अजीब-अजीब घटनाओ की सूचना देने आता है वह ऐसा ही दीखता है।

रौस : ईश्वर सम्राट की रक्षा करे!

डंकन : कहाँ से आ रहे है आप श्रेष्ठ थेन!

रौस : हे महान सम्राट! मै फाइफ से आ रहा हूँ, जहाँ आकाश मे नॉर्वे का झडा फहरा रहा है। नॉर्वे के राजा ने हृदय को हिला देने वाली एक विशाल सेना ले कर और उस धोखेबाज़ और गद्दार काउडोर के थेन की सहायता लेकर एक घमासान युद्ध प्रारम्भ कर दिया तब देवी भवानी के पति उसी मैकवैथ ने अपना कवच पहना और वह शत्रु के बीच कूद पडा। मै क्या कहूँ, शत्रु की तलवार से तलवार और हाथ से हाथ टकरा कर उसने इस तरह सामना किया कि शत्रु अपनी सारी वीरता भूल गया और अन्त मे हमारी विजय हुई।

डंकन : आह ! महान हर्ष !

रौस अब इसी कारण नॉर्वे का राजा स्वेनो सन्धि के लिये प्रार्थना कर रहा है। लेकिन हम उसके साथियो की मुर्दा लाशो को जमीन मे तब तक नही दफनाने देंगे जब तक वह 'सेन्ट कॉम्स इञ्च'[1] पर दस हजार डॉलर हमारे बीच बॉट न दे।

डंकन . उस काउडोर के थेन को मै अब तक हृदय से अपना मित्र समझता था पर अब और अधिक वह मुझे धोखे मे नही रख सकेगा। जाओ, और उसके मृत्यु-दण्ड की चारो ओर घोषणा कर दो और मैकबैथ को उसका पूर्व पद देकर सम्मानित कर दो।

रौस : आपकी आज्ञा का पालन होगा स्वामी !

डंकन : ठीक है, जो उसने खोया श्रेष्ठ मैकबैथ ने पा लिया है।

[प्रस्थान]

दृश्य ३

[फौरेस के निकट उजाड भूमि]

[बादल गरजते हैं। तीनो डाइनें आती हैं।]

पहली डाइन · कहाँ रही बहिन ?

दूसरी डाइन सूअर के घेंटे को मार रही थी।

तीसरी डाइन पर तुम कहाँ थी बहिन ?

पहली डाइन एक मल्लाह की स्त्री अपनी झोली मे कुछ अखरोट लिये हुई थी जिन्हे वह चबाती थी, फिर चबाती थी, और चबाती ही जाती थी। मैने कहा : 'मुझे भी दे दो' तो बची-खुची झूठन

---

१ Saint Colme's Inch—सेन्ट कोलम्बिया का टापू जहां 'आइरिश' राजकुमार सैन्ट कोलम्बिया को समर्पित एक मठ के भग्नावशेष पाये जाते हैं। यह एक धार्मिक स्थान माना जाता था।

पर पली उस भूखी और घृणित स्त्री ने भिडक कर कहा : 'भाग जा ओ डाइन ! भाग जा !' उसका पति टाइगर (Tiger) नामक जहाज़ का मालिक है और अब एलैप्पो (Aleppo) गया हुआ है। लेकिन क्या हुआ ? मै एक चलनी मे वैठकर उधर जाऊँगी और विना पूछ वाली एक चूहिया की शक्ल वना कर मै करूँगी, करूँगी, अवश्य कुछ न कुछ करूँगी।

दूसरी डाइन : मै तुम्हे एक हवा दूंगी।

पहली डाइन : वडी दयालु हो तुम।

तीसरी डाइन : और मै भी एक दूसरी हवा दूंगी।

पहली डाइन : इसके अलावा सभी हवाएँ मेरे पास है। मल्लाहो की कुतुबनुमा जो भी दिशा दिखाती है उधर ही वे वेग से वहती है, यहाँ तक कि वन्दरगाहो के अन्दर तक घुस जाती हैं। मै उसके शरीर के सारे खून को चूसकर घास की तरह उसे सुखा डालूंगी, जिससे, न रात और न दिन मे, कभी भी वह पलक तक वन्द नही कर सकेगा। मै उसे एक ऐसे जादू मे वॉध दूंगी कि ८१ हफ्तो तक दु ख मे घुल-घुल कर वह एक दिन विल्कुल मिट जायेगा। यद्यपि मै उसके जहाज़ को डुवा नही सकती पर फिर भी वह तूफानो के थपेडे खाता हुआ इधर-उधर फिकता हुआ ही रहेगा।

यह देखो, मेरे पास क्या है ?

दूसरी डाइन : दिखाओ, दिखाओ।

पहली डाइन : मेरे पास एक ऐसे मल्लाह का अगूठा है जो घर लौटते समय तूफान मे फँस गया और समुद्र की उठती हुई लहरे उसे निगल गई।

[अन्दर नक्कारे की आवाज]

तीसरी डाइन अरे, नक्कारा, सुनो, नक्कारा बज रहा है। लो वह मैकवैथ आ गया।

सभी ओ समुद्र की लहरो पर और पृथ्वी पर तेज़ चलने वाली डाइन बहनो! आओ, आपस मे हाथ मिला कर हम चारो तरफ नाचे। तीन बार तुम, तीन बार मै और फिर तीन बार वह इस तरह नौ बार एक चक्कर बनाये। शान्त! जादू का चक्कर अब पूरा हो गया है।

[मैकवैथ तथा बैंको का प्रवेश]

मैकवैथ इतना बुरा और इतना ही अच्छा दिन मैने अपने ज़ीवन में कभी नही देखा।

बैंको : फौरेस यहाँ से कितनी दूर कहा जाता है ?
पर है, ये पतले और अजीब से कपडे पहने कौन है ? ये तो पृथ्वी पर रहने वाले प्राणियो जैसी तो नही लगती फिर भी पृथ्वी पर है। क्या आश्चर्य्य है!
क्या तुम कोई जीवित प्राणी हो ? या कोई ऐसी चीज़ हो जिस पर मनुष्य को शक करना चाहिये ? अपनी फटी उँगली जिस तरह तुमने अपने ओठ पर रख ली है उससे मालूम होता है कि तुम मेरी वात समझ रही हो। अवश्य तुम कोई स्त्री हो, पर हैं फिर तुम्हारी दाढी देखकर मै कैसे कह दूं कि तुम स्त्री हो।

मैकवैथ अगर तुम बोल सकती हो तो बोलो, कौन हो तुम ?

पहली डाइन : तुम्हारा स्वागत है मैकवैथ। ओ 'ग्लेमिस' के थेन! हम सब की ओर से तुम्हारा स्वागत है।

दूसरी डाइन ओ काउडोर के थेन मैकवैथ! हम सभी की ओर से तुम्हारा अभिनन्दन है।

तीसरी डाइन : स्वागत है उस मैकवैथ का जो अब सम्राट् बनने जा रहा है।

बैंको . क्यो जनाब, ऐसी अच्छी-अच्छी बाते सुनकर भी आप इस तरह बेचैन होकर डर क्यो रहे है ?

(डाइनो से) मै सत्य के नाम पूछता हूँ कि तुम हवा की कोई चीज़ हो या जो कुछ बाहर से दिखाई दे रही हो वही वास्तव मे हो ? तुम मेरे साथी का उसके वर्त्तमान पद और यश के लिये अभिनन्दन कर रही हो और उच्चाधिकारी यहाँ तक कि सम्राट् होने तक की भविष्यवाणी करके उसका स्वागत कर रही हो। इससे वह कुछ उन्मत्त-सा हो उठा है। यदि तुम भविष्य की बात देख सकती हो और यह बता सकती हो कि आगे क्या होगा और क्या नही तो फिर मुझसे भी कहो, मुझसे, जो न तुम्हारी कृपा की भीख मागता है और न तुम्हारी घृणा से तनिक भी डर सकता है।

पहली डाइन स्वागत है !

दूसरी डाइन : स्वागत है !

तीसरी डाइन · स्वागत है !

पहली डाइन मैकवैथ से कम और उससे अधिक भी ।

दूसरी डाइन इतना सुखी नही फिर भी उससे कही अधिक सुखी ।

तीसरी डाइन : यद्यपि तुम कभी नही होगे फिर भी तुम्हारे पुत्र सम्राट् होगे। इसलिये, मैकबैथ और बैंको का हम सभी की ओर से स्वागत है !

पहली डाइन . सभी की ओर से मैकवैथ और बैंको का अभिनन्दन है।

मैकबैथ : ठहरो, ओ झूठ बात बनाने वाली जादूगरनियो ! कुछ और भी कहो। सिनेल की मृत्यु के कारण मै जानता हूँ कि मुझे ग्लेमिस का थेन बना दिया गया है लेकिन काउडोर का थेन कैसे ? वह गौरवशाली काउडोर का थेन तो अभी जीवित है और फिर सम्राट् होना ·· क्या इसकी मै कभी कल्पना भी कर सकता हूँ ? इसी

तरह काउडोर का थेन होना भी मेरे विश्वास के परे की बात है। बोलो, कहाँ से यह अजीब-सी बात तुम्हे मिली है ? या इस उजाड़ मे इस तरह भविष्यवाणी करके तुमने हमारा मार्ग रोकने का षड्यन्त्र किया है ? बताओ, मै आज्ञा देता हूँ बोलो।

[डाइनें लुप्त हो जाती है।]

बैंको : मुझे लगता है, जैसे पानी मे बबूले होते है वैसे ही जमीन मे भी होते हैं और ये उन्ही बबूलो की बनी हुई है। अरे, है ! कहाँ छिप गई वे सभी।

मैकबैथ : हवा मे। जो अभी शरीर धारण किये हुई थी वे हवा मे इस तरह विलीन हो गई है जैसे मनुष्य की श्वासे निकल कर मिल जाती है। काश ! वे थोडा और ठहर जाती तो कितना अच्छा होता।

बैंको : जिनके बारे मे हम अभी बाते कर रहे थे क्या ऐसे भी प्राणी इस पृथ्वी पर होते है ? या हमने मूर्खता लाने वाली कोई ऐसी जडी खाली है जिससे हमारी विचार-शक्ति पर ताला-सा पड़ गया है।

मैकबैथ : तुम्हारे पुत्र सम्राट बनेगे बैंको !

बैंको : तुम भी सम्राट् होगे।

मैकबैथ : और काउडोर का थेन भी ? यही कहा था न उन्होने ?

बैंको : बस ठीक वही बात, वे ही शब्द।
लेकिन ये कौन आ रहे है यहाँ ?

[रौस तथा ऐङ्गस का प्रवेश]

रौस : सम्राट् अपार हर्ष के साथ मैकबैथ का स्वागत करते है। तुम्हारी विजय की सूचना पाकर जब उन्हे यह भी पता लगा कि विद्रोहियों को कुचलने मे तुमने अपनी जान तक की बाजी लगा दी थी तो

उनका हृदय इस तरह फूल उठा है मानो आश्चर्य्य और तुम्हारी वीरता की प्रशसा की दो लहरे एक के ऊपर एक उठ रही हो। इसी से उनका हृदय पूरी तरह भर गया है कि मुँह से शब्द तक कहने को नही निकल रहे है। उसी दिन युद्ध के अन्य-अन्य समाचार सुनते हुए उन्हे पता लगा कि नॉर्वे की सेना का सामना तुम इस अपूर्व वीरता के साथ कर रहे थे कि तुम्हारी तलवार से कट-कट कर जो सैनिक गिरते थे मौत एक डरावनी-सी छाया उनके चेहरो पर डाल देती थी और वे सदा के लिये रणभूमि मे सो जाते थे। उन्हे देख कर भी तुम्हारा हृदय तनिक भी डर से नही कॉपता था। एक के वाद एक दूत आते थे और प्रत्येक तुम्हारी देश की रक्षा मे दिखाई गई वीरता की सम्राट के सामने अनेक प्रशसाएं करता था।

ऐंङ्गस : हमारे स्वामी सम्राट् ने हमे इसीलिये भेजा है कि हम उनकी ओर से तुम्हे धन्यवाद दे। उन्होने हमसे तुरन्त तुम्हे उनके पास ले चलने के लिये आज्ञा दी है। उन्होने तो हमारे हाथ पुरस्कार भी नही भेजा है।

रौस : और तुम्हे और भी अधिक सम्मान से विभूपित करने के लिये उतावले होकर उन्होने मुझे आज्ञा दी है कि मै तुम्हे काउडोर का थेन कह कर पुकारूँ। इसलिये ओ श्रेष्ठ थेन! तुम्हारा स्वागत है! अव से यह सम्मान और पद तुम्हारा है।

वैंको : (स्वगत) क्या? क्या जो कुछ यह शैतान कह रहा है वह सच है?

मैकवैथ : लेकिन यह कैसी वात! काउडोर के थेन तो अभी जीवित है, फिर क्यो इन माँगे हुए वस्त्रों को मेरे ऊपर लाद कर मुझे सम्मानित करना चाहते हो?

ऐंङ्गस : अवश्य, जो था वह अभी तक भी जीवित है पर उसे मृत्यु-दण्ड

सुनाया जा चुका है और वह इस पृथ्वी पर जीवित नही रह सकता। मै नही जानता कि वह नॉर्वे के सम्राट से मिल गया था या गुप्त रूप से उसने विद्रोहियो की सहायता की थी और इस तरह गद्दारी करके अपने देश की बरबादी के लिये षड्यन्त्र रचा था लेकिन अब उसने अपने सारे अपराध को स्वीकार कर लिया है और यह पूरी तरह सिद्ध भी हो चुका है इसीलिये उसकी मौत की घडियाँ निकट आ गई है।

मैकबैथ : (स्वगत) ग्लेमिस, और काउडोर का थेन भी। ठीक है। पर सबसे बडी भविष्यवाणी तो अभी अधूरी ही है। (रौस और ऐंङ्गस से) आपने जो यहाँ तक आने का कष्ट किया उसके लिये आपको धन्यवाद है।

(बैंको से) बैंको ! क्या तुम यह आशा नही करते कि तुम्हारे पुत्र सम्राट् होगे क्योकि जिन्होने भविष्यवाणी करके मुझे काउडोर का थेन बनाया है उन्होने उनके विषय मे भी तो कम बात नही कही ?

बैंको तुम उस पर विश्वास करते हो न ? फिर तो काउडोर के थेन बनने के बाद सम्राट बनने की लालसा तुम्हारे हृदय मे मचल रही होगी। लेकिन अजीब-सी बात है। नही, प्राय ऐसा होता है कि शैतान हमारे नुकसान के लिये अपने दूत भेजता है और वे यहाँ आकर ऐसी-ऐसी सच लगने वाली बाते कहते हैं कि हम उन छोटी-छोटी बातो को सच समझ कर मान लेते हैं। फिर परिणाम होता है कि वही बाते हमारे जीवन के साथ धोखा करती है। साथियो ! मै आपसे कुछ कहना चाहता हूँ।

मैकबैथ (स्वगत) इस महान नाटक की शुरू की घटनाओ की तरह दो भविष्यवाणियाँ तो पूरी हो गईं।

(रौस तथा ऐङ्गस से) भद्र पुरुषो ! मै आपको धन्यवाद देता हूँ। (स्वगत)-इन डाइनों की लालच भरी ये बाते क्या पूरी तरह बुरी हो सकती है ? नही। पर अच्छी भी कैसे हो सकती है ये ? यदि बुरी है तो इस तरह सच्ची होकर इन्होने मुझे यह सफलता क्यों दी ? काउडोर का थेन भी मै हो गया हूँ। यदि अच्छी है तो उनके दिये गये उस लालच का शिकार मै क्यो बनता हूँ जिसकी भयावनी कल्पना मात्र से ही मेरे रोंगटे खडे हो जाते है और हृदय मे अजीब तरह से धडकन और कँपकँपी मच उठती है ? डरावनी कल्पनाओ से तो सामने रहने वाले भय कम डराते है। हत्या की बात मेरे मस्तिष्क मे एक अजीब सपने की तरह लगती है पर इसने मुझे इतना विचलित कर दिया है कि यह बात सपने जैसी लगते हुए भी मुझे कुछ विश्वास होता है कि जो कुछ कोरा सपना है और एक उडती हुई कल्पना की तरह है उसके सिवाय वास्तविक कुछ भी नही है।

बैंको वह देखो, मैकबैथ किस तरह किसी गम्भीर विचार मे डूब रहा है।

मैकबैथ (स्वगत) यदि भाग्य मे लिखा है कि मै सम्राट हूँगा तो क्या बिना कोई प्रयत्न किये नही हो जाऊँगा ?

बैंको : जो कुछ भी ये नये पद और सम्मान उसे प्राप्त हुए है वे अपरिचित और अजीब तरह के वस्त्रो की तरह है जो उसके शरीर मे पूरी तरह आ नही रहे है। पर खैर, अभ्यास करते-करते अवश्य एक दिन वह इनका आदी हो जायेगा।

मैकबैथ (स्वगत) कुछ भी हो, एक न एक दिन वह नियत समय अवश्य आयेगा। उस बीच मे जो भी कठिन से कठिन दिन है वह भी किसी तरह निकल ही जायेंगे।

बैंको : श्रेष्ठ मैकबैथ ! हम इसी प्रतीक्षा मे यहाँ खडे हुए है कि तुम अवकाश निकाल कर अब हमारे साथ सम्राट के पास चलो।

मैकबैथ : ओ क्षमा करे मुझे ! मेरा यह जड मस्तिष्क कुछ भूली हुई बातो को याद करते-करते इस तरह खो गया था।

ओ मेरे महरबान साथियो ! आपकी छोटी से छोटी भी सेवा मेरे मस्तिष्क मे इसी तरह अकित है जैसे किसी पुस्तक मे। मै प्रतिदिन उसके पृष्ठ उलट कर उन्हे पढता हूँ।

अच्छा चलो, अब सम्राट् के पास चले।

(बैंको से) जो कुछ भी घटना हमारे साथ घटी है उस पर और गहराई से सोचना बैंको ! इस बीच इतनी गहराई से सोच लेने के पश्चात् किसी अधिक अवकाश के समय हम एक साथ बैठेंगे और अपनी-अपनी बात एक दूसरे से कहेगे।

बैंको : बडी खुशी के साथ।

मैकबैथ : तब तक के लिये इतना ही काफी है—अच्छा, आओ मित्रो ! चले।

[प्रस्थान]

दृश्य ४

[फौरेस। राजमहल में एक कमरा]

[बाजे बजते है। डंकन, मैलकॉम, डोनलबेन, और लैनोक्स का अनुचरो के साथ प्रवेश]

डंकन : क्या काउडोर को मृत्यु-दण्ड मिल चुका ? वे व्यक्ति जिनके हाथो यह काम सौपा गया था अभी तक लौट कर आये या नही ?

मैलकॉम : वे अभी तक लौट कर नही आये है मेरे स्वामी ! लेकिन मुझे एक व्यक्ति ने बतलाया है कि उसको मृत्यु-दण्ड मिल चुका

क्योकि उस व्यक्ति ने उसे अपनी आखिरी श्वास तोडते हुए देखा था। वह कह रहा था कि काउडोर ने खुले रूप मे अपने अपराधों को मान लिया था और आपसे क्षमा माँगते हुए, उसने अपने किये हुए कार्य्यों पर घोर पश्चाताप भी किया था। जीवन मे कभी भी ऐसे सुन्दर विचार उसके हृदय मे नही फूटे जैसे उसके अनुरूप होने चाहिये पर अपने अन्तिम क्षणो मे वह इतना अच्छा हो गया मेरे स्वामी ! उसने मृत्यु को इस तरह गले लगा लिया जैसे मानो मृत्यु देवी से मिलन की सारी कला उसे आती थी। मै क्या कहूँ मेरे स्वामी ! अपने प्यारे से प्यारे इस जीवन को उसने इस तरह त्याग दिया मानो कि यह कोई तुच्छ वस्तु हो जिस पर उसको विशेष ध्यान देने की आवश्यकता नही थी।

डंकन : इस पूरे ससार मे ऐसी कोई कला नही है जिससे मनुष्य के अन्दर के सारे भाव उसका चेहरा देखकर मालूम हो सके। कैसा योग्य और सज्जन था वह काउडोर ! हमारा उसके ऊपर अटूट विश्वास था।

[मैकवैथ, वैंको, रौस, तथा ऐङ्गस का प्रवेश]

ओ हमारे सर्वश्रेष्ठ भाई ! हम बडे कृतघ्न है और वही पाप अब भी बोझ बन कर हमारे ऊपर चढा हुआ है। अपने वीरतापूर्ण कार्य्य से तुम इतने ऊँचे उठ गये हो कि किसी भी पुरस्कार के शीघ्रगामी पख तुम तक नही पहुँच सकते। अच्छा होता तुम इतना गौरवशाली काम न करके कुछ कम के अधिकारी होते जिससे हम इस योग्य तो हो पाते कि तुम्हे धन्यवाद दे सकते और तुम्हारे सम्मान के अनुकूल तुम्हे पुरस्कृत कर पाते। लेकिन अब क्या ? अब तो हमारे पास यही कहने के लिये है कि कितना भी देकर हम तुम्हारी सेवा और त्याग के ऋण से उऋण नही हो सकते।

मैकबैथ : यह सब कुछ करना तो मेरा कर्त्तव्य और स्वामिभक्ति है महाराज! और इसी कारण मैं अपने आपको आपके कहने से पहले ही पुरस्कृत समझता हूँ। हे स्वामी ! हमारी सेवाओ को स्वीकार करना आपका काम है। आपके तथा देश के प्रति हमारे कर्त्तव्य ऐसे ही है, मा-बाप के प्रति बच्चो के और स्वामियो के प्रति सेवकों के जैसे होते हैं। देश की रक्षा के लिये और आपके प्रेम तथा सम्मान केलिये जो कुछ भी हम कर रहे है क्या वह हमारा कर्त्तव्य नही महाराज ?

डंकन : स्वागत है तुम्हारा मैकबैथ ! हमने तुम जैसे पौधे को लगाया है और अब अपनी सारी शक्ति लगा कर भी हम इसे फलता-फूलता देखना चाहते है।

ओ सुहृद बैंको ! तुम भी कम प्रशसा के अधिकारी नही हो ! तुम्हारी सेवाएँ भी अमूल्य है। आओ वीर ! अपनी बाहो मे भर कर तुम्हे हृदय से लगा ले।

बैंको : हे महाराज ! अगर मैने भी एक पौधे के रूप मे आपके हृदय मे स्थान पाया है तो इसके सारे फल-फूल भी आपके ही समर्पण है।

डंकन : आह ! कितना आनन्द है ! हमारा हृदय इस असीम हर्ष से फूला नही समा रहा है। दु:ख के आँसू उमड कर इसे अपने बीच छिपाना चाहते है। हमारे पुत्र, सम्बन्धी, थेन तथा सभी निकटतम मित्र यह जानते है कि हम अब साम्राज्य का उत्तरदायित्व हमारे ज्येष्ठ पुत्र मैलकॉम को सौंपना चाहते है। अबके बाद हम उसे कम्बरलैन्ड का राजकुमार कहकर पुकारेंगे। पर हाँ, हम केवल उसी को यह सम्मान नही देंगे बल्कि उन सभी को भी हम उचित सम्मान से विभूषित करना चाहते है जिनके ऊपर यश और गौरव तारो की तरह जगमगाता है। चलो यहाँ से 'इनवर्नेस' (Inverness) को

चले। वहाँ हम तुम्हारे साथ और भी निकट के सूत्र मे बँध जायेगे।

मैकवैथ : हे स्वामी! जानते है? वह आराम का समय भी वडी कठिनाई से वीतता है जो आपकी सेवा मे काम नही आ सकता। मै चाहता हूँ कि स्वय आपके स्वागत के लिये पहले आगे चला जाऊँ और आपके शुभागमन की सूचना देकर मेरी स्त्री को अत्यधिक प्रसन्न कर दूँ। अतः कृपा करके मुझे जाने की आज्ञा दीजिये।

डंकन : मेरे श्रेष्ठ काउडोर!

मैकवैथ : (स्वगत) कम्बरलैन्ड का राजकुमार? सँभल जा ओ मैकवैथ! यह वह सीढी है जिससे या तो तू नीचे गिर जायगा या इसे छलाग मार कर पार कर जायेगा। तेरे पथ मे यही एक वाधा है। सितारो! छिपा लो अपनी इस जगमगाती ज्योति को। मेरी इन काली और पाप से भरी गहरी लालसाओ को अपने इस प्रकाश मे मत प्रगट होने दो। जब मेरे हाथो से काम पूरा हो जाय तब चाहे मेरी दोनो आँखो के चिराग सदा के लिये वुझ जाये। हाँ, ये वुझ ही जाने चाहिये क्योकि इस काम के पूरा होने पर ये आँखे भय के मारे इसे देख नही पायेगी।

[जाता है।]

डंकन : सच है, श्रेष्ठ वैंको! वह इतना ही शूरवीर है और उसकी प्रशसाएँ सुनते-सुनते हमे ऐसा लगता है जैसे हम अपना स्वादिष्ट भोजन कर रहे है। उसी से हमारा पेट भरता है। चलो, उसके पीछे चले जो इस तरह उत्सुक होकर हमारा स्वागत करने के लिये पहले ही चला गया है। मेरी दृष्टि मे उसके समान कोई भी मेरा सम्वन्धी नही आता।

[वाजे वजते है। प्रस्थान]

दृश्य ५

[इनवर्नेस । मैकबैथ का महल]

[लेडी मैकबैथ का एक पत्र पढते हुए प्रवेश]

लेडी मैकबैथ "जिस दिन मुझे विजय प्राप्त हुई थी उसी दिन वे मुझे मिली थी और यह मुझे पूरी तरह पता लग गया है कि पृथ्वी पर रहने वाले प्राणियो से कही अधिक वे जानती हैं। मै कुछ और आगे पूछने के लिये उत्सुक हुआ उसी समय वे न जाने कहाँ हवा में विलीन हो गई। इससे मै आश्चर्य्य मे डूबा हुआ वही खडा रह गया, उसी बीच सम्राट के भेजे दूत वहाँ आये और उन सबने मुझे 'काउडोर का थेन' पुकार कर मेरा अभिनन्दन किया। ठीक उसी पद से जिससे उन डाइन बहनो ने पहले मेरा स्वागत किया था। फिर यह कह कर कि 'सम्राट बनेगा उसका स्वागत है' उन्होने आगामी समय के लिये भविष्यवाणी की थी।

ओ मेरे सुख और ऐश्वर्य्य की सर्वप्रिय सहभागिनी! मैने सबसे पहले यह अच्छा समझा कि तुम्हे इस बात से अवगत करा दूं जिससे तुम मेरे आने वाले ऐश्वर्य्य और गौरव से अपरिचित न रह जाओ और मेरे साथ अपनी प्रसन्नता का उचित भाग पा सको। इस बात को अपने हृदय मे रखना। अच्छा, अलविदा!"

(स्वगत) ग्लेमिस तो तुम पहले ही हो और अब काउडोर का थेन बनाकर तुम्हारा सम्मान किया गया है। इसके अलावा आगे की भी भविष्यवाणी अवश्य पूरी होगी पर फिर भी मुझे एक बात का डर है कि तुम्हारा स्वभाव इतना सरल और उदार है कि यह तुम्हे अपने गौरवशाली भाग्य के निकट शीघ्रता से पहुँचने नही देगा। तुम महान होना चाहते हो। महत्वाकाक्षा तुम्हारी रग-रग मे समाई हुई है पर बिना किसी तरह का पाप किये उसे प्राप्त

करना चाहते हो। जिसको पाने के लिये तुम इतने लालायित हो उसे अन्त तक पवित्र रह कर ही प्राप्त करना चाहते हो। किसी तरह की झूठ भी नही बोलना चाहते न? और आनन्द भोगना चाहते हो उस वस्तु का जो धोखे और बेईमानी से प्राप्त हो सकती है। ओ ग्लेमिस! तुम जिस ऐश्वर्य्य और गौरव के लिये लालायित हो वही तुमसे पुकार-पुकार कर कह रहे है कि—'यदि तुम हमे प्राप्त करना चाहते हो तो धृष्टता को तुम्हे गले लगाना ही पडेगा।' और कैसा आश्चर्य्य है कि तुम इसे न करने के लिये अधिक इच्छुक हो क्योकि ऐसा करते हुए डर से तुम्हारा हृदय कापता है न? शीघ्र यहाँ चले आओ जिससे मेरे हृदय मे जितना भी साहस है वह सब तुम्हारे कानो मे होकर हृदय मे भर दूं और अपनी वीरता भरी हुई वाणी से उस रोडे को हटाकर नष्ट कर दूं जो तुम्हारे और राजमुकुट के बीच अड़ा हुआ है जिससे तुम्हारे भाग्य और दैवी शक्तियो के द्वारा तुम पहले ही विभूषित किये जा चुके हो।

[एक दूत का प्रवेश]

क्या समाचार लाये हो दूत!

दूत : देवी! आज रात को सम्राट यहाँ पधार रहे हैं।

लेडी मैकबैथ : तुम पर कुछ पागलपन-सा चढा हुआ मालूम होता है तभी ऐसी बाते कर रहे हो। क्या तुम्हारे स्वामी सम्राट के साथ नही है? नही! यदि ऐसी बात होती तो वे मुझे स्वागत की व्यवस्था करने के सम्बन्ध मे अवश्य सूचित करते।

दूत : जैसा आप सोचे देवी! पर जो कुछ मै कह रहा हूँ वह सच है। हमारे थेन आ रहे है। हममे से एक व्यक्ति उनसे भी अधिक तीव्र गति से भेजा गया था जो किसी भी तरह भाग-दौड कर मरता-मरता पहले आपको यह सन्देश देने आया है।

लेडी मैकबैथ : दूत का समुचित स्वागत करो। वह अच्छा सन्देश लेकर आया है।

(स्वगत) वह कौवा भी उस अभागे डकन के मेरे महल मे आने की सूचना देता हुआ स्वय दु ख से आहे भर रहा है।

आओ, हत्या के इरादो पर मडराने वाली खून की प्यासी पिशाचिनो! आओ और नष्ट कर दो मेरे स्त्रियोचित अवला स्वभाव को। मेरी रग-रग को भयानक क्रूरता से पूरी तरह भर दो। मेरे खून को पूरी तरह गाढा बना दो और उन सभी मार्गो को बन्द कर दो जहाँ से दया और पश्चात्ताप के भाव प्रवेश कर सके ताकि मेरी आत्मा की कोई भी पुकार मुझे अपने काम से विचलित न कर सके और न मेरे इरादो के पूरा होने के बीच कोई बाधा डाल सके।

ओ खून के साथ खेलने वाली डकनियो! आओ जहाँ कही भी तुम अपने अदृश्य रूप मे प्रकृति के साथ कोई धृष्टता करने के लिये प्रतीक्षा कर रही हो वहाँ से आओ और मेरे स्तनो के दूध तक को जहर की तरह कड़वा बना दो।

आओ, ओ घोर काली रात! आओ और यमलोक की जहरीली काली धुआँ की तरह चारों ओर से इस पृथ्वी को इस तरह ढाँक लो जिससे मेरा यह पैना खंजर भी अपने किये घाव को न देख सके और न इस काले परदे मे हो कर स्वर्गभूमि से देवता यह देख कर पुकार सके—ठहरो! ठहरो!!

[मैकबैथ का प्रवेश]

महान ग्लेमिस! ओ श्रेष्ठ थेन! इन दोनो से भी ऊँचे और महान पद से, जो भविष्य मे अवश्य आपको मिलेगा, मै आपका अभिनन्दन करती हूँ। आपके पत्रो ने मुझे बहुत दूर तक बता दिया है और

अब मै अनजान नही हूँ इसीलिने अभी से मै भविष्य के ऐश्वर्य और गौरव का अनुभव कर रही हूँ।

मैकबैथ : ओ मेरी प्राणप्रिये ! मालूम है, सम्राट डकन आज रात को यहाँ पधार रहे है ?

लेडी मैकबैथ : फिर वापिस कब जायेगे यहाँ से ?

मैकवैथ : उनका विचार तो कल ही चले जाने का है।

लेडी मैकवैथ : कल ? कभी नही ! क्या सूर्य्य की किरणे उस कल को देख पायेगे जबकि वह यहाँ से वापिस चला जाय ? नही ! मेरे थेन ! आपका चेहरा देखकर तो ऐसा लगता है मानो यह कोई ऐसी किताब हो जहाँ से मनुष्य अजीब तरह की बाते पढ सके। अगर समय को धोखा देना है तो अपना यह चेहरा समय के अनुरूप बनाना ही होगा। अपनी आँखो के हाव-भाव से, हाथो से, बोली-चाली से, हर तरह सम्राट को अपार सम्मान दिखाओ और एक मासूम फूल की तरह बन जाओ पर सावधान ! उसके नीचे छिपे हुऐ जहरीले साँप की तरह। वह डकन जो आज यहाँ आ रहा है, हर प्रकार से उसकी आवभगत करो, और उचित रीति से सम्मान दिखाओ। वाकी इस रात के महान षड्यन्त्र का भार मेरे ऊपर छोड़ दो जिससे हम यह दिन देख सके जब हम इस महान साम्राज्य के एकमात्र स्वामी हो।

मैकवैथ : इस विषय पर फिर वाते करेगे।

लेडी मैकवैथ : सिर्फ अपने चेहरे को खिलता हुआ बनाये रखना क्योकि किसी तरह परिवर्त्तन खतरे से खाली नही है।

बस, वाकी सब मेरे ऊपर छोड दो।

[प्रस्थान]

दृश्य ६

[वही स्थान। महल के सामने जगमगाता
प्रकाश, शहनाइयां बजती हैं।]

[डंकन, मैलकॉम, डोनलबेन, बैंको, लैनोक्स, मैकडफ, रोस और
ऐंङ्गस का अन्य सेवको के साथ प्रवेश]

डंकन : यह महल कैसे सुन्दर स्थान पर है! यहाँ की मन्द और सुगन्धित वायु चित्त को कैसा आनन्द दे रही है।

बैंको : मन्दिरो मे अपना घर बनाने की शौकीन और गर्मी की महमान यह 'मार्टिल' अपने प्रिय घौसले से इसी बात का समर्थन करती है कि आकाश से अत्यन्त ही सुगन्धित वायु यहाँ बह रही है। आंगन की छत, दीवार थामने वाले खम्भे ऐसा कोई भी स्थान नही है जहाँ यह घौसला न बनाती हो। उसी मे यह अपने बच्चो को खिलाती और पालती है! मैने यह देखा है मेरे स्वामी! कि जहाँ यह अधिकतर रहती है और अपने बच्चो को पालती है वहाँ की वायु अवश्य सुगन्धित होती है।

[लेडी मैकबैथ का प्रवेश]

डंकन . देखो, देखो, हमारी महमानदाज़ श्रेष्ठ महिला! कभी-कभी हमारे मित्र और सम्बन्धी जो प्रेम और सम्मान हमारे प्रति दिखाते है उससे हम एक सकोच-से मे पड जाते है पर फिर भी प्रेम मानकर हम इसका आदर करते है। इसी लिये हम आपसे यही कहना चाहते हैं कि जो भी कष्ट हमने आपको दिया है उसका ख्याल न करके आप ईश्वर से हमारे लिये शुभ कामना करें और उस कष्ट के लिये हमे धन्यवाद का पात्र समझे।

लेडी मैकबैथ : सम्राट! आपके प्रति की गई हमारी सभी सेवाएं और ये ही नही बल्कि इनसे दुगुनी और चौगुनी तक भी आपने जो

असीम उपकार हमारे प्रति किये है उनका किसी भी रूप मे वदला नही चुका सकती। आपने जैसी उदारता पहले दिखाई थी और जो भी सम्मान अब देकर हमे सम्मानित किया है उसके लिये हम हमेशा सच्चे फकीरो की तरह आपकी भलाई के लिये ईश्वर से प्रार्थना करते है।

डंकन : पर वह हमारा काउडोर का थेन कहाँ छिपा हुआ है। हम वड़ी ही तेजी से उसके पीछे-पीछे चले और हर तरह चाहा कि उससे आगे निकल जायँ पर वह तो वास्तव मे एक अच्छा सवार है। उसके पैर की ऐड से भी तेज उसका महान प्रेम ही उसे हमसे भी पहले घर ले आया है।
हे सुन्दर और उदार हृदय वाली देवी! हम आज रात को आपके महमान वन कर रहेगे।

लेडी मैकबैथ हमारे स्वामी! हम तो आपके ऐसे सेवक हैं जिनका तन, मन, धन सभी कुछ आपका ही है। हमारी सारी सम्पत्ति आपकी कृपा का ही तो फल है। उसका हिसाब भी तो अभी आप को चुकाना होगा महाराज?

डंकन : हमे अपना हाथ दो देवी! और अपने पति के पास ले चलो। हम उन्हे अपने हृदय से अधिक प्रेम करते है और ऐसा ही सदा करते रहेगे। अच्छा, अब चलो देवी!

[प्रस्थान]

दृश्य ७

[मैकबैथ का महल। जगमगाता
प्रकाश, शहनाइयां बजती है।]

[एक दर्जी, कुछ गोताखोर और सेवक तश्तरियाँ तथा अन्य वस्तुएँ लेकर आते हैं और रंगमंच से गुजरते हैं। फिर मैकबैथ का प्रवेश]

मैकबैथ : यदि यह काम मुझे करना है तो क्यो न मै इसे शीघ्र से शीघ्र कर डालूं। यदि इस एक खून मे हाथ धोने से वे सारे परिणाम रुक सके और हमे सफलता मिल सके, समय के अथाह समुद्र के बीच मौत का यह पतला-सा किनारा है, यदि हमारे इस कदम उठाने से वही इस समस्या का प्रारम्भ और अन्त हो तो हम अपने भविष्य के लिये अपने जीवन का भी खतरा सिर पर ले लेगे पर, फिर ऐसे पापो का दण्ड भी तो हमे यही भोगना पडेगा। हम दूसरो को कहते है कि हमारे लिये खून कर दो। पर जब उनके हाथ किसी के खून से रग जाते है तो उसका कठोर दण्ड हमारे ही सिर पर आकर पडता है। ईश्वर के निष्पक्ष न्याय मे मैंने कभी-कभी यह भी देखा है कि जो जहर का प्याला दूसरो के लिये भर कर हम तैय्यार करते है वह हमारे ही ओठो के नीचे आ लगता है। नही। मेरे सम्राट की दूने विश्वास के साथ यहाँ रक्षा होनी चाहिये क्योकि एक तो उनका सम्बन्धी और दूसरे उनकी प्रजा होने के नाते यह मेरा कर्त्तव्य है। पर्याप्त कारण है ये इस घृणित हत्या के काम के विरुद्ध। आज वे मेरे अतिथि है, उस नाते क्या उनका खून करने के लिये मुझे अपने हाथो मे कटार लेनी चाहिये? नहीं। मुझे तो उन सभी रास्तो तक को रोक देना चाहिये जहाँ उनके जीवन का हत्यारा घुस सके। और इस सबके अलावा यह डंकन अपने व्यवहार मे इतना सीधा और सच्चा है कि उसकी हत्या के

डरावने समय मे उसके गुण ही देवताओ के नक्कारो की तरह ज़ोर से पुकार उठेगे—ठहरो ! नही ! नही !! और नगे नवजात शिशुओ की तरह संसार के हृदय मे बसी दया बहती हवा मे रो उठेगी और आकाश के देवता वायुरूपी अपने अदृश्य वाहनो पर चढ कर इस घृणित इरादे की बात पुकार-पुकार कर सबको सुना देगे जिसे जो भी सुनेगा उसी का हृदय फट जायगा और आँखो से इतने आँसू बहेगे कि वायु का वेग भी उससे कम हो जायेगा।

मेरी महत्त्वाकाक्षा के सिवाय क्या है इस डकन के जीवन से मुझे आपत्ति जो मुझे इस घृणित इरादे की ओर खीच कर ले जाय ? पर कैसी बात है ! यह महत्त्वाकाक्षा ! क्या यह है ? क्या यह ठीक उस सवार की तरह नही जो कभी-कभी अपना निशाना चूक कर हारा हुआ-सा दूसरी ओर जा गिरता है।

[लेडी मैकबेथ का प्रवेश]

क्यो ? क्या समाचार है ?

लेडी मैकबेथ : उन्होने करीब-करीब खाना खा लिया है। पर तुम वहाँ से आ क्यों गये ?

मैकबेथ : क्या वे मेरे बारे मे कुछ पूछ रहे थे ?

लेडी मैकबेथ : हाँ ! क्या तुम नही जानते ?

मैकबेथ : अब हम इस इरादे की बात आगे नही बढायेगे। सोचो तो, अभी-अभी सम्राट ने मुझे इन उच्च पदो से सम्मानित किया है और फिर सभी लोगो के हृदय में मेरे प्रति कैसे-कैसे पवित्र विचार हैं। उनका मैं खून नही करना चाहता प्रिये ! उन्हे बचाये रखना ही चाहता हूँ।

लेडी मैकबेथ : ठीक ही है। फिर यह बताओ कि क्या कुछ मतवाले

होकर राजमुकुट की अभिलाषा कर रहे हो ? तुम्हारी यह आशा जो पहले पूरी तरह सो-सी गई थी अव उठी भी तो इस तरह डर के मारे पीली होकर। कहाँ है इसमें वह स्वच्छन्दता जो कुछ समय पहले थी ? क्या अव से जो मेरे प्रति भी तुम्हारा प्रेम है उसको भी इसी तरह अस्थिर और विना किसी आधार का मानूं ? क्या जिस वस्तु को प्राप्त करने की तुम्हारी इतनी लालसा है उसके लिये कदम आगे वढाने का साहस तुम्हारे अन्दर मर चुका है ? वताओ, मै पूछती हूँ कि जिसको तुम अपने जीवन का ऐश्वर्य्य, महानता और गौरव कहते हो उसे छोडकर क्या एक कायर का-सा जीवन विता लोगे ? वताओ, क्या उसी मे तुम्हे सन्तोष मिलेगा ? ठीक है, तुम उसी विल्ली की तरह हो जो पानी मे पड़ी मछली को खाना तो चाहती है पर अपने पैर उस पानी मे भिगोना नही चाहती।

मैकवैथ : वस, चुप हो जाओ, और अधिक नही, मै प्रार्थना करता हूँ, वस! कौन कहता है मै कायर हूँ ? इस पृथ्वी पर रहने वाले एक पुरुष मे जितना साहस होना चाहिये वह प्रत्येक काम करने के लिये मेरी रगो मे है। कौन है ऐसा जो मुझसे अधिक साहसपूर्ण कार्य्य कर सके।

लेडी मैकवैथ : तो फिर वताओ, जव तुमने मुझे इस षड्यन्त्र की वात वताई थी उस समय कौन पशु तुम्हारे मस्तिष्क से वोल रहा था ? मै कहती हूँ, तुम उसी समय एक पुरुष कहलाने के योग्य थे जव तुमने यह षड्यन्त्र वनाया ही था और अव इसे पूरा करके तो सचमुच एक वीर पुरुष कहलाने के सच्चे अधिकारी होगे। क्या तुम भूल गये कि जव तुमने इस षड्यन्त्र की वात सोची थी तव न तो अपने पास उसके पूरा करने का उचित अवसर था और न ही उपयुक्त

स्थान ? फिर भी उन्हे पैदा करने का तुममे एक साहस था लेकिन अब तो उचित अवसर और स्थान दोनो तुम्हारे सामने ही है, फिर जितनी सुविधा सामने है उतनी ही कायरता तुम्हारे अन्दर बढती जाती है। मैने बच्चो को दूध पिलाया है और यह जानती हूँ कि जो बच्चा माँ की छाती से चिपक कर दूध पीता है वह उसे कितना प्यारा होता है फिर भी जैसी सौगन्ध खाकर तुमने अपना पक्का इरादा बनाया था यदि मुझे अपना इरादा इस तरह पूरा करना पड़ता तो जानते हो मै क्या तक कर डालती ? अपने मुस्कराते हुए मासूम बच्चे को भी छाती से हटा कर उसके टुकडे-टुकडे करने मे तनिक भी नही हिचकिचाती।

मैकवैथ : लेकिन · लेकिन अगर हमारा यह षड्यन्त्र किसी तरह पूरा न हो सका तब·· ?

लेडी मैकवैथ : पूरा न हो सका ? हमसे ? अगर तुम अपने पूरे साहस से काम लो तो हम कभी असफल नही हो सकते। सुनो, जब यह डकन सो जाय, और अपनी दिन भर की यात्रा की थकान के कारण मुझे विश्वास है यह शीघ्र ही गहरी नीद सो जायेगा, तब मै उसके शयनागार के दोनो अधिकारियो को शराब पिला कर ऐसा कर दूंगी कि मस्तिष्क को काबू मे रखने वाली जो मनुष्य की स्मृति होती है वह शराब के नशे मे धुएँ की तरह उड जायेगी और वे पूरी तरह अपनी बुद्धि खो कर पागल जैसे हो जायेगे। तब वे उन नशे मे चूर हो कर सूअरो की तरह ऐसे सोये रहेगे मानो उनमे जान बची ही न हो। तब इस अकेले डकन के साथ हम क्या नही कर सकते ? फिर नशे मे चूर पडे इन अधिकारियो के ऊपर डकन के खून का अपराध लादना क्या कुछ मुश्किल होगा ?

मैकवैथ . ईश्वर करे तुम्हारी कोख से वीर पुरुष बनने वाले पुत्र ही पैदा

हो क्योकि तुम्हारा इस तरह का निर्भीक स्वभाव उन्ही के लिये ही उपयुक्त है। ठीक है, अगर हम इन दोनो अधिकारियो के शरीर पर खून के दाग लगा दे और उन्ही की कटारो को काम मे ले तो क्या यह नहीं समझा जायेगा कि यह खून इन्होने ही किया है ?

डी मैकबैथ : अवश्य, कौन इसे झूठ मानेगा और फिर खासकर जब हम उसकी मृत्यु पर खूब रोयेंगे और इधर-उधर चिल्लायेंगे, पुकारेंगे ?

कबैथ : तो अब मै पूरी तरह दृढ हूँ और जितना भी साहस और पौरुष मेरी रगो मे है उसे इस खतरनाक काम मे लगा दूँगा। जाओ, और अपने इस सुन्दर चेहरे पर बनावटी हँसी हँस कर ससार को धोखा दो। जानती हो ? कपट भरे हुए हृदय की बात कपट भरा हुआ चेहरा ही छिपा सकता है।

[प्रस्थान]

दूसरा अंक

दृश्य १

[इनवर्नेस। मैकबैथ के महल का आँगन]

[बैंको और फ्लीन्स का मशालें लिये हुए प्रवेश]

बैंको : फ्लीन्स ! क्या बज रहा होगा इस समय ?

फ्लीन्स : चाँद तो छिप गया है। घंटे की आवाज अभी तक मैने नही सुनी है पिता जी।

बैंको : चाँद तो बारह बजे छिप जाता है।

फ्लीन्स : पर मेरे विचार से तो इस समय बारह से अधिक ही बज रहा होगा।

बैंको : अच्छा, तो यह लो मेरी तलवार और यहाँ खडे रहो। अँधेरा हो गया। मालूम होता है आसमान भी चाँद को छिपा कर इसके लिये सतर्क है कि इस ससार मे अधिक प्रकाश न आ पाये। उनकी सभी मशालें बुझ चुकी हैं। इसे भी ले जाओ। मेरी आँखे तो गहरी नीद के कारण इस तरह झुकी पड रही है मानो कोई शीशे का-सा बोझ इन पर पडा हो लेकिन फिर भी मैं सोना नही चाहता। ओ दयालु स्वर्ग के देवताओ ! सोते समय मेरे मन मे जो कभी-कभी पाप भरे हुए काले विचार उठते है उन्हे रोक दो। कौन आ रहा है यहाँ ? मेरी तलवार दो।

[मैकबैथ का प्रवेश। साथ में एक सेवक मशाल लिये हुए]

मैकबैथ : कोई अन्य नही, एक मित्र !

बैंको : ओ, क्या श्रीमान् अभी तक सोये नही ? सम्राट तो सो गये हैं। बड़े ही प्रसन्न थे आज वे। तुम्हारे सेवको को बड़े-बड़े पुरस्कार

भेजे है उन्होने। तुम्हारी पत्नी ने उनका हार्दिक स्वागत किया है इसी लिये यह हीरा उन्होने उनको उपहारस्वरूप भेजा है। अब पूर्ण सुख और सतोष के साथ वे सो गये है।

मैकबैथ : वैसे तो पूरी तरह स्वागत की तैय्यारी के लिये हमे पर्याप्त समय नही मिल सका अत. स्वागत मे कुछ त्रुटियाँ अवश्य रह गई जो अधिक समय मिलने पर न रहती।

बैंको : जैसा भी हुआ बहुत सुन्दर है। छोडो इसे। · · हाँ सुनो, कल रात को सपने मे फिर मैने उन तीनो डाइन बहनो को देखा था। तुम्हे तो उनकी बात कुछ सच्ची भी पडी है।

मैकबैथ : मै उनके बारे मे अब कुछ नही सोचना चाहता पर फिर भी यदि तुम अपना कोई समय निकाल सको तो कुछ समय बैठ कर हम इसके बारे मे बाते करे।

बैंको : जब भी तुम्हे सुविधा हो, मै तो हर समय तुम्हारी सेवा मे उपस्थित हूँ।

मैकबैथ : ठीक है, समय आने दो, यदि उस समय तुमने मेरी बात मानी तो इससे तुम्हे उच्च सम्मान मिलेगा बैंको !

बैंको : अवश्य मानूंगा पर इस नये सम्मान को पाने के लिये मै लोगो के तथा सम्राट के हृदय मे जो कुछ भी मेरा सम्मान है उसे नही खोना चाहता। मेरी आत्मा पहले की तरह ही पवित्र रहे और किसी प्रकार का विश्वासघात सम्राट के प्रति मुझे न करना पडे तो अवश्य मैं तुम्हारी बात मानूंगा।

मैकबैथ : अच्छा, जाओ इस बीच मे जाकर तुम कुछ आराम कर लो।

बैंको : धन्यवाद ! तुम भी इस समय आराम कर लो।

[बैंको और फ्लीन्स का प्रस्थान]

मैकबैथ : (सेवक से) जाओ और अपनी स्वामिनी से जाकर कह दो कि

मेरी शराब की व्यवस्था हो जाय तो घंटी बजा कर मुझे बुला ले। तुम इसके बाद जाकर सो सकते हो।

[सेवक जाता है।]

मेरे सामने रखी हुई क्या यही वह कटार है जिसकी मूंठ मेरी तरफ मुडी हुई है। आ, ओ प्यारी कटार! मेरे हाथो को आकर चूम ले। लेकिन, है! यह क्या? मै तुझे अपनी आँखो के सामने देख रहा हूँ और फिर भी अपने हाथ मे नही ले पा रहा हूँ। ओ मौत की-सी डरावनी कल्पना पैदा करने वाली शक्ति! तुझे क्या मै केवल देख ही सकता हूँ, हाथ से छू नही सकता? या बता, तू मेरे मस्तिष्क की कल्पनामात्र तो नही है जो मनुष्य के ऐसे भावावेश मे निश्चित ही धोखा देने के लिये आती है? अब भी मै देख रहा हूँ, तू उतनी ही वास्तविक दीख रही है जैसे मेरी यह तलवार जिसे मै म्यान मे से खीचता हूँ। तू मुझे ठीक उसी तरफ ले जा रही है जहाँ मै जाना चाहता था। तब क्या तू उस यन्त्र की तरह नही है जिसे मुझे इस अवसर के लिये प्रयोग मे लाना चाहिये था? अवश्य! तब या तो मेरी आँखे मुझे धोखा दे रही है या शरीर की अन्य इन्द्रियो को छोड कर ये आँखे ही विश्वास करने के योग्य है अभी तक भी मै तुझे अपनी आँखो के सामने देख रहा हूँ और यह क्या? जहाँ पहले कुछ नही था वहाँ तेरी इस मूंठ और धार पर खून की बूदे! नही! नही!! ऐसी कोई चीज नही है। यह मेरा खूनी षड्यन्त्र है जो मुझे यह सब कुछ दिखा रहा है। आधी से ज्यादा दुनिया के आदमी मुर्दो की तरह रात की साया मे सोये हुए है। न जाने कितने डरावने और बुरे-बुरे सपने इस समय उनके मस्तिष्क मे कोलाहल मचा रहे होगे।

अरे, यह क्या? ये तो डाइने है। मालूम होता है अपनी देवी हिकेट

को वलि चढाने के लिये ही ये यहाँ इकट्ठी हुई है। यह भेडिया भी पुकार-पुकार कर बता रहा है कि अभी रात है, और इसी भरोसे मन मे घबराया हत्यारा हत्या करने के लिये चुपके-से एक दैत्य की तरह ऐसे जा रहा है जैसे तारकिन ल्यूसिरस के साथ व्यभिचार करने के लिये गया था।

ओ पृथ्वी! जिधर भी मेरे ये कदम जाये उनकी आवाज को मत सुनना। मुझे डर है कि ये बेजान पत्थर भी कही न वोल उठे और मेरे वारे मे बाते करने लग जायँ। इस समय जो सन्नाटा है जिसमे भय की काली छायाएँ चुपचाप खड़ी हुई है, बस यही अवसर के लिये ठीक है।

ओ, मै अभी तक ये डर की बाते ही कर रहा हूँ और वह डकन अभी तक जीवित सोया हुआ है। नही,

ओ ठीक ही है इस तरह कोरी भावुकता और कल्पना की उडान किसी कार्य्य के आवेश को ठडा कर ही देती है।

[घटी बजती है।]

पर क्या है, मै गया और यह काम पूरा हुआ। ओ, वह घटी मुझे वुला रही है। मत सुन डकन! इसे, यह वह आखिरी घंटी है जो तेरी मौत को वुला रही है।

[जाता है।]

दृश्य २

[वही स्थान। लेडी मैकवैथ का प्रवेश]

लेडी मैकवैथ : उसी शराव ने जिससे वे नशे मे चूर पड़े हुए है मेरे खून मे वीरता का एक जोश भर दिया है। जिसने उन्हे पागल वना

दिया है और वे बेहोश पड़े है उसी से मेरे अन्दर एक आग-सी जल उठी है।

वह सुनो, शान्त!

वह उल्लू पुकार-पुकार कर उस अभागे को मौत की सूचना दे रहा है। बस, अब यम के दूत उसकी आँखो के सामने आ गये होगे। ··दरवाजे खुले हुए हैं और शयनागार के सभी अधिकारी शराब के नशे मे बेहोश इस तरह खर्राटे ले रहे है मानो वे अपने कर्त्तव्य की हँसी-सी उड़ा रहे हो। पर हाँ मैने उनकी शराब मे जहर मिला दिया है, इसलिये अब ज़िन्दगी और मौत का सघर्ष है। देखती हूँ वे जीवित रहते है या नागिन मौत उन्हे डस जाती है।

मैकबैथ : (अन्दर से घबराकर) कौन? कौन है वहाँ? क्या है?

लेडी मैकबैथ : हाय, मुझे डर है कि उनकी नीद खुल गई है और अभी तक भी तुमने काम पूरा नही किया। इस तरह काम शुरू करके अधूरा छोड देने से तो हमारा सर्वनाश हो जायेगा। सुनो! मैने उनकी कटारो को तैय्यार कर दिया है और उनसे वह नही बच सकता है। सच कहती हूँ, यदि सोती अवस्था मे उनका चेहरा मेरे पिता के चेहरे से मिलता हुआ न होता तो स्वय मै इस काम को कर डालती, मेरे पति!

[मैकबैथ का प्रवेश]

मैकबैथ : कर डाला है मैने यह काम। क्या तुमने कोई आवाज नही सुनी?

लेडी मैकबैथ : सिर्फ उल्लू और झींगुरो को सन्नाटे मे पुकारते हुए सुना था। क्या तुम कुछ नही बोले थे?

मैकबैथ : कब?

लेडी मैकबैथ : अभी-अभी।

मैकबैथ : जिस समय मैं उतरा था उस समय की बात कह रही हो ?

लेडी मैकबैथ : हाँ, हाँ, उसी समय।

मैकबैथ . सुनो, उस दूसरे शयनागार मे कौन सो रहा है ?

लेडी मैकबैथ · डोनलवेन।

मैकबैथ : (अपने हाथों की ओर देखता हुआ) ओ, कैसा दुखदायी है यह हाथो का खून ! ओह ! ...... ·· कितना बुरा !

लेडी मैकबैथ दुखदायी, बुरा ? अब यह कहना तो मूर्खता है।

मैकबैथ · ओह, वहाँ एक तो अपनी नीद मे ही खिलखिला कर हँस पड़ा था और दूसरा जोर से पुकारा था—'हत्या ! हत्या !' इस तरह उन दोनो पहरेदारो ने एक दूसरे को जगा दिया। मै खड़ा रह गया और मैने उनकी बाते सुननी चाही लेकिन उन्होने तो उठकर ईश्वर से प्रार्थना ही की और फिर बिना कुछ बोले एक दूसरे की तरफ इशारा करके वे सो गये।

लेडी मैकबैथ : वहाँ तो दो आदमी साथ-साथ सो रहे है।

मैकबैथ एक पुकार उठा था—'हे ईश्वर ! बचाओ' और दूसरा सिर्फ 'आमीन' कहकर ऐसे कहता-कहता रुक गया मानो उन्होने मुझे मेरे इन खून से रँगे हाथो के साथ देख लिया हो। उनके मुँह से निकलते शब्द भय से काँप रहे थे। उन्हे सुनकर मै 'आमीन' तक भी न कह सका जबकि उन्होने कहा—'हे ईश्वर ! बचाओ हमे।'

लेडी मैकबैथ इतनी गहराई से इस बात को न सोचो। यह सब कुछ भी नही है।

मैकबैथ : लेकिन, फिर मेरे मुँह से 'आमीन' तक भी उस समय क्यों नही निकल पाया जबकि ईश्वर की सहायता की मुझे आवश्यकता थी और 'आमीन' यह शब्द मेरे गले मे ही अटक रहा था।

लेडी मैकबैथ ऐसे कामो मे इस तरह सोचते हुए नही उलझना चाहिये

नही इस तरह सोचते हुए तो हम पागल हो जायगे ।

मैकबैथ मुझे याद आ रहा है , उसी समय मैने किसी को पुकारते हुए सुना था—"बस, अब अधिक मत सोओ । मैकबैथ नीद की हत्या कर रहा है ।" वह नीद जिसकी गोद मे सोया हुआ प्रत्येक प्राणी अबोध-सा मालूम होता है । वह नीद जिसमे मनुष्य के जीवन की चिन्ताएँ इस तरह मिट जाती है जैसे मानो कोई रेशम के उलझे हुए गुच्छे को सुलझा दे । वह नीद जिसके आचल मे मुँह ढक के दिन भर का थका प्राणी सोता है, तो उसके दु ख और चिन्ता से बिंधे हृदय को शान्ति देती है । वह नीद जो मनुष्य मे एक नई स्फूर्ति भरती है और भोजन के पश्चात मनुष्य-जीवन की दूसरी प्रमुख रक्षा करने वाली है ।

लेडी मैकबैथ : क्या कहना चाहते हो तुम ? इस सबसे क्या मतलब है तुम्हारा ?

मैकबैथ : अभी तक भी पूरे महल मे वही आवाज़ चीखती हुई फिर रही है—अब और अधिक मत सोओ । ग्लेमिस ने नीद की हत्या कर दी है और इसीलिये काउडोर अब और अधिक नही सो पायेगा । मैकबैथ अब कभी नही सो सकेगा ।

लेडी मैकबैथ . कौन था वह जो कि ऐसे चिल्लाया था श्रेष्ठ थेन ? क्यो तुम इस तरह पागलों की-सी बात बनाकर अपने पौरुष पर धब्बा लगाना चाहते हो । जाओ और पानी लेकर अपने हाथो मे लगे इन खून के दागो को धो डालो । ..... पर है ! यह क्या ? इन कटारो को तुम उस जगह से क्यो उठा लाये ? इन्हे तो वही छोड़ देना चाहिये था । जाओ, जाओ, इन्हे वही ले जा कर रख दो और उन सोये हुए पहरेदारो को खून के दागो से पूरी तरह सान कर आ जाओ ।

मैकबैथ : नही, नही, अब मै वहाँ नही जा सकता। ओह! क्या किया मैंने यह! सोच कर मेरा हृदय डर से काँप रहा है। मेरा उस तरफ देखने तक का अब साहस नही होता।

लेडी मैकबैथ . क्या? ओ अपने इरादे मे इस तरह काँपने वाले आदमी! दो मुझे इन कटारो को। नीद की और मौत की साया मे सोये पडे हुए ये सभी आदमी मुर्दा तस्वीरो की तरह है। क्या ये किसी तरह का रोड़ा वनकर नुकसान पहुँचा सकते है? शैतान की तस्वीर देखकर तो घुटनो के बल चलने वाला एक बच्चा ही डरता है। मै जाती हूँ। अगर उस डकन के शरीर से अभी तक भी गरम खून निकल रहा होगा तो उसी से मै उन सोये पहरेदारो के चेहरो को रग दूंगी। इस हत्या का शक व शुभा उन्ही पर ही होना चाहिये।

[जाती है।]

[अन्दर खटखट की आवाज]

मैकबैथ : यह खटखट की आवाज कहाँ से आ रही है? ओह! यह क्या हो गया है मुझे? हर आवाज मुझे डरा रही है।

(अपने खून से रंगे हाथों की ओर देखकर) क्या? ओह! कैसे हाथ दिखाई दे रहे हैं ये मेरी आँखों के सामने? देखो, मेरी आँखो को नोच-नोच कर निकाल रहे है वे। क्या हुआ यह! मेरे हाथो से इन दागो को तो समुद्र का सारा पानी भी नही मिटा सकेगा। नही! इनसे तो उसका नीला पानी भी एक बार लाल हो जायेगा।

[लेडी मैकबैथ का पुनः प्रवेश]

लेडी मैकबैथ : देखो, मेरे हाथ भी अब तुम्हारे हाथो की तरह ही लाल है लेकिन तुम्हारा-सा कायर हृदय हो तो धिक्कार है मुझे।

[अन्दर खटखट की आवाज]

दक्षिण द्वार पर कुछ खटखट सुनाई दे रही है। बस अब हमे अपने

कमरों मे चलना चाहिये। थोडा-सा पानी ही हमारे हत्या के सारे अपराध को धो देगा। थोड़ा-सा पानी ही · फिर क्या प्रमाण रहेगा। कितना आसान है तब यह ! तुम्हारे स्वभाव मे जो दृढता और साहस था वह तो पूरी तरह मर चुका है।

[अन्दर खटखट की आवाज़]

वह सुनो, कोई बराबर दरवाजा खटखटाये जा रहा है। अपने कपडे पहन लो। हो सकता है हमे वहाँ जाना पड जाय तो उस समय यही मालूम होगा कि हम सम्राट् की रक्षा के लिये ही जाग रहे है। ठीक है न ? अब इस तरह पागलो की तरह कही खोये-खोये न रहो।

मैकबैथ : मुझे याद आ रहा है। अब भी वह खून मेरी आँखो के सामने दीख रहा है। ओह ! कितना अच्छा हो मै पागल हो जाऊँ।

[अन्दर फिर खटखट की आवाज़]

जाग जा ओ डकन ! इस आवाज से आँखे खोल ले। ओह ! मै कितना चाहता हूँ कि अब तू फिर जाग जा।

[जाता है।]

दृश्य ३

[वही स्थान। एक द्वारपाल का प्रवेश]

[अन्दर वही खटखट की आवाज़]

द्वारपाल (Porter) : सचमुच कोई दरवाज़ा खटखटा रहा है। ओ, चाहे कोई यमपुरी के द्वार का द्वारपाल ही क्यो न हो उसे बार-बार इस दरवाज़ा खोलने मे कितना काम करना पड़ता है।

[अन्दर से फिर खटखट की आवाज़]

खटखट, खटखट, क्या है यह खटखट ? यमराज के नाम पर मैं

पूछता हूँ कौन हो तुम ? बताओ। अच्छा तो यह वही किसान है जिसने यह देखकर कि फसल खूब हो रही है और अब उसका जोडा हुआ अनाज बहुत सस्ता बिकेगा, अपने गले में फन्दा पहनकर अपने आपको फाँसी दे ली थी ? ओ, ठीक, इस नरक मे घुसने के लिये ठीक समय पर आये हो तुम। ठीक है, ठीक है पर हाँ यह तो बताओ, तुम्हारे पास रूमाल तो काफी होगे ही क्योकि यहाँ इस नरक मे इतना पसीना तुम्हारे शरीर से निकलेगा कि पूरी तरह बहने लग जायेगा।

[अन्दर फिर खटखट]

फिर खटखट, खटखट। मै दूसरे शैतान के नाम पर पूछता हूँ कौन हो तुम ? बोलो। ओ, ठीक, ठीक, समझ गया, दुरगा आदमी, एक ही समय मे दो-दो बाते कहने वाला आदमी ! ओ, सच और झूठ दोनो बातो मे सौगन्ध खाकर ईमान उठा जाने वाला आदमी। वही जो भगवान की आड मे खुल कर अनाचार और अत्याचार करता था ? फिर भी इस झूठ और सच से स्वर्ग नही जा सका न ? ठीक है, ठीक है, आ जाओ, ओ दुरगे आदमी यहाँ तुम्हारे लिये जगह है।

[अन्दर फिर खटखट की आवाज]

खटखट, खटखट, समझ मे नही आता फिर यह क्या खटखट है ? कौन हो तुम ? ओ दर्जी ! ठीक है, वही दर्जी हो न तुम जो उस सिलने दिये गये विरजिस के कपडे मे से कुछ चुरा रहे थे। अन्दर आ जाओ दर्जी ! आओ। यहाँ इस नरक मे तुम्हारे लोहे के लिये खूब आग मिलेगी। आ जाओ।

[अन्दर फिर खटखट]

फिर खटखट, अब भी चैन नही। ओह! आखिर तुम कौन हो? बोलो।

पर हाँ, अरे यहाँ तो इतनी ठड है फिर नरक कैसे हो सकता है यह? मै भूल रहा हूँ। नहीं, अब और अधिक इस यमपुरी का द्वारपाल मै नही बनूँगा। मैने सोचा था कि सभी तरह के पेशेवरो को, जो आसानी से पाप करते रहते है, आसानी से ही नरक की उस जलती हुई आग के पास चला जाने दूँ।

[अन्दर फिर खटखट की आवाज़]

हाँ, हाँ, पर मेरी यह प्रार्थना है कि बेचारे इस द्वारपाल की ओर से नज़र फेर जाना।

[द्वार खोलता है।]

[मैकडफ और लैनोक्स का प्रवेश]

मैकडफ : क्यो? क्या रात बहुत देर से सोये थे जो अभी तक भी बिस्तरे मे पड़े हुए हो?

द्वारपाल : नही, सच मानिये स्वामी! मुर्गे की दूसरी बाँग तक हम जागते रहे थे।

मैकडफ : क्या तुम्हारे स्वामी यही है?

[मैकबैथ का प्रवेश]

अरे, वह तो आ रहे है। मालूम होता है हमारे इस तरह बार-बार खटखटाने से उनकी नीद टूट गई है।

लैनोक्स : अभिवादन करता हूँ श्रेष्ठ!

मैकबैथ : आप दोनो को भी मेरी ओर से अभिवादन है।

मैकडफ : श्रेष्ठ थेन! क्या सम्राट् जाग गये है?

मैकबैथ : अभी तक तो नही जागे मालूम होते है।

मैकडफः : उन्होने तो मुझे इससे पहले ही आने की आज्ञा दी थी पर

मुझे कुछ देर हो गई।

मैकबैथ : चलो, मै तुम्हे वहाँ ले चलता हूँ।

मैकडफ : श्रेष्ठ थेन ! मैं जानता हूँ कि तुम यह सब कुछ खुशी से ही कर रहे हो पर इसमे तुम्हे तकलीफ तो अवश्य होगी।

मैकबैथ : जिस काम को करने मे हृदय मे खुशी हो उसमे तकलीफ कैसी ? देखो, वही दरवाजा है।

मैकडफ : वहाँ से मुझे उनको पुकारना चाहिये। क्यो नही ? हमे तो इतना अधिकार मिला ही हुआ है।

[मैकडफ जाता है।]

लैनोक्स : क्या सम्राट यहाँ से आज ही वापिस जायेगे ?

मैकबैथ : हाँ, इरादा तो उनका यही है।

लैनोक्स : आज रात कैसी डरावनी थी। मालूम है ? जहाँ हम सो रहे थे वहाँ जलती हुई चिमनियाँ टूट-टूट कर हवा के झोको के साथ नीचे गिर पड़ी और कुछ तो कहते हैं कि हवा की साँय-साँय मे कुछ मौत की-सी बडी डरावनी चीखे सुनाई देती थी। ऐसा लगता था मानो कि वे चीखे और भी ज़ोर से पुकार कर कह रही थी—'सावधान, बुरा समय आ रहा है।' उल्लू भी रात भर अपनी बुरी भयावनी बोली मे बोलता रहा।

कुछ तो यहाँ तक कहते है कि इस सबसे डरकर एक बार तो पृथ्वी भी थर-थर काँप उठी थी।

मैकबैथ हाँ, यह रात तो इतनी ही डरावनी थी।

लैनोक्स · मेरी छोटी-सी याद मे तो मैने ऐसी रात कभी नही देखी।

[मैकडफ का पुन· प्रवेश]

मैकडफ ओ, गजब ! गजब हो गया !! ग़जब हो गया !!!

न तो कुछ मुंह से कहते ही बनता है और न हृदय कभी भी इसकी

फिर खटखट, अब भी चैन नही। ओह! आखिर तुम कौन हो? वोलो।

पर हाँ, अरे यहाँ तो इतनी ठड है फिर नरक कैसे हो सकता है यह? मै भूल रहा हूँ। नही, अब और अधिक इस यमपुरी का द्वारपाल मै नही वनूंगा। मैने सोचा था कि सभी तरह के पेशेवरो को, जो आसानी से पाप करते रहते है, आसानी से ही नरक की उस जलती हुई आग के पास चला जाने दूं।

[अन्दर फिर खटखट की आवाज़]

हाँ, हाँ, पर मेरी यह प्रार्थना है कि वेचारे इस द्वारपाल की ओर से नजर फेर जाना।

[द्वार खोलता है।]

[मैकडफ और लैनोक्स का प्रवेश]

मैकडफ : क्यों? क्या रात वहुत देर से सोये थे जो अभी तक भी विस्तरे मे पडे हुए हो?

द्वारपाल . नही, सच मानिये स्वामी! मुर्गे की दूसरी वाँग तक हम जागते रहे थे।

मैकडफ़ : क्या तुम्हारे स्वामी यही है?

[मैकवैथ का प्रवेश]

अरे, वह तो आ रहे हैं। मालूम होता है हमारे इस तरह वार-वार खटखटाने से उनकी नीद टूट गई है।

लैनोक्स : अभिवादन करता हूँ श्रेष्ठ!

मैकवैथ : आप दोनों को भी मेरी ओर से अभिवादन है।

मैकडफ : श्रेष्ठ थेन! क्या सम्राट् जाग गये है?

मैकवैथ : अभी तक तो नही जागे मालूम होते है।

मैकडफः : उन्होने तो मुझे इनसे पहले ही आने की आज्ञा दी थी पर

मुझे कुछ देर हो गई।

मैकवैथ : चलो, मै तुम्हे वहाँ ले चलता हूँ।

मैकडफ : श्रेष्ठ थेन! मै जानता हूँ कि तुम यह सब कुछ खुशी से ही कर रहे हो पर इसमे तुम्हे तकलीफ तो अवश्य होगी।

मैकवैथ : जिस काम को करने मे हृदय मे खुशी हो उसमे तकलीफ कैसी ? देखो, वही दरवाजा है।

मैकडफ़ : वहॉ से मुझे उनको पुकारना चाहिये। क्यो नही ? हमे तो इतना अधिकार मिला ही हुआ है।

[मैकडफ जाता है।]

लैनोक्स : क्या सम्राट यहाँ से आज ही वापिस जायेगे ?

मैकवैथ : हाँ, इरादा तो उनका यही है।

लैनोक्स · आज रात कैसी डरावनी थी। मालूम है ? जहाँ हम सो रहे थे वहाँ जलती हुई चिमनियाँ टूट-टूट कर हवा के झोको के साथ नीचे गिर पडी और कुछ तो कहते हैं कि हवा की साँय-सॉय में कुछ मौत की-सी वडी डरावनी चीखे सुनाई देती थी। ऐसा लगता था मानो कि वे चीखे और भी जोर से पुकार कर कह रही थी— 'सावधान, वुरा समय आ रहा है।' उल्लू भी रात भर अपनी वुरी भयावनी वोली मे वोलता रहा।

कुछ तो यहाँ तक कहते है कि इस सवसे डरकर एक वार तो पृथ्वी भी थर-थर कॉप उठी थी।

मैकवैथ . हॉ, यह रात तो उतनी ही डरावनी थी।

लैनोक्स मेरी छोटी-सी याद मे तो मैने ऐसी रात कभी नही देखी।

[मैकडफ का पुन· प्रवेश]

मैकडफ . ओ, गजव ! गजव हो गया !! गज़व हो गया !!!

न तो कुछ मुंह से कहते ही वनता है और न हृदय कभी भी इसकी

कल्पना ही कर सकता था।

मैकबैथ } क्यो ? क्या हुआ ?
लैनोक्स }

मैकडफ . मौत की काली छाया नाच रही है। ओ ! किसी घृणित हत्यारे ने सम्राट का खून कर दिया है !

मैकबैथ : क्या ? क्या कह रहे हो तुम ? खून ? यहाँ ?

लैनोक्स : सम्राट का खून ?

मैकडफ़ : हाँ, जाओ विश्वास न हो तो उस कमरे मे जाकर उस भयानक दृश्य को देख लो और अपनी आँखे फाड लो। मत कहो मुझसे कुछ कहने के लिये। स्वय जाकर तुम देखो और समझो।

[मैकबैथ और लैनोक्स जाते हैं।]

उठो ! उठो !!

खतरे की घटी वजा दो। खून ! षड्यन्त्र ! बैंको ! डोनलवेन ! मैलकॉम ! कहाँ हो ? उठो ! मौत की-सी इस गहरी नीद को दूर करो। देखो, यह खून ! हत्या ! उठो ! उठो !! यह देखो प्रलय का अन्तिम दिन आ गया। मैलकॉम ! बैंको ! छोड दो अपनी नींद और मौत के इस भयानक दृश्य को देखने के लिये इसी तरह उठे चले आओ जैसे भूत-प्रेत अपनी-अपनी कब्रो से उठ कर चले आते हैं ! वजा दो खतरे की घटी।

[घंटी बजती है।]

लेडी मैकबैथ : क्या हुआ यह ? सभी सोये हुए लोगों को उठाने के लिये यह खतरे की घटी कैसे वजाई जा रही है ! वोलो, वताओ क्या हुआ ?

मैकडफ : ओ देवी ! मत पूछो मुझसे। जो कुछ मै वताऊँगा वह तुम्हे सुनाने लायक नहीं है। तुम स्त्री हो और स्त्री को ऐसी वात वताना

उसकी हत्या करने के बराबर है देवी !

[बैंको का प्रवेश]

ओ बैंको ! बैंको !!

हमारे स्वामी का किसी नीच हत्यारे ने खून कर डाला है।

लेडी मैकबैथ है ! क्या कहा ? खून ? हमारे घर मे खून ?

बैंको : कही भी होता उतना ही बुरा होता देवी ! पर नही ! मत कहो यह। मेरे प्यारे डफ ! कह दो कि यह सब कुछ झूठ है। नही... ।

[मैकबैथ तथा लैनोक्स का पुनः प्रवेश]

मैकबैथ : ओह, क्या अच्छा होता कि ऐसे अभागे समय से एक घंटा पहले ही मै मर जाता, तो मै अपनी अन्तिम श्वासे तो सन्तोष के साथ ले सकता। पर क्या है अब ? इसी क्षण से मुझे लगता है कि कोई सत्य नही है मनुष्य के इस क्षुद्र जीवन मे। उसका यह सब अहकार मिट्टी के खिलौनो का-सा खेल है। क्या यश और गौरव अभी भी जीवित है ? नही ! जिन्दगी की शराब लुट चुकी है और इस आसमान के नीचे खोखली दुनिया मे अब सिर्फ गन्दगी और कीचड़ बच रही है।

[मैलकॉम तथा डोनलबेन का प्रवेश]

डोनलबेन : क्या हुआ यह ?

मैकबैथ तुम यहाँ हो और तुम्हे अभी कुछ पता ही नही ? ओ डोनलबेन ! वही सोता जो तुम्हारे जीवन-लता को पानी दे कर सींचा करता था आज हमेशा-हमेशा के लिये सूख गया है। तुम्हारे जीवन का आधार मिट गया है ।

मैकडफ : किसी हत्यारे ने तुम्हारे पिता सम्राट का खून कर डाला है।

मैलकॉम : हैं, क्या कहा ? किसने किया है यह सब ?

लैनोक्स : मालूम तो यही होता है कि उनके शयनागार के पहरेदारों ने

ही यह काम किया है। उनके हाथ और चेहरे सब खून से रगे हुए थे और इसी तरह उनकी कटारे भी मानो खून मे डूबी हुई थी। जब हमने उनके तकियों की तरफ देखा तब हमे खून से लिथडी वहाँ पडी हुई मिली। हमारे वहाँ पहुँचते ही उन्होने एक बार हमारी तरफ देखा और देख कर वे एक साथ कुछ घबरा-से गये। मुझे तो उन्हे देखकर ऐसा लगता था कि उनके बीच मे तो हर किसी की जान को खतरा हो सकता था।

मैकबैथ : पर ओह! मै अपने उस भावावेश के लिये कितना पछताता हूँ जिसने मुझसे उनका यह खून करवा दिया।

मैकडफ : तुमने? पर ऐसा किया क्यो तुमने?

मैकबैथ : किया क्यो? तो फिर तुम्ही बताओ कि इस संसार मे कौन ऐसा है जो ऐसे समय मे शान्ति, धैर्य्य और बुद्धिमानी से काम ले सकता है जब क्रोध की आग उसके हृदय मे जल रही हो? क्या एक वफादार आदमी इस तरह अपने स्वामी की हत्या का यह दृश्य देख कर अपने आपको बस मे रख सकता था? नही, कोई नही। मेरे सम्राट के प्रति मेरे असीम प्रेम ने मेरी सारी बुद्धि पर परदा डाल दिया। मैने देखा कि एक तरफ चांदी की-सी देह वाला यह डंकन पडा हुआ था और उस देह पर हुए घावों को देखकर तो मुझे लगा कि यम के दूतो के घुसने के लिये किसी ने ये द्वार बना दिये है। फिर ठीक दूसरी ओर मैने देखा कि खून से भीगे हुए ये हत्यारे थे। उनकी कटारे पूरी तरह खून से सनी हुई थी। फिर तुम्ही बताओ कि जिसके हृदय मे सम्राट के प्रति निर्भीक प्रेम है वह कैसे अपने आपको ऐसे अवसर पर बस में रख सकता था।...

लेडी मैकबैथ : ओह! नही। नही!! ले चलो मुझे यहाँ से। मुझे दूर ले चलो।

मैकडफ़ : (सेवक से) इस देवी के पास रहो।

मैलकॉम : हमारे मुँह क्यो वन्द है डोनलवेन ! जबकि हमारे पिता का जीवन हमसे ही सवसे अधिक सम्वन्धित है ?

डोनलबेन (मैलकॉम से) क्या बोले हम यहाँ भाई ! जहाँ इसका डर है कि किसी कोने मे छिपा हमारा दुर्भाग्य निकल कर कही हमे ग्रस न ले। चलो, यहाँ से कही दूर भाग चले। अभी हमारा आँसू वहाने का समय यहाँ नही है।

मैलकॉम : (डोनलबेन से) और न अभी कोई ऐसा कार्य्य करने का समय है जिससे हम हमारे गहरे दु.ख को प्रगट कर सके।

वैको : इस देवी की देखभाल करना।

[लिडी मैकवैथ वाहर लाई जाती है।]

अव ठण्डी हवा से बचने के लिये सभी अपने-अपने कपडे पहन लो और आओ फिर मिल कर इस षड्यन्त्र का आगे तक कुछ पता लगाये। हमारे हृदय का डर और सन्देह हमारे कदमो को आगे वढ़ने से रोकता है। मै उस परमात्मा की सौगन्ध खाकर कहता हूँ कि उन घृणित हत्यारो के छिपे हुए सारे षड्यन्त्र को खोज निकालूंगा।

मैकडफ : यही मैं करूँगा।

सभी · हम सब भी ऐसा ही करेंगे।

मैकडफ : तो वस अव शीघ्रता से अपने-अपने कपड़े पहन लो और चलो सव लोग उस वड़े कमरे मे इकट्ठे हो कर कुछ योजना वनाये।

सभी : स्वीकार है।

[मैलकॉम और डोनलवेन को छोड़कर सभी चले जाते हैं।]

मैलकॉम : क्या करोगे अव तुम, वताओ मै सोचता हूँ हमे अव उन-के वीच मे नही रहना चाहिये। वनावटी आँसू तो अपनी आँखो से

वही आदमी आसानी से गिरा सकता है जो झूठा होता है। मै तो अब इङ्गलैंड चला जाऊँगा।

डोनलवेन : तो मै आयर्लेंड चला जाऊँगा। हमारी सुरक्षा के लिये यही अच्छा है कि हम एक दूसरे के पास न रहे और अपने दोनो के भाग्यो को अलग-अलग राहो से चलने दे। इसी जगह जहाँ अब हम है मुझे लगता है कि मनुष्य की मुस्कराहट मे कटारें छिपी हुई है। यहाँ जिससे जितना निकट खून का सम्बन्ध है वह उतना ही खून का प्यासा है।

मैलकॉम : और फिर हत्या के लिये छोडा हुआ तीर अभी अपने ठीक निशाने पर जा कर नही लगा है। हमारे लिये सबसे अच्छा इसी मे है डोनलवेन! कि इस तीर के निशाने से बचे। इसलिये चलो, अपना-अपना घोड़ा ले और शीघ्र यहाँ से भाग चले। बस अब एक दूसरे से संकोच करने मे समय न बिताये। जानते हो, जहाँ से दया का नामो-निशान पूरी तरह उठ गया हो और चारो ओर ख़तरा ही ख़तरा दिखाई दे वहाँ से चुपचाप भाग जाना ही अच्छा है।

[जाते हैं।]

दृश्य ४

[मैकबैथ के महल के बाहर]

[रौस तथा एक वृद्ध पुरुष का प्रवेश]

वृद्ध : अपने जीवन के सत्तर बरस मैंने गुज़ारे है और उस बीच न जाने कितनी अजीब भयानक से भयानक घटनाएँ देखी पर इस डरावनी रात को देखकर तो मुझे अपना वह सारा अनुभव कुछ फीका-सा लगता है।

रौस : ओह! मेरे अच्छे पिता! क्या आप नही देखते कि जहाँ मनुष्य

ऐसे पाप करने लग जाते हैं वहाँ आकाश भी मन मे क्रुद्ध होकर खून से सनी इस पृथ्वी को डराने लगता है। घडी मे देखिये, दिन निकल आया है पर रात का वह अन्धकार सूर्य्य की किरणो को आकाश मे ही रोके हुए है। क्या है यह ? इस समय जब सूर्य्य की उन जीवनदायिनी किरणो को आकर पृथ्वी को चूमना चाहिये था उस समय चारो ओर यह रात का अन्धकार कैसा ? मुझे तो लगता है कि मनुष्य के इन घृणित पापो को शरम के मारे सूर्य्य देखने का साहस नही कर रहा है।

वृद्ध . जैसी घटना आज घटी है वैसी कभी न तो सुनी और न देखी.। मालूम है, पिछले मगलवार को ही एक बाज़ गर्व मे भर कर आकाश मे उड रहा था तो छोटी-छोटी चुहिया मारने वाले एक उल्लू ने उसका पीछा किया और उसे मार गिराया ?

रौस . और डकन के घोडे कितने सुन्दर और विश्वास के साथ दौडने वाले हैं। सभी अच्छी नस्ल के है पर सच मानिये, कैसी विचित्र-सी बात है वे सभी पागल हो गये हैं। उन्होने अपनी लगाम वगैरह सब बन्धन तोड़ डाले है। ऐसा मालूम होता है कि पूरी मनुष्य-जाति के विरुद्ध विद्रोह करने पर वे तुल पड़े हैं। कितनी भी रोकने की कोशिश करने पर रुकते ही नही।

वृद्ध : कोई कह रहा था कि वे एक दूसरे का मास नोच-नोच कर ही आपस में इस तरह एक दूसरे को खा गये।

रौस : ठीक यही बात है। जब मैंने देखा तो मुझे भी आश्चर्य्य होने लगा। लो श्रेष्ठ मैकडफ आ रहे हैं।

[मैकडफ का प्रवेश]

क्यों, अब क्या स्थिति है श्रीमान् ?

मैकडफ : क्या तुम्हे कुछ दिखाई नही पड़ रहा ?

रौस : हाँ, पर क्या कुछ पता लगा कि किस कमीने ने यह घोर पाप किया है।

मैकडफ : उन्ही द्वारपालों ने जिन्हे मैकबैथ ने मार डाला है।

रौस : हाय ! अभागे दिन ! ऐसा करने मे उन द्वारपालों को क्या मिलता ?

मैकडफ़ : उन्हे तो किसी ने इस काम के लिये किराये पर रखा मालूम होता है। कुछ सुना ? सम्राट् के दोनो पुत्र मैलकॉम और डोनलवेन न जाने छिपकर कहाँ भाग गये है, इसी से इस हत्या का शुभा उन्ही पर जाता है।

रौस : यह भी कैसी अजीव-सी वात है। ओ, उनकी वह अन्धी और मतवाली महत्त्वाकाक्षा उन माँ-वाप को भी खा गई जिन्होने इस ससार मे जन्म दिया और पाल-पोस कर वडा किया है। तव तो अधिक सम्भव यही है कि मैकवैथ ही अव सम्राट वनेंगे।

मैकडफ : हाँ, हाँ, उन्ही का नाम तो सवसे पहले लिया ही गया था। अव राज्याभिषेक के लिये ही वे 'स्कोन' गये हुए है।

रौस : डकन का मृत शरीर कहाँ दफनाया गया है ?

मैकडफ . वही 'कॉमेकिल' मे जो उनके पूर्वजो के समय से ही राजपरिवार का पवित्र श्मशान है। वही उनकी अस्थियाँ सुरक्षित रखी जाती है।

रौस : क्या तुम 'स्कोन' जाओगे ?

मैकडफ : नही भाई ! मै तो फाइफ जाऊँगा।

रौस : अच्छा तो मैं 'स्कोन' जाता हूँ।

मैकडफ · मेरी ईश्वर से यही प्रार्थना है, सब काम अमन-चैन से वहाँ पूरा हो जाय जिसमें मैकबैथ का राज्याभिषेक भी डकन के राज्या-

भिपेक की तरह शान्तिपूर्ण ढंग से हो जाय।
अच्छा, अलविदा !

रौस : अलविदा ! अलविदा पिता जी !

वृद्ध : परमात्मा सदा तुम्हारे ऊपर दयालु रहे और उन सब पर भी उसकी कृपा रहे जो बुराई को भी भलाई के रूप मे बदल लेते हैं और अपने शत्रु को भी मित्र बनाकर गले लगा लेते है।

[प्रस्थान]

वैंको : हाँ स्वामी ! अच्छा, अब हमारे जाने का समय हो गया, आज्ञा दीजिये ।

मैकबेथ : मेरी यही हार्दिक कामना है कि तुम्हारे घोडे तेजी से बराबर भागते हुए तुम्हे ले जायें । इसीलिये मेरी अब यही आज्ञा है कि जाकर उनकी पीठ पर चढ जाओ ।

[वैंको जाता है ।]

रात के सात बजे तक जिसके जो जी मे आये वही करे । आने वाले अतिथियो का अत्यधिक मधुरता से स्वागत करने के लिये हम दावत के समय तक अकेले ही रहेगे ।

तब तक ईश्वर तुम्हारी रक्षा करे !

[मैकबेथ तथा एक सेवक को छोड़कर सभी चले जाते हैं ।]

(सेवक से) सुनो, एक बात तुमसे कहनी है । क्या वे लोग अभी तक हमारी आज्ञा की प्रतीक्षा मे खड़े है ?

सेवक : हाँ स्वामी ! वे राजमहल के दरवाजे के बाहर प्रतीक्षा कर रहे हैं ।

मैकबेथ : उन्हे हमारे सामने लाकर उपस्थित करो ।

[सेवक जाता है ।]

(स्वगत) जब तक सब तरह के भय से निश्चिन्त होकर मैं राज्य का सुख न भोग सकूँ तो मेरे सम्राट होने का क्या तात्पर्य है ? वैंको का डर मेरे हृदय मे गहरी जड़ जमाये हुए है और फिर उसके राजसी स्वभाव मे अवश्य कोई ऐसी बात है जिससे डर के मारे हृदय काँपने लगता है । कौन-सा ऐसा काम है इस संसार मे जिसके करने का साहस उसमे न हो । इस साहस और निर्भीकता के साथ-साथ उसकी बुद्धि भी उतनी ही तीक्ष्ण है जो उसके साहस-भरे कार्यों को सही रास्ता दिखाती रहती है । उसके सिवाय मुझे इस पूरे

संसार मे कोई भी ऐसा नही दिखाई देता जिससे मेरा हृदय डर कर कांपे। जव वह सामने रहता है तो मेरे गौरव का प्रकाश कुछ इस तरह दव-सा जाता है जैसे कहते है 'सीज़र' के सामने 'मार्क-ऐंटोनी' का दव जाता था। उसी समय जव उन डाइनो ने मेरे सम्राट होने की भविष्यवाणी की थी उसने उन्हे धिक्कारा था और कहा था . 'ओ डाइनो! मुझसे भी कुछ कहो।' तव स्वय देवदूतो की तरह ही उन सभी ने उसे सम्राटो का पिता कह कर पुकारा था। मेरे सिर पर जो यह राजमुकुट उन्होने रखा है, मेरे वाद मेरी सन्तान उसे नही पहन पायेगी। मेरा कोई उत्तराधिकारी अपने हाथो मे यह राजदण्ड न पकड सकेगा। दूसरे लोग मुझसे यह छीन लेगे क्योकि मेरा तो कोई पुत्र सम्राट नही वन सकता। यदि मेरे इस क्रूर भाग्य ने यही निश्चय किया है तो क्या वैंको के पुत्रो के ऐश्वर्य्य के लिये ही मैंने यह सव पाप किया है? क्या उन्ही के लिये मैंने अपने हृदय की सारी शान्ति खो कर इसमे इतनी कटुता और हाहाकार भर लिया है? ओह! अगर मेरे वाद वे ही सम्राट होगे तो क्या उन्ही के लिये मैंने अपनी इन आत्मा को शैतान के हाथो वेचा है? नही, यह नही हो सकता। मैं मरते दम तक अपने इस क्रूर भाग्य से लड़ूंगा और ऐसा कभी नही होने दूंगा। कभी नही होने दूंगा।

(चौंककर) कौन ?

[दो हत्यारों को लेकर सेवकों का पुन. प्रवेश]

(सेवक से) ठीक है, वस अव जाकर द्वार पर खड़े हो जाओ और जव तक हम न पुकारे तव तक वहाँ से नही हटना।

[सेवक जाता है।]

हा, तो कल ही हमने वाते की थी न ?

मैकबैथ : ठीक है, अब तुम दोनों जानते हो न कि बैंको तुम्हारा दुश्मन है ?

दूसरा हत्यारा : हाँ महाराज ! हम अच्छी तरह समझते हैं।

मैकबैथ : इसी तरह हमारी जान का भी वह कट्टर दुश्मन है। हम एक पल भी उसके पास रहते है तो हमे अपने हृदय मे बराबर खतरा बना रहता है। हाँ, यह जरूर है कि चाहे तो हम अपनी खुली ताकत से उसे अपने रास्ते मे अलग हटा सकते हैं और हमारे खिलाफ किसी को आवाज उठाने की भी हिम्मत नही है पर फिर भी हम ऐसा करना नही चाहते क्योकि तुम जानते हो कि कुछ ऐसे लोग हमारे साथी हैं जो उसके भी मित्र है, फिर अगर हम अपने हाथों से यह करेगे तो वे सब हमारा साथ छोड़ देगे। यह हम नही चाहते। और फिर अगर हम अपने हाथो से उसका खून करेंगे तो हमे इनके ऊपर कुदरतन अफसोस भी होगा। इसी लिये हम यह काम तुम्हारे हाथो मे सौंपते हुए तुम्हारी मदद चाहते है क्योंकि बहुत-से ऐसे खास कारण है जिनसे यह बात अभी आम जनता के कानों तक नही पहुँचनी चाहिये।

दूसरा हत्यारा : अवश्य महाराज ! जैसी भी आज्ञा आप देगे उसे हम पूरा करेगे।

पहला हत्यारा : चाहे हमारी जान क्यो न चली जाय।

मैकबैथ : ठीक है, हम देख रहे है। तुम्हारा जोश तुम्हारी आँखों में होकर पूरी तरह चमक रहा है। अधिक मे अधिक इसी एक घंटे के अन्दर ही हम तुम्हे बतायेगे कि तुम्हे कहाँ छिपना है और वह कहाँ से आयेगा, कहाँ जायेगा इसके बारे मे पूरा बताकर यह भी बतायेगे कि किस समय तुम्हे यह काम करना है। क्योकि यह समझ लो कि सूरज के झाँक कर देखने से पहले ही तुम्हें यह काम

पूरा करना है। और सुनो, यह सब काम राजमहल से कुछ दूरी पर होना चाहिये जिससे हमारे ऊपर इसका कुछ भी शक-शुभा भी न जाय और हमारी आँखो से वह काँटा भी हमेशा के लिये दूर हो जाय।—
फिर, हाँ, उसका पुत्र फ्लीन्स भी तो उसके साथ आयेगा। काम बिलकुल पूरा तभी होगा जब उसके साथ-साथ उसके पुत्र को भी तुम इस ससार से हमेशा के लिये विदा कर दो क्योकि वह भी हमारी आँख का दूसरा उतना ही बड़ा काँटा है।

दूसरा हत्यारा : जो आज्ञा महाराज! हम उसके लिये भी पूरी तरह तैय्यार है।

मैकबैथ : बस, थोडी ही देर मे हम तुमसे मिलेगे। कुछ ही क्षणो के बाद। उस समय तक अन्दर ही रहना।

[हत्यारे जाते है।]

हो गया फैसला। ओ बैंको! हो गया तुम्हारी जिन्दगी का फैसला। अगर तुझे इस दुनिया से एक दिन जाना है तो इसी रात को जाना होगा ·· इसी रात को।

[जाता है।]

दृश्य २

[राजमहल का दूसरा कमरा]

[लेडी मैकबैथ का एक सेवक के साथ प्रवेश]

लेडी मैकबैथ : क्यो, क्या बैंको राजदरबार से चला-गया ?

सेवक : जी हाँ महारानी! लेकिन वे तो आज रात को ही वापस आ जायेंगे।

लेडी मैकबैथ · अच्छा, अभी जाकर सम्राट से कह दो कि मै कुछ समय

लेडी मैकवेथ : हाँ, हाँ, यह क्या हो गया है तुम्हे ? यह सब चिन्ता अपने मस्तिष्क से निकाल दो।

मैकवैथ : मै क्या बताऊँ प्रिये ! मेरे मस्तिष्क को कोई अन्दर ही अन्दर नोच रहा है। तुम नही जानती कि वह बैंको और उसका पुत्र फ्लीन्स मेरे रास्ते मे कितने बड़े रोडे बनने के लिये अभी तक इस ससार मे जिन्दा हैं।

लेडी मैकबेथ : लेकिन, क्या हुआ इससे, वे भी तो आखिर इस ससार के ही प्राणी है किसी तरह अमर तो हैं नही। फिर ?

मैकवैथ · ओह प्रिये ! कितना अच्छा विचार है तुम्हारा। मुझे इससे सन्तोष मिला है। ठीक है, वे भी इस संसार के ही प्राणी है। वे भी मर सकते है। वे भी मर सकते हैं · · ·।

तो फिर खुशियाँ मनाओ प्रिये ! राजमहल में चमगादड़ के उडने से पहले ही और इससे पहले कि गोबरीला भन्न-भन्न करके सोते लोगो को यह कहकर जगाये कि उठो, उठो, डाइन हिकेट तुम्हे बुला रही है और उससे वे नीद मे ही जम्हाइयाँ लेने लगे एक डरावनी घटना घटेगी और वह भी काम पूरा हो जायेगा प्रिये !

लेडी मैकवैथ : कौन-सा काम स्वामी ?

मैकवैथ : मुझसे मत कहलवाओ प्रिये ! जो कुछ होने जा रहा है उसे पहले हो जाने दो उसके बाद मै चाहता हूँ तुम्हे उसका पता लगे जिससे तुम मेरी बुद्धि की प्रशसा तो कर सको। बस अब तो आ, ओ काली रात ! आ और दयनीय अवस्था मे तडपते इस दिन की आँखे बन्द कर ले। अपने काले उन खून से सने हुए हाथो से मेरी सारी चिन्ता और दु ख को मसल कर चूर कर दे।

वह देखो, दिन ढल रहा है, और अँधेरा अपनी काली छाया इस संसार पर डाल रहा है। इधर कौवे जगल की ओर उडते हुए अपने

अपने घरो की ओर वापिस जा रहे है। दिन भर के थके-मांदे प्राणी सोने की तैय्यारी कर रहे है और उधर रात के शिकारी पशु-पक्षी अपने भोजन की तलाश मे निकल पडे है।
क्यो ? तुम मेरी बातो से इस तरह चौंक क्यो रही हो ? ठहरो, कुछ समय और थोडा धैर्य्य रखो। क्या जानती नही कि शैतानी से पाई हुई कामयाबी उसी तरह शैतानी से ही मजबूत बनाई जा सकती है ? इसलिये आओ, मेरे साथ चलो।

[जाते हैं।]

दृश्य ३

[राजमहल के पास एक उपवन। तीन हत्यारो का प्रवेश]

पहला हत्यारा : लेकिन हमारे साथ चलने की आज्ञा किसने दी तुम्हे ?

तीसरा हत्यारा : मैकबैथ ने।

दूसरा हत्यारा : हमे अब उस पर किसी तरह अविश्वास नही करना चाहिये। सच, वह उसी काम को करने के लिये हमसे कह रहा है जिसमे हमारा भला है।

पहला हत्यारा : तो फिर तुम हमारे साथ रहो। देखो, पश्चिम दिशा मे अब भी कुछ धुंधला-सा प्रकाश बाकी है। देर से आने वाले मुसाफिरो को अपनी सराय तक पहुँचने के लिये अब भी कुछ समय है। सुनो, अब तो वह, जिसके ऊपर हमारी नजरे लगी हुई हैं, नजदीक आ ही रहा होगा।

तीसरा हत्यारा : वह सुनो, कुछ घोडो की टापे सुनाई दे रही है।

बैंको : (अन्दर से) अरे सुनो। इस अँधेरे मे जाने के लिये हमे कुछ रोशनी दो।

दूसरा हत्यारा : ओ ! यह तो वही है। और जितने भी महमान दावत में

लेंडी मैकवैथ : हाँ, हाँ, यह क्या हो गया है तुम्हे ? यह सब चिन्ता अपने मस्तिष्क से निकाल दो।

मैकवैथ : मैं क्या बताऊँ प्रिये ! मेरे मस्तिष्क को कोई अन्दर ही अन्दर नोच रहा है। तुम नही जानती कि वह वैको और उसका पुत्र फ्लीन्स मेरे रास्ते मे कितने बड़े रोडे बनने के लिये अभी तक इस ससार मे जिन्दा हैं।

लेंडी मैकवैथ : लेकिन, क्या हुआ इससे, वे भी तो आखिर इस ससार के ही प्राणी है किसी तरह अमर तो है नही। फिर ?

मैकवैथ . ओह प्रिये ! कितना अच्छा विचार है तुम्हारा। मुझे इससे सन्तोप मिला है। ठीक है, वे भी इस ससार के ही प्राणी है। वे भी मर सकते है। वे भी मर सकते है • •।

तो फिर खुशियाँ मनाओ प्रिये ! राजमहल मे चमगादड़ के उडने से पहले ही और इससे पहले कि गोवरीला भन्न-भन्न करके सोते लोगो को यह कहकर जगाये कि उठो, उठो, डाइन हिकेट तुम्हे बुला रही है और उससे वे नीद मे ही जम्हाइयाँ लेने लगे एक डरावनी घटना घटेगी और वह भी काम पूरा हो जायेगा प्रिये !

लेंडी मैकवैथ : कौन-सा काम स्वामी ?

मैकवैथ : मुझसे मत कहलवाओ प्रिये ! जो कुछ होने जा रहा है उसे पहले हो जाने दो उसके बाद मैं चाहता हूँ तुम्हे उसका पता लगे जिससे तुम मेरी बुद्धि की प्रशसा तो कर सको। बस अब तो आ, ओ काली रात ! आ और दयनीय अवस्था मे तडपते इस दिन की आँखे बन्द कर ले। अपने काले उन खून से सने हुए हाथो से मेरी सारी चिन्ता और दु.ख को मसल कर चूर कर दे।

वह देखो, दिन ढल रहा है, और अँधेरा अपनी काली छाया इस संसार पर डाल रहा है। ईधर कौवे जगल की ओर उड़ते हुए अपने

अपने घरो की ओर वापिस जा रहे है। दिन भर के थके-मांदे प्राणी सोने की तैय्यारी कर रहे है और उधर रात के शिकारी पशु-पक्षी अपने भोजन की तलाश मे निकल पडे है।
क्यो ? तुम मेरी बातो से इस तरह चौंक क्यो रही हो ? ठहरो, कुछ समय और थोडा धैर्य्य रखो। क्या जानती नही कि शैतानी से पाई हुई कामयाबी उसी तरह शैतानी से ही मजबूत बनाई जा सकती है ? इसलिये आओ, मेरे साथ चलो।

[जाते हैं।]

दृश्य ३

[राजमहल के पास एक उपवन। तीन हत्यारो का प्रवेश]

पहला हत्यारा : लेकिन हमारे साथ चलने की आज्ञा किसने दी तुम्हे ?

तीसरा हत्यारा : मैकबैथ ने।

दूसरा हत्यारा : हमे अब उस पर किसी तरह अविश्वास नही करना चाहिये। सच, वह उसी काम को करने के लिये हमसे कह रहा है जिसमे हमारा भला है।

पहला हत्यारा : तो फिर तुम हमारे साथ रहो। देखो, पश्चिम दिशा मे अब भी कुछ धुंधला-सा प्रकाश बाकी है। देर से आने वाले मुसाफिरो को अपनी सराय तक पहुँचने के लिये अब भी कुछ समय है। सुनो, अब तो वह, जिसके ऊपर हमारी नजरे लगी हुई है, नजदीक आ ही रहा होगा।

तीसरा हत्यारा वह सुनो, कुछ घोड़ो की टापे सुनाई दे रही हैं।

बैंको : (अन्दर से) अरे सुनो। इस अँधेरे मे जाने के लिये हमे कुछ रोशनी दो।

दूसरा हत्यारा : ओ ! यह तो वही है। और जितने भी महमान दावत मे

आने वाले थे पहले ही राजमहल मे पहुँच चुके हैं।

पहला हत्यारा : उनके घोडे तो वडे रास्ते से निकलकर जायेंगे न ?

तीसरा हत्यारा : करीव एक मील दूर होगा यहाँ से वह रास्ता लेकिन अक्सर तो और लोगो की तरह वह इधर से ही पैदल घूमता हुआ राजमहल तक जाया करता है।

[बैंको तथा फ्लीन्स एक मशाल लिये हुए आते हैं।]

दूसरा हत्यारा : वह देखो, रोशनी।

तीसरा हत्यारा हाँ, ठीक वही है यह तो।

पहला हत्यारा : तो फिर ठीक है हम यही खडे हो जाये।

बैंको : फ्लीन्स ! आज रात तो ऐसा लगता है पानी वरसेगा।

पहला हत्यारा . तो आने दे तुझे क्या अब ?

[वे सभी बैंको पर झपटते हैं।]

बैंको . ओ, षड्यन्त्र ! धोखा !! भाग जाओ फ्लीन्स ! भाग जाओ ! फौरन भाग जाओ मेरे प्यारे फ्लीन्स ! ओ नमकहराम, ज़लील, कमीनो ! तुम मुझसे वदला लेना चाहते हो ? तो ले लो गुलामो !

[बैंको मर जाता है और फ्लीन्स बचकर भाग निकलता है।]

तीसरा हत्यारा : अरे, यह मशाल किसने बुझा दी ?

पहला हत्यारा क्यो ? क्यो ? क्या ऐसा करना ठीक नही था ?

तीसरा हत्यारा : अभी तो सिर्फ एक ही मारा गया है। वह लड़का तो बचकर निकल ही गया।

दूसरा हत्यारा : हाय ! हमारा आधा काम तो अभी पूरा हुआ ही नहीं।

पहला हत्यारा : अव क्या करें ? चलो चलकर सम्राट् को वता दें कि अभी इतना ही काम पूरा हो सका है।

[जाते हैं।]

दृश्य ४

[राजमहल का बीच का भवन]

[दावत की तैय्यारियां। मैकवैथ, लेडी मैकवैथ, रौस, लैनोक्स, सरदार तथा अन्य सेवको का प्रवेश]

मैकवैथ मेरे सम्मानित अतिथियो! आप सब अपने पदो के अनुसार अपनी-अपनी जगह बैठ जाये। हम आप सभी का हृदय से स्वागत करते है।

सरदार : सम्राट को इसके लिये हमारी ओर से बहुत धन्यवाद है।

मैकवैथ : हम चाहते है कि हम आपके बीच मे ही रहकर आपका सत्कार करे। आपकी महमानदाज अभी अपनी जगह बैठी हुई है। इस खुशी के समय हम उनसे भी कहेगे कि वे भी उठकर आपका स्वागत करे।

लेडी मैकवैथ : अपने सभी साथियो से कह दीजिये कि मैं उन सबका हृदय से स्वागत करती हूँ।

[पहला हत्यारा दरवाजे पर आता है।]

मैकवैथ . वह देखो, प्रिये! वे सभी तुम्हारे इस स्वागत के लिये तुम्हे हृदय से धन्यवाद दे रहे है। दोनो तरफ ही बराबर का प्रेम-भाव है। हम अब सभी अपने साथियो के बीच बैठेगे। खूब खुल कर खुशी मनाओ। लो, हम अपने सभी अतिथियो की खुशहाली के लिये यह शराब का प्याला पीते हैं।

[दरवाजे पर पहुँच कर]

(चौंकते हुए) यह क्या? तुम्हारे चेहरे पर तो खून लगा हुआ है।

हत्यारा : खून? हां तो उसी बैंको का खून है यह महाराज!

मैकवैथ : ओह! अच्छा ही हुआ कि यह खून उसकी नाडियों मे न

कर तुम्हारे चेहरे पर मुझे दीख रहा है। तो, वह इस ससार से चल वसा !

हत्यारा हाँ, मेरे स्वामी ! मैने अपने हाथों से उसका गला फाडा है।

मैकवैथ · शाबास ! गला काटने वालो मे तुमसे वढ कर और कौन हो सकता है पर हाँ, वह भी अच्छा होगा जिसके हाथ के नीचे फ्लीन्स का गला आया होगा। अगर तुमने ही उसका भी काम तमाम किया है तो शावास ! तुम्हारे बराबर हम किसी को नही मानते।

हत्यारा . पर क्या बताऊँ, महाराज ! फ्लीन्स तो बच कर आ गया।

मैकवैथ : (स्वगत) ओह ! बच गया ! तब फिर भी मेरी चिन्ता और भय का कारण अभी इस दुनिया मे बचा रह गया। काश ! अगर वह वैको उस फ्लीन्स को भी अपने साथ ले जाता तो मेरा सुख पत्थर की तरह भरा-पूरा होता। मै एक चट्टान की तरह अमिट होता और जिस आजादी के साथ हवा चारो तरफ बहती है उसी आजादी के साथ बिना किसी खतरे के इस ससार मे विचरण कर सकता। पर ओह ! अब क्या हूँ मैं ? एक तंग रास्ते मे भिच जाने वाला दयनीय प्राणी जिसका हृदय भय और शका से हर पल बेचैन है।

(हत्यारे से) लेकिन, वैको तो पूरी तरह इस दुनिया से उठ गया न ?

हत्यारा : वीस गहरे-गहरे घावो का ताज पहन कर वह शान्ति से एक खाई मे सोया हुआ है महाराज ! उनमे छोटे से छोटा घाव भी उसकी मौत के लिये बडा है।

मैकवैथ : बहुत अच्छा, हम इसके लिये तुम्हे धन्यवाद देते हैं। (स्वगत) वह बूढा सांप तो उस खाई मे हमेशा के लिये आँखे मीचे पडा हुआ है और छोटा सांप चगुल से निकल कर भाग गया है। उसके चाहे अभी से दाँत भी नही उगे हैं पर आखिर सांप है, ओर दिन

मे वह भी जहर उगलने लगेगा ।

(हत्यारे से) अच्छा, अब तुम जा सकते हो। कल फिर हम मिलेंगे।

[हत्यारा चला जाता है।]

लेडी मैकबैथ : क्या बात है मेरे स्वामी ? दावत की इस खुशी मे तुम क्यों हिस्सा नही ले रहे हो ? मालूम है ? वह दावत कामयाब नही कही जाती जिसके बीच-बीच मे महमानदाज उठ कर अपने महमानो की आवभगत नही करता है। सभी जो यहाँ आये हैं क्या वे अपने-अपने घरो मे अच्छी तरह से खाना नही खा सकते ? कही दावत मे खाना खाने की तो यही विशेषता है न कि सबके मिलने मे एक जलसा होता है और सब एक दूसरे के साथ हँसते-बैठते हैं ? इसके बिना क्या मतलब है दावत मे मिलने का ?

मैकबैथ हाँ, ठीक कहती हो प्रिये ! तुमने तो मुझे मेरे कर्त्तव्य की याद दिला दी। ईश्वर करे हम दोनो का स्वास्थ्य अच्छा रहे, खाना अच्छी तरह पच कर हमे खूब भूख लगे और किसी तरह की व्याधि हमारे शरीर मे न रहे !

लैनोक्स : क्या मै सम्राट से भी हमारे साथ बैठने के लिये प्रार्थना कर सकता हूँ ?

[बैंको की प्रेतात्मा प्रवेश करती है और आकर मैकबैथ के स्थान पर बैठ जाती है।]

मैकबैथ : काश ! हमारे बीच मे हमारे राज्य का वह गौरव, वह सुयोग्य और श्रेष्ठ बैंको उपस्थित होता तो कितना अच्छा होता ! अब जब भी वह मुझे मिलेगा मै बिना उसकी कुछ सुने और बिना उसकी प्रार्थनाओं पर रहम खाये उसकी इस बेरुखाई के लिये खूब उलाहना दूंगा।

रौस : ठीक है, महाराज ! उन्होंने तो आने का वायदा किया था फिर

भी वे नही आये इससे तो उनके चरित्र पर एक धब्बा लग गया।

पर क्या सम्राट हमारे साथ बैठ कर हमे कृतज्ञ करेगे ?

मैकबैथ . अवश्य ! लेकिन वहाँ कोई बैठने की जगह तो है ही नही।

लैनोक्स नही, नही, स्वामी ! यहाँ यह जगह आपके लिये ही खाली छोडी गई है।

मैकबैथ कहाँ ?

लैनोक्स : यही महाराज !

क्यो ? क्या है जिसे देख कर आप इतना घबरा रहे है ?

मैकबैथ : बताओ, किसने किया है तुम लोगो मे से यह ?

कुछ सरदार : क्या किया है महाराज ?

मैकबैथ : कोई भी नही बोलता, कोई भी नही कहता कि यह मैंने किया है। · · · ओ चला जा, अपने इन खून से भीगे बालों को मेरी तरफ न हिला।

रौस : भाइयो ! आप लोग उठ जाये। सम्राट् की तबियत ठीक नही मालूम होती।

लेडी मैकबैथ : मेरे सम्मानित अतिथियो ! मेरे अच्छे साथियो ! मैं आपसे प्रार्थना करती हूँ कि आप लोग अपनी-अपनी जगह बैठे रहे। मेरे पति को तो उनकी युवावस्था से ही ऐसी बीमारी है। आप सभी बैठ जाये। थोडी ही देर में वे अच्छे हुए जाते हैं। अगर आप लोग इस तरह घबराये हुए-से उनकी तरफ देखेंगे तो वे और भी उत्तेजित हो जायेगे और इससे उनकी हालत इससे भी ज्यादा बिगड़ जायेगी। आप लोग अपना खाना खाते रहिये और उनकी चिन्ता छोड दीजिये।

(मैकबैथ से) तुम कोई आदमी हो ?

मैकबैथ : क्यों नही ! आदमी ही नही एक बहादुर आदमी हूँ जिनके

सीने मे उस खतरे से टकराने का दम है जिससे शैतान खुद डर कर भाग जाये ।

लेडी मैकवैथ : सब तुम्हारी थोथी बाते हैं। यह सब तुम्हारा डर है जिसने तुम्हारी यह हालत बनाई है । तुम्हारी ये वढी-चढ़ी बाते ठीक उसी हवा की कटार की तरह है जिसके बारे मे तुम कह रहे थे कि वह तुम्हे डकन के पास तक ले गई थी । कुछ नही, तुम्हारा यह जोश, यह उबाल सब तुम्हारे डरपोकपन का दिखावा है जो ठीक वैसा ही है जैसे जाडे की उस शाम को वह औरत अपनी दादी के नाम का बहाना करके वह किस्सा सुना रही थी। यह सब डूब मरने की बात है। शरम नही आती तुम्हे ? उस स्टूल को देख-देख कर तुम इस तरह डर कर कॉप क्यो रहे हो ?

मैकवैथ : वह देखो ! देखो ! वह रहा, क्या है यह ? अब बताओ क्या कहोगी तुम इसे ?

(प्रेतात्मा की ओर देख कर) मै तेरी क्या परवाह करता हूँ । इस तरह अपना सिर क्यो हिला रहा है ? बोलता क्यो नहीं ? बोल । ओह ! अगर कब्रो मे सोये मुर्दे भी फिर इस तरह उठ कर आने लगे तो फिर मरने के बाद हमारी लाशो को सिर्फ चील और कौवे ही खायेगे ।

[प्रेतात्मा चली जाती है।]

लेडी मैकवैथ क्या हो गया है तुम्हे यह ? यह क्या पागलपन तुम्हारे ऊपर चढ गया है जिसमे तुम यह तक भूल गये हो कि आखिर तो तुम एक मनुष्य हो ।

मैकवैथ : मैने उसे देखा था। वह आया था । अगर यह सच है कि मैं ज़मीन पर खड़ा हुआ हूँ तो यह भी सच है कि मैने अपनी आँखों से उसे देखा था ।

लेडी मैकवैथ : तुमने इस समय की सारी खुशी पर पानी डाल दिया है और इस तरह अपनी पागलपन की हालत वनाकर दावत के समय की आपस की हँसी-खुशी मे वाधा पहुँचाई है।

मैकवैथ : हम पूछते है कि क्या ऐसी चीजे भी दुनिया मे है जो गरमी की ऋतु मे उठते वादलो की तरह अचानक हमे आकर घेर ले और हमे एक गहरे आश्चर्य्य मे डाल दे ? हमारी सावारण हालत से आज हम आप लोगो को कुछ अजनवी-से लग रहे है पर क्या हम यह समझ ले कि ऐसी शकले देख कर आपके गालो की यह लाली वैसी ही वनी रहेगी जवकि डर के मारे हमारा चेहरा पीला पड गया है ?

रौस : कैसी शकले महाराज !

लेडी मैकवैथ : मेरी आपसे प्रार्थना है कि अव इनसे और अधिक वाते न कीजिये। इनकी हालत तो अव वहुत ही विगडती जा रही है। आप लोग ज्यादा कुछ पूछताछ करेंगे तो वे और भी उत्तेजित हो जायेंगे। अच्छा, अव आप सव लोगो को विदाई है। अलविदा। वस कृपा करके आप लोग शीघ्र यहाँ से चले जायें और सम्राट् की किसी तरह की आज्ञा की प्रतीक्षा मे न खड़े रहे।

लैनोक्स : अच्छा, अलविदा ! हमारी ईश्वर से यही प्रार्थना है कि वह सम्राट् को स्वास्थ्य प्रदान करे !

लेडी मैकवैथ : आप सवको मेरी ओर से अलविदा !

[मैकवैथ तथा लेडी मैकवैथ को छोड कर सभी चले जाते हैं।]

मैकवैथ : वह मुझसे वदला लेगा। कहने वाले ठीक ही कहते है कि खून खून का वदला खून से ही लेता है। वह देखो मुझे लग रहा है कि वे पत्थर अपने अन्दर दफनाए मुर्दो के शरीर को टटोल रहे हैं और पेड़ पुकार-पुकार कर कह रहे हैं कि ये हैं हत्यारे ! कितना भी

छिपा कर यह खून रखा गया पर क्या पशु और क्या पक्षी सभी हत्यारो का नाम पुकार-पुकार कर बता रहे है।
क्या बजा होगा रात का इस समय ?

लेडी मैकबैथ : अब रात कहाँ है ? पौ फट रही है।

मैकबैथ : तुमने कुछ देखा प्रिये ! मैकडफ हमारी दावत मे शामिल होने नही आया ? क्या सोचती हो तुम इसके बारे में ?

लेडी मैकबैथ : क्या तुमने उसको फिर बुलवाया ?

मैकबैथ : मेरे कानो मे अभी तो यह उडती हुई-सी बात ही आई है लेकिन बुलवाऊँगा मै उसे। मै कहता हूँ प्रिये ! ऐसा कोई भी सरदार नही बचेगा जिसके घर मे मै एक अपना जासूस न छोड़ दूँ। कल प्रात. काल से भी पहले उठ कर मै उन्ही डाइनो के पास जाऊँगा। वे मुझे और कुछ बतायेगी। अब मै कितना भी नीचा गिरकर, कितना भी पाप करके यह जानने का निश्चय कर चुका हूँ कि मेरे लिये बुरी से बुरी क्या बात हो सकती है। अब मेरे स्वार्थ के रास्ते मे जो भी रोडे है, जो भी शूल है वे दूर होने ही चाहिये क्योकि इस खून के दरिया मे कूद कर मै इतना आगे बढ आया हूँ कि अगर अब मुड कर वापिस जाना भी चाहूँ तो भी पीछे लौटना उतना ही मुश्किल है जितना अब आगे बढना। अजीब तरह के इरादे मेरे दिमाग मे बस रहे है, मै चाहता हूँ, उन पर गहराई से सोचने के पहले उनको पूरा किया जाना चाहिये।

लेडी मैकबैथ : मुझे लगता है, आप रात मे पूरी नीद सो नही पाये, इसी लिये आपकी यह हालत हो गई है। चलिये, चल कर सो जाइये अब।

मैकबैथ : हाँ, आओ, चलकर सो जाये। मेरा यह अजीब तरह का डर उस अनाड़ी के डर की तरह है जो इस तरह के कामो का पूरी

तरह आदी न हुआ हो। इस तरह के काले और खूंख्वार कामों में अभी हम बच्चे की तरह ही हैं प्रिये!

[जाते हैं।]

दृश्य ५

[बादलों की गड़गड़ाहट। बिजली। तीनों डाइनें हिकेट से मिलने आती हैं।]

पहली डाइन : क्यों ? क्या बात है हिकेट ? तुम गुस्से में क्यों दिखाई दे रही हो ?

हिकेट : क्या अब भी गुस्सा नहीं होना चाहिये ? तुम अपने आपको कुछ समझने लगी हो ? इस तरह की तुम्हारी ढीठपन देखकर भी क्या मुझे चुप रह जाना चाहिये ? बताओ मुझे, तुमने मेरे बिना ही अपनी उलटी-सीधी बातों में यह मौत का सारा सौदा मैकबैथ से कैसे कर लिया जब कि आदमी पर बड़ी से बड़ी आफत लाने में मैं तुम सबसे अधिक चतुर हूँ ? मैंने ही तुम्हें यह सब कुछ जादू सिखाया और मुझे ही तुमने नहीं बुलाया। बताओ क्यों ? कम से कम मेरी कला तो देखती कि क्या-क्या चालें मैं चलती। मुझे अपना प्रताप दिखाने का तुमने मौका ही नहीं छोड़ा। और उससे भी बुरी बात यह है कि तुमने यह सब कुछ उस मनचले लड़के के लिये किया है जिसके दिल में कपट और क्रोध भरा हुआ है और जो सिर्फ अपना स्वार्थ पूरा करने की ही बात सोचता है, तुम्हारी नहीं। सुधार लो अपनी यह गलती अब भी। जाओ, और कल अलख सवेरे ही 'एकरन' के गड्ढे के पास मुझे मिलना। वहीं वह अपनी तकदीर जानने आयेगा। अपना जादू-टोना, मंत्र आदि सब कुछ ज़रूरत पड़ने वाली चीज़ तैय्यार रखना। मैं अब

उसी हवा मे चली। यह रात मै अपने किसी खतरनाक इरादे की फिराक मे विताऊँगी। दोपहर होने से पहले ही एक विजली-सी फटेगी। चाँद के एक कोने पर एक बूँद लटकी हुई है, उसमें बड़ा रहस्य भरा हुआ है। मै चाहती हूँ कि किसी तरह जमीन मे गिरने से पहले मै इसे पा जाऊँ। जानती हो ? हमारी माया से उसी बूँद मे से हम ऐसे भूत-पिशाच पैदा कर देगे कि मैकवैथ उनके धोखे मे आकर पूरी तरह चकरा जायेगा। उन्हे देखकर वह अपनी तकदीर कोसने लगेगा और मौत से नफरत करेगा, यहाँ तक कि जहाँ उसकी समझ भी नही पहुँच सकती और न अपने को उसके लिये स्वाभाविक रूप से समर्थ समझेगा, वहाँ तक भी वह अपने इरादे वनायेगा। एक वार तो उसके हृदय में जितना भी डर है उसकी सीमा भी पार करके अपनी महत्त्वाकाक्षाएँ वनाने लगेगा। फिर तुम यह अच्छी तरह जानती ही हो, धोखे मे किया विश्वास आदमी का सबसे वडा दुश्मन होता है।

[अन्दर संगीत की ध्वनि। एक गीत।]

आओ चलें दूर।
आओ चलें दूर॥...

वह सुनो, मुझे वुलाया जा रहा है। मेरी वह छोटी-सी डाइन उस वादल मे वैठी मेरी वाट जोह रही है।

[जाती है।]

पहली डाइन : आओ, चलो जल्दी करें। हिकेट तो जल्दी ही वापिस आ जायेंगी।

[जाती है।]

दृश्य ६

[फॉरेस । राजमहल]

[लैनोक्स तथा एक दूसरे सरदार का प्रवेश]

लैनोक्स : मेरी पहली बातो का तुम्हारे ऊपर कुछ असर हुआ है न ? यो कहो, अगर हम उन बातो पर और गहराई से सोचें तो न जाने और क्या-क्या भेद खुल सकते है। मै सिर्फ इतना ही अब कहता हूँ कि सारे षड्यन्त्र की किसी अजीब तरह से व्यवस्था की गई है। महान डकन की मौत पर मैकबैथ ने आंसू बहाये थे न ? अच्छा, वह तो किसी और ने मार दिया, पर बहादुर बैंको ? वह जगल में देर तक घूमता रह गया था जिसके लिये तुम चाहो तो कह सकते हो न; कि फ्लीन्स ने उसे मार डाला ? इसीलिये कि फ्लीन्स भाग क्यो गया ? अब आगे सबको इससे सतर्क रहना चाहिये कि वे अधिक देर तक जंगल मे बाहर अकेले घूमते न रहे। और इससे भी आगे मैलकॉम और डोनलबेन ने अपने ही बाप का खून कर डाला। सब यही सोचेंगे कि कैसा नीच, शैतानों का-सा काम है। कोई कल्पना तक नही कर सकता। और तुमने देखा नही, मैकबैथ को बहुत दुख हुआ था इस पर ? इसीलिये तो अपनी स्वामी-भक्ति के आवेश मे आकर उसने उन शराब के नशे मे चूर हुए दोनो हत्यारों को इस दुनिया मे जिन्दा नही रहने दिया। खुद अपनी तलवार से ही उन्हे मार डाला। क्या ठीक काम नही किया उसने ? ठीक, यही तो बुद्धिमानी का काम था। क्योंकि तुम ही सोचो, जब वे पहरेदार यह कह कर चिल्लाते कि हमने सम्राट का खून नही किया है तो फिर कौन ऐसा है इस जमीन पर जिसका खून उबाल नही खाता ? इसी से मैं कहता हूँ कि मैकबैथ बहुत ही समझदार है, उसने जो कुछ भी किया है वह सब ठीक किया है। मै तो यहां तक भी

सोचता हूँ कि अगर भगवान न करे, डकन के वे दोनो पुत्र उसके कही हाथ आ जाये तो फिर वह उनको भी वह मजा चखाये कि वे भी जान जाये कि बाप के खून से हाथ धोना क्या होता है और इसी तरह फ्लीन्स भी ।

लेकिन, हाँ, छोडो इन सब बातो को । सुनने मे आया है कि मैकडफ ने कुछ साफ-साफ उस मैकबैथ को सुना दिया था और उसकी दावत मे भी वह शामिल नही हुआ था, इसीलिये उसकी तरफ इस चाडाल की भौहे कुछ खिच गई है । साथी ! क्या तुम मुझे यह बता सकते हो कि इस समय मैकडफ कहाँ होगा ?

सरदार : सम्राट का एक पुत्र मैलकॉम तो, जिससे इस चाण्डाल दुष्ट ने उसका जन्माधिकार छीन लिया है, अब इङ्गलैण्ड के सम्राट एडवर्ड की शरण में जाकर रह रहा है । देवताओ के-से गुण वाले उस सम्राट ने इस सहृदयता के साथ उसका अपने यहाँ स्वागत किया है कि चाहे राजकुमार दुर्भाग्य का मारा है पर उसके यहाँ उसके सम्मान में कोई अन्तर नही आया है । मैकडफ उसी पवित्र हृदय वाले सम्राट से यह प्रार्थना करने गया है कि वह मैलकॉम की सहायता के लिये नार्दम्बरलैंड के अर्ल तथा वीर सिवार्ड को भेज दे ताकि उन सबकी सहायता से और फिर सबसे बडी न्याय की दृष्टि रखने वाले उस परमात्मा की कृपा से हम फिर अपने घरो मे बैठ कर चैन से खाना खा सके और रात में बिना किसी खतरे के निश्चिन्त सो सके । हमे वहाँ इसका डर न रहे कि कोई हमारी रोटियो मे जहर मिला रहा है या दावतो के मौको पर हमारे पेट मे न जाने कब कोई कटार भोंक देगा ।

वह इसीलिये गया है कि राजकुमार मैलकॉम जो हमारे सच्चे सम्राट है उन्हें यहाँ ले आकर किसी तरह राजगद्दी पर बिठा

दृश्य ६

[फॉरेस । राजमह

[लैनोक्स तथा एक दूसरे सरद

नोक्स : मेरी पहली वातो का तुम्हारे ऊ
यो कहो, अगर हम उन वातो पर और
और क्या-क्या भेद खुल सकते है। मै
हूँ कि सारे षड्यन्त्र की किसी अजीव
महान डकन की मौत पर मैकवैथ ने
वह तो किसी और ने मार दिया, पर वहा
तक घूमता रह गया था जिसके लिये तु
न, कि फ्लीन्स ने उसे मार डाला ? इसी
गया ? अव आगे सबको इससे सतर्क रह
देर तक जगल मे वाहर अकेले घूमते न र
मैलकॉम और डोनलवेन ने अपने ही बाप
यही सोचेगे कि कैसा नीच, शैतानो का-स
तक नही कर सकता। और तुमने देखा न
हुआ था इस पर ? इसीलिये तो अपनी स्व
आकर उसने उन शराव के नशे मे चूर हुए
दुनिया मे जिन्दा नही रहने दिया। खुद अप
मार डाला। क्या ठीक काम नही किया
वुद्धिमानी का काम था। क्योकि तुम ही सोच
कह कर चिल्लाते कि हमने सम्राट का खू
फिर कौन ऐसा है इस ज़मीन पर जिसका खू
इसी से मै कहता हूँ कि मैकवैथ वहुत ही स
कुछ भी किया है वह सब ठीक किया है।

चौथा अंक

दृश्य १

[एक गुफा । बीच में एक उबलता हुआ बर्तन । कड़क के साथ बादलो का गरजन । तीनो डाइनो का प्रवेश]

पहली डाइन : तुमने सुना ? तीन बार उस चितकबरी बिल्ली ने म्याऊँ-म्याऊँ की है ।

दूसरी डाइन : हाँ, हाँ, झाडी का सूअर भी चार बार चिल्ला चुका है ।

तीसरी डाइन : हारपियर[1] भी बराबर यही चिल्ला रही है कि—'यही समय है ! यही समय है !'

पहली डाइन : चलो इस देग के पास चले और जानवरों की इन जहरीली आँतो को इसमे डाल दे । सबसे पहले तो हमे अपनी इस जादू की देग मे उस मेढक को उबालना चाहिये जो पूरे ३१ दिन तक किसी ठडे पत्थर के नीचे छिपा हुआ जहर छोडता रहा हो और सिर्फ सोते समय ही पकडा गया हो ।

सभी : ठीक है ! ओ आग जलो ! ओ जादू की देग उबलो ! बस अब हम मैकबैथ को दूनी महनत से परेशान करेगे ।

दूसरी डाइन : इस देग मे उबलने के लिये किसी दलदल से पकडे हुए साँप को भी काट कर डाल दो । उसके अलावा गोह की आँखे, मेढक

---

१. Harpier—एक औरत का चेहरा और शरीर तथा किसी पक्षी के-से पंख और पजे रखने वाला एक प्राणी । जैसे पहले प्रथम दृश्य में ही ग्रैमाल्किन और पैडोक आते हैं उसी तरह यह भी डाइनो की जादू की शक्ति (Spirit) है ।

का अँगूठा, चमगादड के वाल, कुत्ते की जीभ, सांप की कांटेदार जीभ, अंधे कीडे का डक, छिपकली का ओठ, और उल्लू का पंख लो और इन सबको नरक के उबलते कढाव जैसी इस जादू की देग मे उवलने के लिये डाल दो और फिर देखो, कितना वडे से वड़ा तूफान, वडी से वडी आफत खड़ी की जा सकती है।

सभी : ठीक है ! ओ आग जलो ! ओ जादू की देग जल्दी उवलो ! वस अव हम मैकवैथ को दूनी महनत से परेशान करेंगे।

तीसरी डाइन : अभी इस रस को गाढा वनाने के लिये देग में यह चीज़े और डालनी चाहिये जैसे अजगर की कैंचुली, भेड़िये का दांत, मरी जादूगरनी का सूखा शरीर, काले रग के समुद्री कीडे का पेट और गला, अधेरे मे खोदे गये जहरीले पौधे की जड, ईसा की वुराई करने वाले पाखण्डी यहूदी का जिगर, वकरी का पित्त, हमेशा हरे रहने वाले पेड़ की केवल चन्द्रग्रहण के समय कटी हुई डालियां, किसी तुर्क की नाक, तातार का ओठ, किसी कुलटा के उस वच्चे की उँगलियां जिसको पाप से उसने खाई के किनारे जन्मा हो और वही गला घोट कर मार डाला हो। इसके अलावा किसी चीते की अतड़ियां इस सवमे और मिला दो।

सभी : ठीक है, ओ आग ! जलो और हे जादू की देग ! जल्दी से उवलो ! अव तो हम मैकवैथ को दूनी महनत से तग करेंगे।

दूसरी डाइन : इतना सव करके इस उवलते रस को किसी लगूर के खून से ठंडा कर लो वस, हो गया अपना जादू पक्का और अच्छा।

[हिकेट का दूसरी तीनों डाइनों के पास प्रवेश]

हिकेट : शावाम ! वहुत अच्छा, जो महनत तुम लोगो ने इस रस को तैय्यार करने में की है उसकी मै तारीफ करती हूँ। अव सुनो, इस जादू के रस से जो कुछ भी फायदा होगा उसमें हर एक का

हिस्सा रहेगा।

अब सब मिल कर चूल्हे पर चढी इस जादू की देग के चारों ओर घेरा बनाकर परियो की तरह नाचो और गाओ और जिन-जिन को भी तुमने इस रस मे डाला है उन सबको खूब अपने गाने से खुश करो।

[वे सभी गाती हैं। 'काली छायाओ' इत्यादि। हिकेट वापिस चली जाती है।]

दूसरी डाइन : सुनो बहिन, मेरे अँगूठे मे कुछ खुजली-सी मच रही है, मुझे लगता है कोई न कोई आफत या तूफान आने वाला है।

[कोई दरवाजा खटखटाता है।]

ओ तालो ! खुल जाओ।

चाहे कोई भी खटखटाये ॥

[मैकबैथ का प्रवेश]

मैकबैथ : कौन हो तुम ओ काली बदसूरत चुड़ैलो ! इस तरह छिप कर इस आधी रात के समय तुम क्या करने जा रही हो ?

सभी : वह काम जिसका कोई नाम नही बताया जा सकता।

मैकबैथ : ठहरो, मै उस जादू के नाम पर जिसकी तुम खूब हामी भरती हो और जो चाहे कही से भी तुमने सीखा हो, कुछ तुमसे पूछना चाहता हूँ। मुझे जवाब दो। चाहे तुम अपने हाथो मे ही ये आंधियाँ छोड़ती हो, जो गिरजाघरों की चोटियो से जाकर टकराती है, चाहे समुद्र की उन झागदार बड़ी-बड़ी लहरो से भँवर मे फँसे हुए कितने ही जहाज डूब जायें, चाहे अनाज के पौधे टूट-टूटकर जमीन मे मिल जाये और पेड़ हवा से उखड़ कर उड़ जायें, चाहे बड़े-बड़े महल और किले टूट कर अपने मालिकों के ऊपर ही गिर जाये, चाहे राजमहल स्वयं और उसके साथ बड़ी-बड़ी मीनारें

का अँगूठा, चमगादड के बाल, कुत्ते की जीभ, साँप की काँटेदार जीभ, अंधे कीडे का डक, छिपकली का ओठ, और उल्लू का पख लो और इन सबको नरक के उबलते कढाव जैसी इस जादू की देग मे उबलने के लिये डाल दो और फिर देखो, कितना बडे से बडा तूफान, बडी से बडी आफत खड़ी की जा सकती है।

सभी : ठीक है ! ओ आग जलो ! ओ जादू की देग जल्दी उबलो ! बस अब हम मैकबैथ को दूनी महनत से परेशान करेगे।

तीसरी डाइन : अभी इस रस को गाढा बनाने के लिये देग मे यह चीजें और डालनी चाहिये जैसे अजगर की केंचुली, भेडिये का दाँत, मरी जादूगरनी का सूखा शरीर, काले रग के समुद्री कीडे का पेट और गला, अधेरे मे खोदे गये जहरीले पौधे की जड़, ईसा की बुराई करने वाले पाखण्डी यहूदी का जिगर, बकरी का पित्त, हमेशा हरे रहने वाले पेड की केवल चन्द्रग्रहण के समय कटी हुई डालियाँ, किसी तुर्क की नाक, तातार का ओठ, किसी कुलटा के उस बच्चे की उँगलियाँ जिसको पाप से उसने खाई के किनारे जन्मा हो और वही गला घोट कर मार डाला हो। इसके अलावा किसी चीते की अतडियाँ इस सबमे और मिला दो।

सभी : ठीक है, ओ आग ! जलो और हे जादू की देग ! जल्दी से उबलो ! अब तो हम मैकबैथ को दूनी महनत से तंग करेंगे।

दूसरी डाइन : इतना सब करके इस उबलते रस को किसी लगूर के खून से ठंडा कर लो बस, हो गया अपना जादू पक्का और अच्छा।

[हिकेट का दूसरी तीनो डाइनो के पास प्रवेश]

हिकेट : शाबास ! बहुत अच्छा, जो महनत तुम लोगो ने इस रस को तैय्यार करने मे की है उसकी मै तारीफ करती हूँ। अब सुनो, इस जादू के रस से जो कुछ भी फायदा होगा उसमे हर एक का

हिस्सा रहेगा।

अब सब मिल कर चूल्हे पर चढी इस जादू की देग के चारो ओर घेरा बनाकर परियो की तरह नाचो और गाओ और जिन-जिन को भी तुमने इस रस मे डाला है उन सबको खूब अपने गाने से खुश करो।

[वे सभी गाती हैं। 'काली छायाओ' इत्यादि। हिकेट वापिस चली जाती है।]

दूसरी डाइन . सुनो बहिन, मेरे अँगूठे मे कुछ खुजली-सी मच रही है, मुझे लगता है कोई न कोई आफत या तूफान आने वाला है।

[कोई दरवाजा खटखटाता है।]

ओ तालो ! खुल जाओ।

चाहे कोई भी खटखटाये ॥

[मैकवैथ का प्रवेश]

मैकवैथ : कौन हो तुम ओ काली बदसूरत चुडैलो ! इस तरह छिप कर इस आधी रात के समय तुम क्या करने जा रही हो ?

सभी : वह काम जिसका कोई नाम नही बताया जा सकता।

मैकवैथ : ठहरो, मैं उस जादू के नाम पर जिसकी तुम खूब हामी भरती हो और जो चाहे कही से भी तुमने सीखा हो, कुछ तुमसे पूछना चाहता हूँ। मुझे जवाब दो। चाहे तुम अपने हाथों से ही ये आंधियां छोड़ती हो, जो गिरजाघरो की चोटियों से जाकर टकराती है, चाहे समुद्र की उन झागदार बडी-बड़ी लहरो से भँवर मे फँसे हुए कितने ही जहाज डूब जाये, चाहे अनाज के पौधे टूट-टूटकर जमीन मे मिल जाये और पेड हवा ने उखड कर उड जाये, चाहे बड़े-बडे महल और किले टूट कर अपने मालिकों के ऊपर ही गिर जाये; चाहे राजमहल स्वयं और उसके साथ बडी-बड़ी मीनारें

की चोटियाँ खण्ड-खण्ड हो कर जमीन पर गिर पडे, मै कहता हूँ प्रकृति के जितने भी लाभदायक जीव-जन्तु है वे एक साथ क्यो न खत्म हो जाये, फिर भी जब तक यह प्रलय की आँधी स्वयं ही थक कर न बैठ जाये तब तक जो कुछ भी मै पूछूँ उसका जवाब दो।

पहली डाइन : बोलो।

दूसरी डाइन : माँगो क्या चाहते हो।

तीसरी डाइन : हम अवश्य उत्तर देगे।

पहली डाइन : पर बोलो, तुम सब कुछ हमारे ही मुँह से सुनना चाहते हो या हमे भी सिखाने वालियो के मुँह से ?

मैकबैथ . बुलाओ उन्हे। मै उन्हे देखना चाहता हूँ।

पहली डाइन : अच्छा, तो बहिन! इस देग मे उस सुअरनी का खून और डाल दो जिसने अपने नौ बेटो को मार कर खा लिया हो और सुनो, जल्लादो के उस पत्थर से जहाँ वे अपराधियो की गरदन काटते है जो भी चरबी बह कर आई हो उसे आग मे डाल दो।

सभी : आओ, ओ पिशाच-पिशाचिनियो! ऊपर आकाश मे या नीचे पृथ्वी पर जहाँ कही भी तुम हो वहा से आ जाओ और आकर अपना प्रताप दिखाओ।

[एक साथ जोर से बिजली कडकती है। पहला पिशाच : एक हथियार बन्द सिर]

मैकबैथ : ओ अज्ञात शक्ति! मुझे बता।

पहली डाइन : तू कुछ न बोल मैकबैथ! वह तेरे मन की बात जानता है। तू सिर्फ उसकी बात सुन।

पहला पिशाच : मैकबैथ! मैकबैथ! मैकबैथ! खबरदार रहना मैकडफ

से। होशियार, उस फाइफ के थेन से। बस इतना ही कहना काफी है। अब मुझे जाने दे।

[पिशाच जाता है।]

मैकबैथ : धन्यवाद! ओ अज्ञात शक्ति! चाहे तू कोई भी क्यो न हो पर मुझे यह चेतावनी देने के लिये मै तुझे धन्यवाद देता हूँ। तूने ठीक मेरे डर को पहचान लिया है। पर ठहर, एक बात और सुन।

पहली डाइन : उस पर इस तरह से आज्ञा नही चला सकता मैकबैथ! ले उससे भी विकराल दूसरा पिशाच आ रहा है।

[फिर एक साथ जोर से बिजली कडकती है। दूसरा पिशाच एक खून से सने हुए बच्चे के रूप में आता है।]

दूसरा पिशाच : मैकबैथ! मैकबैथ! मैकबैथ!

मैकबैथ : अगर मेरे तीन कान होते तो उन तीनो से मै तेरी बात सुनता।

दूसरा पिशाच : खून से खेलने वाले, बहादुर, और अपने इरादे मे मज़बूत बनो मैकबैथ! संसार में आदमी की जितनी भी ताकत है उसे अपने पैरो तले कुचल डालो क्योंकि औरत की कोख से जन्मा कोई भी आदमी तेरा कुछ नही बिगाड़ सकता।

[पिशाच जाता है।]

मैकबैथ : तब फिर चाहे जिन्दा रह ओ मैकडफ! तुझसे अब मुझे किस बात का डर है? लेकिन फिर भी मैं अभी कही हुई इस बात को दूनी तरह से पक्का क्यो न कर लूं और तकदीर से पूरी तरह यह वायदा क्यो न करा लूं कि जो कुछ भी कहा गया है वह सब ठीक हो कर ही रहेगा। तो फिर तू जिन्दा नहीं रह सकता मैक-डफ! जिससे जब कभी भी वह डरपोक भय मेरे हृदय में आकर

मुझे परेशान करेगा तो मैं कहूँगा—झूठा है तू और फिर तूफानों में भी चैन की नीद सो सकूंगा।

[फिर एक साथ जोर से बिजली कड़कती है। मुकुट पहने हुए एक बच्चा आता है। जिसके हाथ में एक पेड़ है।]

मैकबैथ : क्या है ?

यह किसी राजकुमार की तरह लगने वाला कौन है जो अपने सिर पर राजमुकुट पहने हुए है जिससे सुनहरी दानो की एक गोल लडी उसकी भौंहो तक लटक रही है ?

सभी : उससे कुछ मत बोलो मैकबैथ ! सिर्फ उसकी बात सुनो।

तीसरा पिशाच : शेर की तरह बहादुर और गर्वीला बन और मत परवाह कर कि कौन राज्य मे दुःखी है, कौन नाराज है या कौन तेरे खिलाफ षडयन्त्र रच रहा है। मैकबैथ को तब तक कोई नही गिरा सकता जब तक बरनम का वह विशाल वन उस ऊँची डन्सीनेन पहाडी तक आकर उससे टकरा न जाये।

मैकबैथ : जो कभी भी नही हो सकता। क्या कोई एक वन को इस तरह अपने काबू मे ले सकता है ? क्या कोई पेडो को यह आज्ञा दे सकता है कि अपनी जडो से उखड कर चलो ? कोई नही। तब ओ मीठी भविष्यवाणी ! बहुत अच्छा। तब ओ बगावत के उठते हुए सिर ! झुक जा नीचे, झुक जा, उस समय तक जब तक बरनम का वह विशाल वन स्वय बगावत करने न खडा हो जाय। महान मैकबैथ उतने ही दिनों तक जीवित रहेगा जितना भाग्य ने उसके लिये पहले तय किया था और मौत आयेगी भी तो उसी तरह स्वाभाविक रूप से आयेगी जैसे और सभी साधारण प्राणियों को आती है।

लेकिन, फिर भी मेरा दिल एक बात जानने के लिये धड़क रहा

है। अपनी करामात से तू इतना बता सकता है तो बता कि क्या वेंको का पुत्र कभी भी इस साम्राज्य पर शासन करेगा ?

सभी : अधिक जानने की इच्छा मत कर मैकबैथ !

मैकबैथ : नहीं, मुझे इसका जवाब मिलना ही चाहिये, नहीं अगर तू मुझे नहीं बतायेगा तो हमेशा-हमेशा के लिये तू शाप से जलता रहेगा। बता मुझे। बता · है ! यह देग यहाँ से कहाँ लुप्त हो गई ? क्या कोलाहल मच रहा है यह ?

[शहनाइयाँ बजती हैं।]

पहली डाइन : दिखा दो उसे।

दूसरी डाइन : दिखा दो उसे।

तीसरी डाइन : दिखा दो उसे।

सभी : दिखा दो यह सब उसे। होने दो दुःखी उसे। छाया बन कर आओ और उसी तरह चले जाओ।

[आठ सम्राटों का एक प्रदर्शन। अन्तिम सम्राट अपने हाथ में एक गिलास लिये हुए है। वेंको की प्रेतात्मा पीछे से चल रही है।]

मैकबैथ : कौन है तू ? तू भी वेंको की प्रेतात्मा से मिलता हुआ है, चला जा, मेरे सामने से। तेरे सिर पर रखा हुआ यह ताज मेरी आँखों को गरम लोहे की सलाखों की तरह जला रहा है। और तेरे उन बालों पर ओ दूसरे सम्राट ! जो यह सुनहरा ताज रखा हुआ है वह ठीक पहले सम्राट का-सा ही है। तीसरा भी उसी पहले की तरह है, तो क्यों मुझे यह सब कुछ दिखा रही हो ओ काली-कलूटी चुड़ैलो ? पर फिर ·· चौथा सम्राट ? ओ, अच्छा हो कि मेरी आँखें मेरे सिर में से निकल पड़ें। क्या ! क्या यह पंक्ति प्रलय के आखिरी दिन तक इसी तरह बढ़ती चली जायेगी ? हैं ! फिर एक दूसरा ? वह सातवाँ सम्राट ! नहीं, नहीं देखूँगा अब और अधिक

में। पर फिर ! फिर यह आठवाँ सम्राट ? आ रहा है वह। उसके हाथ मे जो गिलास है उसमे मुझे और भी न जाने कितने दिखाई दे रहे हैं। कुछ को तो मैं अपनी आँखो से देख रहा हूँ। वह देखो, वे दो-दो चक्र और तीन-तीन राजदण्ड ले कर जा रहे है। ओ, भयानक ! भयानक ! अब मै देख रहा हूँ कि यह सब सत्य है क्योंकि खून मे भीगा हुआ बैंको मेरे ऊपर हँस रहा है और उनकी तरफ इशारा करके बता रहा है मुझे कि मैकवैथ ! ये हैं मेरे पुत्र और पौत्र।

[पिशाच चले जाते हैं।]

क्या ! क्या आखिर यही होगा ?

पहली डाइन : हाँ, सब ऐसा ही होगा। लेकिन मैकवैथ ! तू इससे इतनी चिन्ता और आश्चर्य्य मे क्यो पड़ा हुआ है ? आओ बहनो ! चल कर हम उसे अच्छे-अच्छे खेल दिखाये और खुश करे। मैं तो हवा पर वह जादू कर दूँगी कि उससे संगीत के स्वर निकलेंगे और तुम अपना वही पुराना नाच नाचना जिससे यह महान सम्राट आभारी हो कर कह दे कि उसका स्वागत करके उसके प्रति अपने कर्त्तव्य का भली भाँति पालन किया है।

[गाना। डाइनें नाचती हैं और फिर हिकेट के साथ लुप्त हो जाती हैं।]

मैकवैथ : कहाँ गईं वे ? क्या चली गईं ? ओ अच्छा हो कि पाप से भरा हुआ यह दिन हमेशा अभिशाप की आग से जलता रहे।
कौन है बाहर ? अन्दर आओ।

[लैनोक्स का प्रवेश]

लैनोक्स : सम्राट की क्या आज्ञा है ?

मैकवैथ : क्या तुमने उन डाइन बहिनो को कहीं देखा ?

लैनोक्स : नहीं तो, मेरे स्वामी !

मैकबैथ : क्या वे तुम्हारे पास हो कर नही गई ?

लैनोक्स : बिलकुल नही, मेरे स्वामी !

मैकबैथ : ओह ! भगवान करे कि जिधर से भी वे उड कर जाये उधर से ही हवा पूरी तरह ज़हरीली हो जाय और जो भी उनकी बातों पर भरोसा करते है वे उनसे भी पहले मिट जाये। क्यो ! मुझे अभी कुछ घोडे की टापे सुनाई दी थी। कौन इधर हो कर आया था ?

लैनोक्स : वही दो या तीन दूत हैं स्वामी ! जो आपको यह खबर देने आये है कि मैकडफ इङ्गलैण्ड भाग गया है।

मैकबैथ : इङ्गलैण्ड भाग गया !

लैनोक्स : जी हां, मेरे श्रेष्ठ स्वामी !

मैकबैथ : (स्वगत) ओ वक़्त ! तू मुझसे भी आगे भाग रहा है और मेरे इरादो को पूरा होने मे रोक रहा है। ठीक है, जब तक इरादे बनने के साथ-साथ ही पूरे नही किये जायेगे तब तक ऐसी ही लापरवाही मे सब कुछ बिगडता जायेगा। मैं इस क्षण से प्रण लेता हूं कि ज्योही मेरे हृदय मे कोई उबाल आयेगा उसी क्षण वह काम मेरे हाथ से पूरा होगा। और अब जितने भी मेरे इरादे है उन्हें मैं पूरा करके ही रहूँगा। इधर सोचूंगा और उधर उसी पल काम पूरा हो कर रहेगा। मैं मैकडफ के महल पर अचानक छापा मारूँगा और उस फाइफ को दाब लूंगा। उसकी औरत और बच्चों को और जो कोई भी अभागा उसके वंश मे होगा उन सबके गले के आर-पार मेरी तलवार की नोक होगी। बढ़-बढ़ कर बातें करने से तो क्या फायदा है पर मैं कहता हूं कि अपने इरादो की आग ठंडी पडने से पहले मैं अवश्य यह काम पूरा करूँगा।

बस, अब मैं और कुछ देखना नही चाहता। अरे ! हाँ, कहाँ है वे

दूत । चलो, मुझे उनके पास ले चलो ।

[जाते हैं ।]

दृश्य २

[मैकडफ का महल । लेडी मैकडफ, उसके पुत्र तथा रौस का प्रवेश]

लेडी मैकडफ : क्यो देश छोड कर भाग गये वे ? आखिर ऐसा क्या किया था उन्होने ?

रौस : धीरज रखिये, देवी !

लेडी मैकडफ : उन्होने ही धीरज क्यो न रखा ? उन्होने यह पागलो का-सा काम किया है । अब तुम्ही सोचो, अगर हमारे कार्य्यो से नही तो इस तरह हमारे डर से हम अवश्य विश्वासघाती समझे जायंगे।

रौस : आप अभी यह नही जानती देवी ! कि उनका इस तरह भाग जाना उनकी बुद्धिमानी है या केवल डर है !

लेडी मैकडफ : बुद्धिमानी ? क्या यही बुद्धिमानी है कि ऐसी जगह पर जहाँ से उन्हे खुद भागना पड़ा अपनी स्त्री, नन्हे-नन्हे बच्चो, सारी सम्पत्ति, घर और सम्मान को छोड जाये ? उन्हे हमसे कोई प्रेम नही है । मै कहती हूँ, हमारे प्रति उनके हृदय का स्वाभाविक प्रेम पूरी तरह मर चुका है। देखो तो, एक छोटी से छोटी गरीब चिड़िया भी अपने बच्चो को उल्लू के खूंख्वार पजे से किसी तरह दूर ही रखती है, उनकी हर तरह रखवाली करती है। और कुछ भी नही, यह सब उनका डर है । उनके हृदय मे प्रेम नही है । तुम्ही बताओ, क्या बुद्धिमानी है उनके इस तरह भाग जाने मे । मुझे तो कोई भी कारण समझ मे नही आता ।

रौस : नहीं, मेरी प्यारी बहिन ! मै प्रार्थना करता हूँ, थोड़ा अपने आपको सँभालिये । आपके पति ऐसे नही है। मैं सच कहता हूँ, वे

बहुत ही बुद्धिमान, और महान है और इस-समय की क्रूर गति को सबसे अच्छी तरह पहचानते है। बस उससे आगे कुछ कहने की मेरी हिम्मत नही होती लेकिन इतना अवश्य कहूँगा कि समय वही सबसे बुरा और दुर्भाग्यपूर्ण होता है जब हम विश्वासघाती होते हुए भी यह नही जानते कि हम क्या है, जब कि जो इधर-उधर अफ-वाहे उडती हैं उन्हे सुन कर डरने लगते है और फिर भी यह नही जानते कि हम डर किससे रहे है और सन्देह तथा चिन्ता की उठती लहरो मे इधर-उधर मारे-मारे फिकते रहते हैं।

अच्छा, अब मुझे आज्ञा दीजिये। कुछ ही क्षणो मे फिर मै आपके पास आ जाऊँगा। यह समझ लो, कि जो भी खतरे से भरा हुआ काला वक़्त अब चल रहा है, वह या तो खतम हो ही जायेगा और अगर नही हुआ तो फिर और भी ज्यादा खतरनाक हो जायेगा। और भी काला हो जायेगा। बस भगवान आपको सुखी रखे, यही मेरी कामना है मेरी प्यारी बहिन!

लेडी मैकडफ : अपने पिता के जीवित रहते हुए भी मेरे यह लाल आज अनाथ जैसे हो गये है।

रौस : अच्छा, अब अगर अधिक देर तक मै यहाँ ठहरूँगा तो स्वयं मूर्ख बन जाऊँगा। कब तक हृदय के इस दु ख को अन्दर ही अन्दर छिपाता रहूँगा? नही, इससे मेरे पौरुष पर धब्बा लगेगा और तुम्हे भी और अधिक दुख होगा बहिन! इसलिये, बस, अब मैं तुरन्त यहाँ से जाना चाहता हूँ। अलविदा!

[जाता है।]

[लेडी मैकडफ अपने पुत्र से बातें करती है।]

लेडी मैकडफ : बेटा! तुम्हारे पिता तो इस ससार से चल बसे। अब

क्या करोगे तुम ? किस तरह अपने जीवन के दिन बिताओगे बेटा ?

पुत्र : जैसे भगवान की इस दुनिया मे और पक्षी अपने जीवन के दिन बिताते है वैसे ही मै बिताऊँगा माँ !

लेडी मैकडफ : क्या, कीडे-मकोडो के साथ ?

पुत्र : मेरा मतलब है माँ ! कि जो कुछ भी भगवान मुझे देगा उसी से मै अपना जीवन बिताऊँगा। पक्षी इसी तरह तो जीवित रहते है।

लेडी मैकडफ : ओ गरीब चिडिया ! तुझे किसी जाल या गड्ढे मे फसने से डर नही लगता ?

पुत्र : क्यों डरूँ माँ ? क्या ये जाल या गड्ढे बेचारी गरीब चिडियाओं के लिये ही बनाये गये है ? तुम चाहे कितना भी कहो पर मै जानता हूँ कि मेरे पिता अभी जीवित है।

लेडी मैकडफ : नही बेटा ! मै सच कहती हूँ वे मर गये। अब बताओ, बिना पिता के तुम इस दुनिया मे कैसे रहोगे ?

पुत्र : बिना पिता के तुम कैसे रहोगी माँ ?

लेडी मैकडफ : क्यो, मेरा क्या, मै तो किसी बाज़ार से बीसों पति खरीद सकती हूँ।

पुत्र : तो फिर उन्हे फिर बेचने के लिये ही खरीदोगी न माँ ?

लेडी मैकडफ : अरे, तुम तो अपनी पूरी अक्ल लगा कर जवाब दे रहे हो। फिर भी ठीक इतनी ही अक्ल तुम्हारे लिये पर्याप्त भी है।

पुत्र : क्यो माँ ? क्या मेरे पिता कोई विश्वासघाती थे ?

लेडी मैकडफ : हाँ, वे विश्वासघाती थे बेटा !

पुत्र : विश्वासघाती कौन होता है माँ ?

लेडी मैकडफ : वही जो वचन दे कर उसी के विरुद्ध कार्य्य करता है।

पुत्र : क्या ऐसा करने वाले सभी विश्वासघाती होते है माँ ?

लेडी मैकडफ़ : हाँ, ऐसे विश्वासघाती होते है और उन्हे तो फाँसी के तख्ते पर लटका देना चाहिये बेटा!

पुत्र : और उन सबो को भी माँ! जो अपना ईमान उठाते हुए झूठ बोलते है?

लेडी मैकडफ़ हर एक को।

पुत्र : पर कौन लटकायेगा फाँसी के तख्ते पर उन्हे माँ?

लेडी मैकडफ़ : ईमानदार आदमी लटकायेगे बेटा!

पुत्र : तब तो झूठा ईमान उठाने वाले मूर्ख है माँ! क्योकि उनकी सख्या तो इतनी अधिक है कि अगर वे चाहे तो वे उलटे उन ईमानदार आदमियो को ही पीट कर फाँसी पर लटका सकते है।

लेडी मैकडफ़ : अब भगवान ही तेरी देखभाल करे मेरे छोटे-से बन्दर! लेकिन बिना पिता के तू रहेगा कैसे?

पुत्र : पर हाँ, अगर वे मर जाते तो तुम उनके लिये रोती माँ! तुम तो रोई नही इसलिये यह तो बहुत अच्छा सकेत है कि अगर वे नही तो मुझे जल्दी ही दूसरे पिता मिलने वाले है!

लेडी मैकडफ़ : ओ बातून! तू बाते कैसी अच्छी-अच्छी बनाना सीख गया है।

[एक दूत का प्रवेश]

दूत : भगवान आपको बचाए ओ देवी! आप मुझे नही जानती यद्यपि आपके उच्चपद के कारण मै आपको अच्छी तरह जानता हूँ। मुझे डर है कि कोई खतरा जल्दी ही आपके सिर पर आने वाला है। अगर आप एक सीधे और सच्चे आदमी की सलाह माने तो यहाँ अब एक पल भी मत रहिये देवी! फौरन अपने बच्चो को ले कर अपनी जीवन-रक्षा के लिये यहाँ से भाग जाइये। मौत आ रही है देवी! भाग जाओ यहाँ से। हाँ, मै जानता हूँ कि मेरे इन शब्दो

ने आपको डराते हुए मैं आपके प्रति कठोरता का व्यवहार कर रहा हूँ लेकिन सच कह रहा हूँ देवी ! अगर मैं अब भी आपको उस खतरे की सूचना न दूं, जो ठीक आपके सिर पर आ चुका है, तो उससे भी कही अधिक मै निर्दयी हूँगा। भगवान आपकी रक्षा करे। बस अधिक देर तक यहाँ ठहरने का साहस मै नही कर सकता।

[जाता है।]

लेडी मैकडफ : कहाँ भाग कर जाऊँ मै ? मैने किसी का क्या बिगाड़ा है ? लेकिन हां, याद आया मुझे। क्यो भूल रही हूँ मैं कि मै उस अभागी दुनियाँ मे हूँ जहां किसी को नुकसान पहुँचाना ही सराहनीय कार्य्य गिना जाता है। किसी की भलाई करने के बराबर और क्या मूर्खता होगी जिससे न जाने कितने खतरे सिर पर खडे हो जाते हैं। तो फिर हाय ! मै क्यो एक अबला की तरह पुकार कर कि मैने किसी का कुछ नही बिगाड़ा है, अपनी रक्षा के लिये आशा करती हूँ ?

(चौंक कर) हैं ! कौन है ये ? कौन हो तुम ?

[हत्यारे प्रवेश करते हैं।]

हत्यारा : कहाँ है तेरा पति ?

लेडी मैकडफ : वे ऐसे किसी पाप भरे हुए स्थान पर नही हैं जहाँ तुम जैसे पापी उन्हे पा सके।

हत्यारा : वह विश्वासघाती है।

पुत्र : झूठ बोलता है तू ! तू जरूर कोई बदमाश है।

पहला हत्यारा : ओ छोटे से अण्डे ! तू ! - (बच्चे के पेट में कटार भोंकता है।) जा ओ गद्दार की औलाद !

पुत्र : माँ ! ओ माँ ! मुझे मार डाला है इनने ! तुम भाग जाओ

माँ ! मै कहता हूँ अपने जीवन के लिये यहाँ से भाग जाओ। लो मै चला।

[मरता है।]

[लेडी मैकडफ 'खून ! खून !' चिल्लाती हुई वाहर भागती है और हत्यारे उसका पीछा करते हैं।]

दृश्य ३

[इङ्गलैंड। राजमहल के सामने मैलकॉम और मैकडफ का प्रवेश]

मैलकॉम : तो चलो किसी जगह पर चले और कुछ देर वही आँसू बहा कर अपने जी का भार हलका कर ले।

मैकडफ : नही, यह क्यो ? इसकी वजाय तो क्यो नही इस खून की प्यासी तलवार को हम अपने हाथ मे ले और वहादुरो की तरह उस चाण्डाल के जुल्मो से कुचले हुए अपने दु खी देश को आजाद करे जो कि हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है। हर एक दिन जब सुबह उस स्कॉटलैड की भूमि पर सूरज अपनी आँख खोलता है तो न जाने कितनी विधवाएँ उसे अपने-अपने पतियो के शवो पर गला फाड कर रोती हुई मिलती है, न जाने कितने अनाथ वच्चे उसकी तरफ देख कर निस्सहाय से पुकार उठते है। क्या बताऊँ, हर एक दिन नये दु ख का तोफा ले कर आता है जिससे वेचारे वे गरीव लोग रात और दिन रोते-चीखते है। कहा नही जाता राजकुमार ! स्वय आकाश भी उनके इस हाहाकार को सुन कर उनकी सहानुभूति मे रो उठता है।

मैलकॉम : वस, जो कुछ भी मै सुनता हूँ उस पर पूरी तरह विश्वास करता हूँ और यही विश्वास मुझे रुलाता है। मै अवश्य मेरे उस दु खी देश

को इस दयनीय अवस्था से मुक्त करूँगा। बस किसी ठीक मौके की मुझे इन्तजार है, तुम जैसे कह रहे हो हो सकता है वही हालत वहाँ हो। जानते हो, यह चाण्डाल तो एक दिन बहुत ईमानदार और सच्चा आदमी समझा जाता था और आज जब हम उसका नाम भी लेते है तो हमारी जीभ तक जलने लगती है? तुम भी तो उसे बहुत प्यार करते थे न? तुम्हे वह अभी तक कोई आँच नही पहुँचा सका है। मैं तुमसे कहता हूँ कि मै तो अब मुसीबतों का मारा एक छोटा-सा और महत्वहीन आदमी हूँ। तुम मुझ जैसे कमजोर, गरीब और बेगुनाह आदमी को उस आग उगलते देवता की क्रोधाग्नि मे डाल कर क्यो नही कोई बुद्धिमानी का काम करते हो? इससे तुम्हे वह बहुत कुछ देगा।

मैकडफ : बस, मै विश्वासघाती नही हूँ राजकुमार!

मैलकॉम : लेकिन मैकबेथ तो है। राजा की आज्ञा के दबाव में अच्छे से अच्छे व्यक्ति भी अपने सच्चे रास्ते से डिग जाते हैं। लेकिन क्षमा करना मुझे, मै तुमसे प्रार्थना करता हूँ। जो कुछ भी तुम हो मेरे शक करने से बदल थोडे ही सकते हो। देवता आज भी उतने ही सुन्दर है चाहे उनमे से अधिकाश सुन्दर से सुन्दर नीचे गिर चुके हैं। चाहे जो चीजे बुरी और पतित है अच्छाई का रूप धारण कर लें तो भी क्या अच्छाई के रूप मे कभी कोई अन्तर आ सकता है?

मैकडफ : तब क्या मैं अपने उस दुःखी देश के लिये जो-जो आशा बना कर आया था वे हमेशा के लिये मिट गईं?

मैलकॉम : तुमने यह और क्या नादानी की कि इस जल्दी में अपने स्त्री और बच्चों को वहाँ छोड आये। इस तरह उन्हे अकेला और निस्सहाय छोड़ कर क्यों तुमने उनके प्रेम को ठुकरा दिया? जिन

स्नेह के वन्धनो मे प्रकृति ने तुम्हे एक दूसरे से बाँधा है क्यो तोड दिया उन्हे तुमने ? शायद इसीसे तुम पर मेरा शक हुआ है पर फिर भी मै तुमसे यह प्रार्थना करता हूँ कि इससे यह न समझो कि मेरे हृदय मे तुम्हारे प्रति कोई बुरी भावना पहले से है लेकिन मुझे हर समय अपने जीवन की रक्षा के विषय मे शका वनी रहती है । इससे तुम यह कभी न सोचना कि मै जो कुछ भी कह रहा हूँ इससे मेरा यह मतलब है कि तुम कोई अच्छे और सच्चे व्यक्ति नही हो ।

मैकडफ : तो फिर ओ मेरी अभागी मातृभूमि ! बहने दे इस खून को तेरे शरीर से ! सूख जाने दे अपनी एक-एक धमनी को ! ओ जुल्मो की आग ! जमा ले अपनी जड़े और भी मजबूती के साथ क्योकि मनुष्य की अच्छाई मे तुझे रोकने का साहस नही है । जलाती जा उन निस्सहाय प्राणियो को क्योकि अब तो तुझे इसका खुला अधिकार मिल चुका है ।

अच्छा मेरे स्वामी ! विदा ! जैसा तुम सोचते हो वैसा नीच मै नही हूँ और न हो सकता हूँ चाहे इस चाण्डाल का पूरा राज्य और इससे भी अधिक पूर्व दिशा के समृद्धशाली राज्य भी मुझे क्यो न बदले मे मिले ।

मैलकॉम : मेरी बात का बुरा न मानो । जो कुछ भी मैने तुमसे कहा है वह पूरी तरह तुम पर शक करके नही कहा है । मै जानता हूँ, हमारा देश इस समय जुल्मो के पजे के नीचे दबा हुआ हाहाकार कर रहा है । इसी से इसके निस्सहाय प्राणी नित्य रोते है, उनके शरीरो से खून बहता है और एक-एक दिन मेरे इस दु खी देश के घावो की पीड़ा वढती ही जाती है । जहाँ तक मै सोचता हूँ इससे कुछ लोग तो स्कॉटलैण्ड मे मेरा साथ देगे और इधर इङ्गलैण्ड के

उदार सम्राट ने हजारों की संख्या मे सैनिक मेरे साथ भेजने का वायदा किया है। लेकिन इस सबसे जब मै उस चाण्डाल जालिम का सिर कुचलूंगा और उसे काट कर अपनी तलवार की नोंक पर लगाऊँगा तब भी क्या यह देश जुल्मो से छुटकारा पा जायेगा? न जाने फिर भी कितने ही जुल्म इसकी जमीन पर होते रहेंगे जो शायद पहले नही हुए होगे। जो भी इसके बाद सम्राट बनेगा वह तो और भी अनेक तरह के जुल्म करके निस्सहाय प्राणियो को अधिक रुलायेगा।

मैकडफ़ : कौन होगा वह ?

मैलकॉम : मै अपनी ही बात कह रहा हूँ क्योकि मै अपने चरित्र को अच्छी तरह जानता हूँ। जितनी भी बुराइयाँ और पाप हो सकते है वे सब मुझमे इस तरह जड जमाये हुए हैं कि जब वे बाहर आयेंगे तो सब पापो से काला वह मैकवैथ भी मेरे सामने वर्फ की तरह सफेद और पवित्र चमकेगा। तब यह दुःखी देश मेरे अनगिनती जुल्मो के मुकाबले में उसे एक सीधा और नादान मेमना समझेगा।

मैकडफ : क्या ? नही ! काले से काले, डरावने असख्य नरको मे भी उस मैकवैथ जैसा पापी और चाण्डाल नही मिलेगा।

मैलकॉम : मैं मानता हूँ कि वह खून का प्यासा है, लालची है, झूठा है, धोखेबाज, दुष्ट, उतावला, ऐय्याश सब कुछ है और इसके भी अलावा जितनी बुराइयाँ हो सकती है वे सब उसमे है लेकिन मेरे स्वभाव मे जो लालच और ऐय्याशी है उसकी तो कोई थाह नही है, फिर तुम्ही बताओ, कि ऐसे आदमी के मुकाबिले मे मैकवैथ क्यों सम्राट बनने के अधिक योग्य नही है ?

मैकडफ़ : लेकिन इस तरह सीमा से बाहर अपनी इन्द्रियों को वस मे न

रखना तो अपने ऊपर अत्याचार करने के बराबर है क्योंकि इससे तो मनुष्य की सारी बुद्धि और चेतना ही मारी जाती है। यही कारण तो कितने ही राजाओ के पतन का कारण बना और इसी से कितनी ही राजगद्दियाँ समय से पहले ही सूनी हो गई। लेकिन कुछ भी हो, जो तुम्हारे अधिकार की वस्तु है उसे तुम लेने मे क्यो डरते हो ? अगर तुम फिर ऐय्याशी करना चाहते हो तो क्या छिपे रूप से नही कर सकते जिससे बाहर सभी को यही मालूम होता रहे कि सम्राट अपने चरित्र मे पूरी तरह उज्ज्वल है।

मैलकॉम : लेकिन क्या बताऊँ, इसके साथ-साथ मुझमे एक दूसरा भी तो दोष है और वह है मेरा लालच जिसकी तृप्ति कभी हो ही नही सकती। अगर मै सम्राट हो गया तो सबसे पहले मै चाहूँगा कि राज्य के सरदारो की सारी जागीरे हडप लूँ। किसी की दौलत को दबा लूँ, किसी के घर पर कब्जा कर लूँ। बस यह समझ लो, जितना अधिक मुझे मिलता जायेगा उतनी ही अधिक मेरी भूख बढती जायेगी। इससे हो सकता है कि अच्छे और राजभक्त लोगो की भी धन-दौलत मुझे अन्यायपूर्ण ढग से लूट लेनी पडे जो पूरी तरह उनकी बरबादी का कारण होगा।

मैकडफ़ : तो फिर उस बढती हुई लालच से तो इन्द्रियो के विलास की वह क्षणिक इच्छा, जो ग्रीष्म ऋतु की तरह अल्पकालीन होती है, कही कम है। यह लालच तो बहुत नीचे तक अपनी जडें जमाती है और उससे भी कही अधिक मनुष्य के लिये घातक है। यह तो उस तलवार की तरह है जिसने अनेको राजाओ को मौत के घाट उतार दिया हो और फिर भी खून की प्यासी हो। लेकिन हाँ, डरो नही फिर भी। स्कॉटलैण्ड के अन्दर किस चीज़ की कमी है जिससे तुम्हारी भूख न मिट सके। तुम्हारे स्वय के अधिकार मे ही

इतना अधिक है। तुम्हारे ये सब दोष सहन करने योग्य हैं स्वामी ! बशर्ते तुम अपने दूसरे अच्छे गुणो से इनकी पूर्ति कर लो।

मैलकॉम : लेकिन मुझमे तो कोई भी गुण नही है। एक अच्छे राजा के जो भी गुण होते है जैसे न्याय, सच्चाई, आत्मसंयम, दृढता, उदारता, धैर्य्य, दया, विनीत भाव, भक्ति, वीरता और साहस इनमे से कोई भी तो मुझमे नही है बल्कि मै तो एक ही बुराई को न जाने कितनी तरह से करता हूँ। इस तरह एक पाप के अन्दर ही अनेक पापो का भागी हूँ। अगर मेरी ताकत मे यह भी होता कि आपस के सद्भाव और सहयोग के इस मीठे दूध को नरक की उस जलती आग मे फेक दूँ और दुनिया की शान्ति और एकता को नष्ट करने के लिये एक तूफ़ान खडा कर दूँ तो मैं उसे अवश्य करता।

मैकडफ : तब ओ स्कॉटलैण्ड ! ओ मेरी निस्सहाय मातृभूमि !!

मैलकॉम : अब बोलो, अगर तुम चाहते हो कि ऐसा व्यक्ति जा कर स्कॉटलैण्ड पर राज्य करे तो चलो मै हूँ।

मैकडफ़ : नही ! नही ! राज्य करने योग्य तो क्या जीवित रहने के योग्य भी नही है ऐसा व्यक्ति। ओ मेरे दुःखी देश ! जो यह चाण्डाल इस खून से भीगे राजदण्ड को ले कर तेरे ऊपर अनधिकार रूप से राज्य कर रहा है उससे कब मुक्ति पा कर तू अपने अच्छे दिन देखेगा ? तेरा सच्चा स्वामी तो अपने चरित्र मे न जाने कितने दोष देख कर अपने जन्म पर धब्बा लगा रहा है और अपने आप को पापी और अपराधी कह रहा है।

अच्छा, मेरे स्वामी ! अलविदा ! जाता हूँ पर मैं भूला नही कि तुम्हारे पिता कितने उज्ज्वल चरित्र और उदार हृदय वाले सम्राट थे और महारानी, तुम्हारी माँ जिन्होने तुम्हे जन्म दिया है कैसी थी वे ? कितनी देर तक अपने घुटनो पर झुक कर भगवान् से

प्रार्थना किया करती थी और वह बहादुर महारानी प्रतिदिन अपनी मौत का सामना करने के लिये तैय्यार रहती थी। अच्छा, अलविदा! यह बताओ कि जो भी दोष तुम अपने चरित्र मे बता रहे हो क्या इन्ही की आशा मे मै आज स्कॉटलैण्ड से निर्वासित हो गया हूँ? बस, ओ मेरे हृदय! तेरी अब तक की बनाई सारी आशाओ का यहाँ अन्त होता है!

मैलकॉम : मेरे मैकडफ! तुम्हारे सच्चे हृदय से उत्पन्न भावो ने मेरे हृदय मे तुम्हारे प्रति पैदा हुए काले दागो को पूरी तरह धो दिया है और मुझे तुम्हारी सच्चाई पर पूरा भरोसा है। मै तुम्हारा हृदय से सम्मान करता हूँ मैकडफ! वह शैतान मैकवैथ मुझे अपने पजे मे लेने का वहुत प्रयत्न कर रहा है इसी लिये पहले पहल मुझे किसी पर भी विश्वास नही होता है और न ही मुझे करना चाहिये। लेकिन अब हम सबके ऊपर बैठा हुआ वह भगवान ही हमारे वीच है। मै अब पूरी तरह से अपने आपको तुम्हारे वताये मार्ग पर चलने के लिये छोड देता हूँ और जो भी दोषारोपण मैने अपने ऊपर किया है उसे वापिस लेता हूँ क्योकि तुम तो जानते ही हो कि इन दोषो में से मै किसी को जानता तक नही। मैने न तो अभी तक किसी स्त्री को जाना है और न कभी अपना दिया वचन ही तोडा है। दूसरे की तो क्या अपनी स्वय की वस्तुओ के लिये भी मेरे हृदय मे कभी लालच पैदा नही हुई। मै सच कहता हूँ, आज तक मैने किसी के साथ भी विश्वासघात नही किया, यहाँ तक कि स्वय शैतान के साथ भी मै विश्वासघात नही कर सकता मैकडफ! सत्य के मार्ग पर ही जितना सुख मुझे मिल सकता है वही मेरा है। मैंने अपने वारे मे ये वुरी-वुरी वाते कह कर जीवन मे पहली वार ही झूठ वोला है। वास्तव मे जो भी गुण मुझमे है उन्हे

तुम्हारे और मेरे दुःखी देश के अर्पित करता हूँ जहाँ जाने के लिये वृद्ध सेनापति सिवार्ड दस हजार सैनिको सहित तुम्हारे आने से पहले ही तैय्यार है और बस यहाँ से चलने वाले ही है। अब हम सभी एक साथ चलेगे। जैसा न्यायपूर्ण हमारे देश पर हमारा अधिकार है वैसे ही हमारी विजय के भी अच्छे आसार हैं।

क्यो! तुम चुप क्यो हो ?

मैकडफ : इतने बुरे और अच्छे भाव एक ही साथ! ओह! इन्हे आपस मे मिलाना कितना कठिन है!

[एक डाक्टर का प्रवेश]

मैलकॉम : बस, एक क्षण मे फिर इसी पर बात करेंगे। पर क्या आप यह बताने की कृपा करेंगे कि सम्राट राजमहल के बाहर आज आयेगे या नही ?

डॉक्टर : हाँ अवश्य श्रीमान्! बेचारे कुछ दुःखी-बीमार लोग बाहर अपने इलाज के लिये उन्ही की प्रतीक्षा मे खड़े है। बडी से बडी विद्या वाले डॉक्टर भी उनकी बीमारी को देख कर असमजस मे पड गये है लेकिन भगवान सम्राट के हाथ मे ऐसी पवित्रता दी है कि उसके छूते ही वे सब अच्छे हो जाते हैं।

मैलकॉम : मेरी ओर से आपको धन्यवाद है डॉक्टर!

[डॉक्टर जाता है।]

मैकडफ़ : किसी बीमार के बारे मे कह रहे थे ये ?

मैलकॉम : इसे 'किंग्स ईविल'[1] (राजा का पाप) कहते है। पवित्र हृदय

---

१. King's Evil—गण्डमाला नाम की बीमारी। इसे 'किंग्स ईविल' (राजा का पाप) इसी लिये कह कर पुकारते हैं क्योंकि इंगलैण्ड में यह अन्ध-विश्वास चला आ रहा था कि राजा के स्पर्श करने मात्र से ही यह बीमारी ठीक हो जाती है। इसका वर्णन करके हो सकता है शेक्सपियर 'सम्राट जेम्स' को उच्च सम्मान देना चाहता हो।

वाले सम्राट मे यह एक ऐसा आश्चर्य्यजनक गुण है कि जब से मै यहाँ इङ्गलैण्ड मे हूँ तभी से इन्हे ऐसा करता देख रहा हूँ। कैसे वे अपने मे यह दैवी शक्ति ले आते है इसे तो वे ही जानते है। अजीब-अजीब बीमारियो से पीडित लोग पूरी तरह सूजे हुए और पूरी तरह घावो से पके हुए उनके पास आते है। सच कहता हूँ, उन बीमारो की दयनीय अवस्था देख कर आँखो मे आँसू आ जाते है। जिनका इलाज डाक्टरी विद्या के पास नही है उनकी गरदन मे वे सोने का ताबीज बांध देते है और उस पर कुछ मन्त्र पढ कर बीमार को अच्छा कर देते है। यह भी कहा जाता है कि जो भी सम्राट होता है वह अपने उत्तराधिकारियो के लिये यह गुण अवश्य सिखा कर जाता है। इस गुण के अलावा भी न जाने कितने ही गुण सम्राट मे है जैसे भविष्य की बात बता देना आदि। कितने ही तो यहाँ तक कहते है कि सम्राट मे ईश्वरीय शक्ति पूरी तरह समाई हुई है।

[रौस का प्रवेश]

मैकडफ़ : वह देखो, कौन आ रहा है ?

मैलकॉम : यह तो मेरा कोई देशवासी लगता है पर फिर भी इसे मै जानता तो नही हूँ।

मैकडफ़ : ओ, आओ मेरे प्यारे भाई! स्वागत है।

मैलकॉम : अब मै इसे पहचान गया। हे भगवान! तुमने कितने ठीक समय पर उन सब कारणो को दूर कर दिया जिनसे हम एक दूसरे को अजीब तरह से समझे हुए थे।

रौस : आमीन! भाई!

मैकडफ़ : क्यो रौस! बताओ, क्या हमारा देश उसी तरह दुःखी है जैसा पहले था ?

रौस : हाय ! मेरे दुःखी देश ! आतंक इस हद तक बढ चुका है कि मनुष्य को अपने आपसे डर लगने लगा है। अब स्कॉटलैण्ड हमारी मातृभूमि नही रह गया। वल्कि इसे तो अब कब्रिस्तान कहना अच्छा होगा जहाँ कोई भी खुशी से मुस्कराता हुआ नहीं दिखाई दे सकता। हाँ, इस आतक के बीच वही थोडा-बहुत मुस्करा सकता है जिसे अभी कुछ भी पता न हो। अब हमारी उस मातृभूमि कहलाने वाले देश मे पल-पल पर आह और चीत्कार सुनाई देती है जिसकी तरफ कोई भी ध्यान देने वाला नही है। चारो तरफ उन्मादित-सी हो कर वेदना और हाहाकार इस तरह फिर रहा है मानो वहाँ के लिये यह स्वाभाविक हो चुका हो। मै सच कहता हूँ, निस्सहाय प्राणी मरते हैं तो उनके शवो को देख कर यह तक कोई पूछने वाला नही है कि कौन ये इस दुनिया को छोड कर चले जा रहे है। कहाँ तक कहूँ, जो अच्छे और भले आदमी है उनके जीवन का भी क्या है, अभी उनके सिर पर सम्मान के साथ खिले हुए फ़ूल रखे जाते हैं और कुछ ही क्षणों मे इससे पहले कि वे फ़ूल मुरझा कर गिर जाये उनकी गरदन ही उस चाण्डाल के हाथों कट कर जमीन पर गिर जाती है।

मैकडफ़ : मेरे प्यारे भाई ! जो कुछ भी तुम कह रहे हो वह सब ठीक है। तुम अच्छी तरह से सब कुछ वर्णन कर रहे हो।

मैलकॉम : लेकिन अभी हाल की खबर क्या है ?

रौस : स्वामी ! एक घटे पहले की भी खबर इतनी पुरानी पड़ जाती है कि कोई उस पर ध्यान तक नही देता। वहाँ तो प्रति पल नई-नई आफते आती है और प्रति पल ही नई खबरें पैदा होती हैं।

मैकडफ़ : मेरी पत्नी कैसे है ?

रौस : क्यो ! अच्छी तरह से है।

मैकडफ़ : और मेरे सभी बच्चे ?

रौस : वे भी अच्छे है।

मैकडफ़ उस चाण्डाल ने उन्हे सताया तो नही ?

रौस : नही जब मै चला था तब तक तो वे कुशलपूर्वक थे।

मैकडफ़ छिपाओ नही भाई ! मुझे लगता है कि तुम कुछ कहना चाहते हो पर अपने आपको रोक रहे हो। कहो, सच बताओ मेरे भाई ! कैसे है वे ?

रौस : अपने हृदय के दु ख को ले कर जब मै इधर आ रहा था तब एक अफवाह मेरे कानो तक उडती हुई-सी आई थी कि राज्य के बहुत से भले आदमियो ने उस दुष्ट के विरुद्ध हथियार उठा लिये है। इस बात पर मेरा विश्वास उस समय और भी पक्का हो गया जब मैंने स्वय आँखो से उस जालिम की फौजो को चलते हुए देखा। इसी समय हमारी सहायता की आवश्यकता है। अगर इस समय स्वामी ! आप स्कॉटलैण्ड पहुँच जाये तो सैनिक तो दूने उत्साह से लडेगे ही यहाँ तक कि अबला स्त्रियाँ भी अपने देश के दु ख का निवारण करने के लिये उस जालिम के खिलाफ हथियार उठा लेगी।

मैलकॉम : अच्छा, तो फिर उन्हे किसी तरह इस ख़बर से सन्तोष मिलना चाहिये कि हम आ रहे है। इङ्गलैण्ड के उदार और सहिष्णु सम्राट हमारे साथ सुयोग्य सेनापति सिवार्ड तथा दस हजार सैनिको को भेज रहे है। सिवार्ड से बढ कर इस पूरे ससार (Christendom) मे कौन अनुभवी और अच्छा सैनिक है ?

रौस : ओ ! काश ! जैसी अच्छी खबर है वैसा ही अच्छा उत्तर मै आपको दे पाता ! लेकिन मेरे पास इसके लिये शब्द नही है। जो कुछ भी है वे तो सिर्फ किसी निर्जन वन मे पुकारे जाने चाहिये जहाँ कोई उन्हे न सुन सके।

मैकडफ : किससे सम्बन्धित हैं तुम्हारे वे शब्द मेरे भाई ! क्या सर्व-साधारण से सम्बन्ध रखने वाली कोई बात है या उनमे किसी एक ही व्यक्ति के जीवन का दु ख छिपा है ?

रौस : प्रत्येक मनुष्य जिसका भी हृदय सच्चा है वही इस दु.ख का भागी है लेकिन भाई ! इसका मुख्य सम्बन्ध तुम्हारे ही जीवन से है।

मैकडफ : अगर मेरे जीवन से है तो बताओ। मुझसे अब छिपाओ नहीं भाई ! बता दो मुझे शीघ्र क्या बात है ?

रौस : पर मुझे डर है कि यह सुन कर तुम्हारे कान मेरी जीभ से घृणा न करने लग जाये क्योकि वे ऐसा ही दु खदायी समाचार सुनेंगे जैसा किसी ने कभी नही सुना होगा।

मैकडफ : ठीक है ! मै समझ गया। मै समझ गया भाई ! जो तुम कहोगे।

रौस : तुम्हारे महल पर अचानक ही उस जालिम ने छापा मार कर अधिकार कर लिया और तुम्हारी स्त्री और बच्चों को निर्दयता मे अपनी तलवार के घाट उतार दिया। बस अब आगे मत पूछो। अगर उस मृत्यु-काण्ड की सारी बातें तुम्हे बताने लगूंगा तो सच भाई ! उन अभागो के साथ तुम भी इसी क्षण इस संसार मे चल बसोगे।

मैलकॉम : है ! हे दयालु ईश्वर ! क्या है यह तेरा बनाया हुआ प्राणी ! मैडकफ ! मेरा भाई ! इस तरह अपनी आंखो के आंसुओ को छिपाने का प्रयत्न न करो। बह जाने दो हृदय की इस पीडा को। रोओ मेरे भाई ! बोलो कुछ। इस तरह आंखे फाडे गुमसुम न खडे रहो। जो पीडा अन्दर ही अन्दर दबी रह जाती है और किसी तरह बाहर नही निकल पाती उससे हृदय फट जाता है।

मैकडफ : क्या मेरे वे लाल तक भी उस चाण्डाल की तलवार से नहीं बचे ?

रौस : कोई भी नही। स्त्री-बच्चे जो कुछ भी उनके सामने आया उनकी ही गरदने कट-कट कर जमीन पर गिर पडी।

मैकडफ़ : और ऐसे समय मे मै यहाँ था! ओह! क्या मेरी पत्नी भी मुझे छोड़ कर चली गई?

रौस : हाँ, मै पहले ही बता चुका हूँ।

मैलकॉम : धैर्य्य रखो मैकडफ! हम उनके खून की एक-एक बूंद का बदला लेगे।

मैकडफ़ : क्या उस चाण्डाल के बच्चे नही है जो उसका हाथ मेरे मासूम बच्चो पर उठा। मेरे प्यारे लाल! कहाँ हो तुम? क्या कहा तुमने? सभी मुझे अकेला छोड कर इस दुनिया से चले गये? ओ नरक के जल्लाद! क्या तेरी तलवार ने मेरे सभी बच्चो का खून पी लिया? बताओ मुझे, क्या मेरी स्त्री और मेरे वे सभी लाल उस हत्यारे की एक ही चोट से मुझसे पराये हो कर चले गये?

मैलकॉम : घबराओ नही भाई! एक बहादुर आदमी की तरह धीरज रखो।

मैकडफ़ : रखूँगा। धीरज रखूँगा पर कैसे रखूँ, मुझे बताओ मै कैसे धीरज रखूँ? किसका हृदय ऐसे दु ख से नही फट जायेगा? फिर मै भी तो एक प्राणी हूँ। मै मेरे उन प्यारे लालो को, मेरी उस प्यारी पत्नी को कैसे एक क्षण मे भूल जाऊँ? कैसे उन्हे भूल जाऊँ, बताओ मुझे। हो नही सकता कि मुझे इस तरह बरबाद करने मे भगवान ने स्वय भाग न लिया हो। ठीक है, पर ओ पापी मैकडफ! सबसे बडा तो उन मासूमो की हत्या का कारण तू है। तूने खून किया है उनका। ओह! अब क्या हूँ मै? कुछ भी नही।…मै जानता हूँ कि यह मेरे ही कारण हुआ है नही तो उनका क्या दोष था जिससे इस निर्दयता के साथ वे मारे जाते?

हे ईश्वर ! उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करना ।

मैलकॉम : दु खी मत हो मैकडफ । बल्कि इस दु ख को क्रोध की चिनगारियो मे बदल डालो । अपने हृदय को ऐसा पत्थर बना लो जिस पर तुम अपनी तलवार की धार तेज कर सको । मेरे मैकडफ ! इस तरह अपने हृदय को न गिराओ बल्कि क्रोध के उवाल के साथ इसे ऊपर उठने दो ।

मैकडफ : अब मै क्या करूं ? उस दयालु ईश्वर ने ही मेरे प्यारे स्त्री-बच्चो को मुझसे छीन लिया नही तो ओ स्कॉटलैण्ड के शैतान हत्यारे ! सच, अगर तू मेरी तलवार के सामने आ कर एक बार भी बच कर निकल जाये तो फिर मैं ईश्वर से यही प्रार्थना करूँगा कि तुझे इस पृथ्वी पर अमर कर दे । पर अब क्या ? मेरा रोना और कुछ भी बढ-बढ कर बाते करना ठीक स्त्रियो जैसा ही है ।

मैलकॉम : अब तुम्हारे शब्दो से सच्ची वीरता की चिनगारी निकल रही है मैकडफ ! आओ, सम्राट के पास चले । उस आक्रमण के लिये हमारी सेनाएँ तैय्यार है । अब तो केवल कमी यहाँ से चलने भर तक की है ! मैकबेथ अब हमारे बदले का शिकार बनने से नहीं बच सकता । उधर ईश्वर भी अपनी दैवी शक्तियो को हमारी सहायता करने के लिए लगा रहा है ।

कुछ क्षणो के लिये और खुश हो ले ओ चाण्डाल ! कितना भी आराम कर ले, कितना भी जुल्म कर पर यह जान ले कि बड़ी से बडी रात भी सुबह की किरणो के साथ ही समाप्त हो जाती है ।

[प्रस्थान]

पांचवां अंक

दृश्य १

[डन्सीनेन । राजमहल का एक कमरा । एक दासी और डाक्टर का प्रवेश]

डॉक्टर : तुम्हारे साथ-साथ देखते हुए मुझे दो रात हो गई लेकिन मुझे तो कुछ भी नही मिला जिससे मै तुम्हारी बात को सच मान लूँ। अन्तिम वार कब तुमने उसे शयनागार मे जाते हुए देखा था ?

दासी : जबकि सम्राट युद्धक्षेत्र मे गए हुए थे तब मैने उसे अपने विस्तरे से उठते हुए और कपडे पहनते हुए देखा था। उठ कर उसने अपनी अलमारी खोली थी और उसमे से कागज़ निकाल कर पहले उसने उसे मोडा था और फिर उस पर कुछ लिख कर तुरन्त पढा और फिर मोहर लगा कर बन्द कर दिया था । इतना सब कुछ करते हुए भी वह खूब गहरी नीद सोई हुई थी।

डॉक्टर : खूब गहरी नीद सोई हुई थी ? और फिर भी जागे हुए व्यक्ति का-सा काम कर रही थी ? अवश्य ! कोई मानसिक पीडा उसे सता रही है। पर यह बताओ कि नीद की घबराहट मे इस तरह टहलते और सचमुच कुछ करते हुए देखने के अलावा क्या तुमने उसे कभी कुछ कहते हुए सुना ?

दासी : हाँ, लेकिन वह मै आपको नही बता सकती।

डॉक्टर : नही-नही, बताओ। यह बहुत ही आवश्यक है इसलिये तुम्हे बताना ही चाहिये।

दासी : नही, यह मै किसी को नही बता सकती क्योकि जो कुछ भी मै कहूँगी उसको पूरी तरह सच्चा सिद्ध करने के लिये मेरे पास

डॉक्टर : (स्वगत) इस बीमारी का इलाज तो मेरी बुद्धि और सामर्थ्य के परे है। फिर भी मै बहुत-से ऐसे लोगो को जानता हूँ जो नीद मे चलते-फिरते थे और जो अपने अन्तिम समय मे ईश्वर का नाम लेते हुए अपने बिस्तरो पर ही मरे है।

लेडी मैकबैथ : अपने हाथो को धो लो और कपडे पहन लो। इस तरह डर के मारे पीले मत दिखाई दो। मै तुमसे फिर कहती हूँ कि बैंको को दफना दिया गया है और अब वह अपनी कब्र से उठ कर बाहर नही आ सकता।

डॉक्टर : (स्वगत) क्या ऐसा भी ?

लेडी मैकबैथ : सो जाओ। जाओ, सो जाओ। कोई दरवाजा खटखटा रहा है। आओ, आओ अपना हाथ मुझे पकडाओ। अब जो कुछ भी होना है उसे कौन रोक कर बदल सकता है ? जाओ, सो जाओ। बस ··· ।

[जाती है।]

डॉक्टर : अब क्या वह अपने बिस्तरे पर सोने के लिये जा रही है ?

दासी : सीधी वही।

डॉक्टर : बुरी-बुरी अफवाहे बाहर फैली हुई है। भयानक अपराध मनुष्य के मस्तिष्क को उस भयानक स्थिति मे ले जा कर पागल-सा बना देते है कि वे अपने उन तकियो से अपने सारे भेद कहने लगते है जो उनकी कुछ भी बात नही सुन सकते। उसे तो किसी महात्मा या सन्त की आवश्यकता है। डॉक्टर उसे ठीक नही कर सकता। हे ईश्वर ! मेरे ईश्वर ! हम सबको क्षमा कर दो और उसकी तरफ देखो। उसके सामने से उन सब [illegible] हटा दो [illegible] की पीडा का कारण हो। अच्छा दि[illegible] इस [illegible] देख कर तो मेरा म[illegible] बैचैन-सा [illegible]

तरह आश्चर्य्य से भर गई है। बहुत-सी बाते एक साथ मस्तिष्क मे उठती है पर उन्हे कहने का साहस मै नही कर सकता।

दासी : अच्छा, डॉक्टर अलविदा।

[वे जाते हैं।]

दृश्य २

[डन्सीनेन के पास]

[नक्कारों की आवाज़। मैटियथ, कैथनिस, ऐङ्गस, लैनोक्स तथा कुछ सैनिकों का रग-विरगे झडे लिये हुए प्रवेश]

मैटियथ : अँग्रेजी सेनाएँ अब पास आ गई है। मैलकॉम, उसके चाचा सिवार्ड, और वह प्यारा मैकडफ ये सभी उसका सेनापतित्व कर रहे है। उनके दिलो मे बदले की आग जल रही है। ठीक भी है, क्योकि जो-जो घाव उनके दिल पर कसक रहे है और जिनसे उनके अन्दर यह आग-सी लगी हुई है उससे तो कोई मरा हुआ आदमी भी होता वह भी भयानक से भयानक रक्तपात करने के लिये उत्तेजित हो उठता।

ऐङ्गस चलो बरनम वन तक चले। उसी रास्ते वे आ रहे है, वही चल कर हम उनसे मिलेगे।

कैथनिस : क्या तुममे से किसी को पता है कि डोनलबेन भी अपने भाई के साथ है या नही ?

लैनोक्स : नही, वह उनके साथ नही है। मुझे उन सब सरदारो के नाम मालूम है जो भी उनके साथ है। सिवार्ड का पुत्र साथ है और उसके अलावा, बहुत-से ऐसे नवयुवक है जो पहली बार रणभूमि मे अपनी बहादुरी और रण-कौशल का परिचय देने आये है।

मैटियथ : वह घृणित चाण्डाल क्या कर रहा है इस समय ?

नस : वह मजबूती के साथ डन्सीनेन के विशाल किले की नाके-
बन्दी कर रहा है। कुछ लोग तो कह रहे है कि वह पागल हो गया
है और कुछ जो उससे इतनी घृणा नही करते है कह रहे है कि
यह पागलपन नही बहादुरी का नशा है। लेकिन अब यह निश्चित
है कि वह अपने असन्तुष्ट अनुयायियो को अब और अधिक वश
मे नही रख सकता।

ऐङ्गस : अब तो उसे ऐसा लग रहा है मानो दबी हुई हत्याएं उसके
पास आ कर पुकार रही है। प्रत्येक क्षण लोगो का विश्वास उस
पर से उठता जाता है और पूरी तरह एक विद्रोह की-सी सूरत
बन गई है। जिनको भी वह कोई आज्ञा देता है वे किसी दबाव
और मजबूरी के कारण ही उसका पालन करते है नही तो अन्दर
हृदय मे कोई भी प्रेम उसके लिये शेष नही रह गया है। अब तो
उसे यह साम्राज्य, और यह उसका वैभव इस तरह नीचे लटकता
हुआ दीख रहा है जैसे कोई बौने कद का चोर किसी विशाल दैत्य
के कपड़े पहन ले तो वे उसके शरीर से नीचे लटक कर गिरने-से
लगते हैं।

मैंटियथ : अब तो उसका अग-अग अपने आपको इस चाण्डाल के साथ
रहने से कोसता है, तब फिर अगर कभी दुख से इसका मस्तिष्क
पागलो की तरह कभी चौक उठता है और कभी बैठ-सा जाता है
तो इसमे इसका क्या दोष है ?

कैथनिस : अच्छा, चलो। जो हमारा सच्चा सम्राट है उसके प्रति अपना
कर्त्तव्य पालन करने के लिये आगे बढे। हमे चल कर उसके साथ
मिल जाना चाहिये जोकि हमारे देश को इसी तरह मुक्त कर
आ रहा है जैसे कोई डॉक्टर किसी बीमार को दवाई दे कर उ
सुखी करता है। हमे चाहिये कि अपने इस दु:खी देश की भल

के लिये ही हम अपने खून की प्रत्येक वूंद वहाये।

लैनोक्स : या जैसे ओस की वूंद किसी फूल को सच्ची शोभा देती है उसी तरह हम भी अपना खून वहाकर मैलकॉम को सम्राट वना कर गौरवान्वित करे और इस चाण्डाल सरकडे को उसी खून मे डुवो दे। आओ, चलो वरनम की ओर चले।

[जाते हैं।]

दृश्य ३

[डन्सीनेन। महल का एक कमरा]

[मैकवैथ का डाक्टर तथा कुछ अनुचरो के साथ प्रवेश]

मैकवैथ : मत लाओ हमारे पास अव कोई खवर। जाने दो, छोड जाने दो उन सवको हमे अकेला। जव तक वरनम का वह वन स्वय उठ कर डन्सीनेन से टकराने नही चला आयेगा तव तक हमे कोई भी नही डरा सकता। हि'! क्या उस छोकरे मैलकॉम से हम डरे? क्यो? नही; हमे उससे डरने की कोई आवश्यकता नही, आखिर वह तो किसी औरत की कोख ही से जन्मा है। हमे याद है उन पिशाचो ने, जो यह जानते थे कि भविष्य मे क्या होगा यह कहा था: 'डरो नही मैकवैथ! औरत की कोख से जन्मा कोई भी आदमी तुम्हे कभी नही गिरा सकता।' तव क्या? चले जाओ ओ झूठे और गद्दार थेनो! हमे अकेला छोड कर चले जाओ और मिल जाओ उन आरामपसन्द अंग्रेजी फौजो के साथ। हमारा मस्तिष्क जो हमे सभी कामो मे रास्ता दिखाता है और हमारा हृदय जो हमारे शरीर मे स्थित है किसी तरह की शङ्का या भय से नही हिल सकते।

[एक सेवक का प्रवेश]

ओ पीले चेहरे वाले मूर्ख! शैतान तुझे इस धरती पर से उठा ले!

यह बुरी और घृणित हंस की-सी दृष्टि तूने कहाँ से पाई है ?

सेवक : महाराज ! दस हजार है वहाँ ।

मैकबैथ : क्या ? दस हजार हंस है, नीच ?

सेवक : हंस नही सैनिक, महाराज !

मैकबैथ : चला जा, और जा कर अपने चेहरे को किसी काँटे से छेद ले जब तक कि उससे खून न निकल आये। उस खून से तेरे चेहरे का यह पीला रग तो मिट जायेगा, ओ कमल की डडी का-सा डरपोक कलेजा रखने वाले नीच ! कैसे सैनिक है मूर्ख ! बता। तेरी आत्मा की मौत है न ? तेरे चेहरे का यह पीला रग ही यह बताने के लिये काफी है कि तू डरा हुआ है । हम पूछते है, ओ पीले चेहरे वाले डरपोक लडके ! बता कैसे सैनिक ?

सेवक : अग्रेजी सेना के सैनिक महाराज ।

मैकबैथ : चला जा अपने इस बुरे चेहरे को ले कर हमारी आँखो से दूर !

[सेवक जाता है ।]

(स्वगत) सीटॉन जब हम तुम्हे देखते है तो हमारा दिल बैठ-सा जाता है। हम कहते है सीटॉन ! कि यह आक्रमण या तो हमारे सुख को हमेशा के लिये निश्चिन्त बना देगा या हमे इस राजसिंहासन से नीचे गिरना होगा। बहुत दिनो तक हम जीवित रह लिये हैं। अब हमारे जीवन का शरद काल पास आ गया है जबकि हमारी सारी शक्तियाँ पतझड के झरते पत्तों की तरह हमारा साथ छोड रही है। जैसा लोग अपने बुढापे के बारे मे सोचा करते है वैसा भी तो हम अपने बारे मे विश्वास नही कर सकते कि अब कोई हमे प्रेम करता है या किसी के हृदय मे हमारे लिये इतना सम्मान बचा है कि वह हमारी आज्ञा का पालन करे। कोई भी नही सीटॉन ! हमारे सारे साथी, सैनिक और कोई भी तो हमारा साथ नही देगा और

हमे ऐसी आशा भी नही करनी चाहिये, वे हमारे साथ
उसकी जगह पर सभी के दिलो से हमे बुरे-बुरे शा
जिनको डर या चापलूसी के कारण मुँह पर सु
हिम्मत नही करता पर अन्दर दिलो को तहो मे
है। डरपोक चापलूस खुल कर कुछ नही कह सकते
कि इनके दिल की हिम्मत मर चुकती है।

[सीटॉन का प्रवेश]

सीटॉन : महाराज की क्या आज्ञा है ?

मैकबैथ : क्या कोई और नई खबर है ?

सीटॉन : स्वामी ! जो भी खबर मिली थी उसका मालूम हुआ कि वह बिलकुल ठीक है।

मैकबैथ : तब हम लडेगे। उस क्षण तक लडेगे जब तक से कट कर हमारा सारा मांस नीचे न गिर पडे कवच।

सीटॉन : लेकिन अभी तो इसकी ज़रूरत नही है महार

मैकबैथ : हम उसे अभी पहनेगे। कुछ घुडसवारो को भे हुक्म दे दो कि चारो तरफ चक्कर लगाये और ज मे डर की बाते करता मिले उसे तलवार के घाट कवच दो।

क्यो डॉक्टर ! कैसा है तुम्हारा बीमार अब ?

डॉक्टर : उनको शरीर की इतनी बीमारी नही है स्वा मस्तिष्क मे कौन-सी डरावनी-सी शक्ले दीखती सी हो उठती है।

मैकबैथ : ठीक करो उन्हे डॉक्टर ! क्या तुम ऐसे म सही हालत मे नही ला सकते जो इस तरह पा

हो ? जो भी दुःख उसके अन्दर जड़ जमाये हुए है उसे दूर करके किसी तरह सारी मुसीबत से उसे छुटकारा दिलाओ डॉक्टर किसी अच्छी दवाई से उसे बेहोश करके उसके दिल पर पड़े हुए सारे दुःख को धो कर मिटा डालो।

डॉक्टर : इस हालत मे तो बीमार को खुद अपनी देख-भाल करनी चाहिये स्वामी !

मैकबैथ : तो फिर अपनी ये सभी दवाइयाँ कुत्तो के सामने फेंक दो डॉक्टर ! हमे किसी की जरूरत नही है। कोई नही चाहिये हमे। आओ हमे अपना कवच पहना दो। हाँ, हमे हमारा राजदण्ड भी दो। . . .

डॉक्टर ! सभी थेन हमे छोड कर जा रहे है। जल्दी आओ सीटॉन। .. हाँ, अगर तुम कर सको तो डॉक्टर ! यह मालूम करो मेरे राज्य स्कॉटलैण्ड की बीमारी क्या है और फिर इसका इलाज करके इसको ठीक कर दो न डाक्टर ? हम तुम्हारी तब तक बधाइयाँ गायेंगे जब तक हमारी आवाज की गूंज भी हमारे साथ मिल कर तुम्हारी बधाई न गाने लग जाये।

खीच लो इस कवच को। हम कहते है उतार दो इसे। क्यो डॉक्टर ! क्या तुम्हारे पास ऐसी कोई दवाई नहीं है जो हमारे राज्य को इन अंग्रेजो से बचा सके। क्या तुमने उनके बारे मे कुछ सुना है डाक्टर ?

डॉक्टर : हाँ स्वामी ! आपकी युद्ध की तैयारी ने ही हमे सब कुछ बता दिया है।

मैकबैथ : लाओ, पहना दो, हमे अपना कवच। जब तक बरनम वन स्वयं उठ कर डन्सीनेन तक नहीं चला आयेगा तब तक हमारी बर्बादी और मौत का हमे तनिक भी डर नही है।

डॉक्टर : (स्वगत) काश ! अगर मै एक बार डन्सीनेन से दूर बच कर निकल जाऊँ तो कितनी भी बडी लालच या मोह मुझे यहाँ वापिस नही ला सकता ।

[प्रस्थान]

दृश्य ४

[बरनम वन के पास वाला स्थान]

[नक्कारों की आवाज । कुछ सैनिक रंग-बिरंगे झंडे लिये हुए । मैलकॉम, वृद्ध सिवार्ड, उसका पुत्र, मैकडफ, मैंटियथ, कैथनिस, ऐंङ्गस, लैनोक्स, रौस तथा सैनिको का मार्च करते हुए प्रवेश]

मैलकॉम : भाइयो ! अब वह दिन दूर नही है जबकि फिर से हमारे देश मे प्रत्येक के घर मे सुख और शान्ति होगी और किसी तरह का भी भय नही रहेगा ।

मैंटियथ : इसमे हमे तनिक भी सन्देह नही है ।

सिवार्ड : हमारे सामने यह कौन-सा वन है ?

मैंटियथ : बरनम वन है ।

मैलकॉम : मेरा ख्याल है कि हर एक सैनिक एक-एक झाडी काटकर उसे अपने सामने करके चले क्योकि इस तरह छिपे रहने से हमारी ताकत का दुश्मन को कुछ भी ठीक-ठीक पता नही चल सकेगा और जो भी दुश्मन के जासूस हमारे बारे मे जा कर खबर देगे सब झूठ निकलेगी ।

सैनिक : जो आज्ञा स्वामी !

सिवार्ड : वह अत्याचारी अभी तक डन्सीनेन मे ही है और शायद वह इसे भी बरदाश्त कर ले कि हम उसके चारो तरफ घेरा डाल ले । इसके सिवाय तो हमे और कुछ पता ही नही लगा है ।

मैलकॉम : यही तो वह आशा करता ही है क्योकि जब भी मौका देखेंगे, तो क्या छोटे क्या बडे, सभी उसके विरुद्ध विद्रोह कर उठेंगे। सच तो यह है कि कोई भी सच्चे हृदय से उसकी सेवा नही करता वल्कि किसी दबाव से उसे करनी पडती है इसी लिये करता है।

मैकडफ : जब तक युद्ध का परिणाम निकल न आये तब तक हमे ऐसे विश्वास के साथ यह नही कहना चाहिये। इस बीच हमे चाहिये कि पूरी तरह से हम युद्ध की तैयारियाँ कर डाले।

सिवार्ड : अब वह समय पास आ गया है जो हमे पूरी तरह से बतायेगा कि क्या हमने पाया और क्या खोया। केवल कल्पना के वल पर की गई आशा तो निश्चय रूप से कभी सच्ची निकलती नही। सच्चा परिणाम तो हमारी सेना की दुश्मन पर पडती हुई मार से निकलेगा जिसके लिये वह अब जा रही है।

[सेना मार्च करती हुई जाती है।]

दृश्य ५

[डन्सीनेन। राजमहल के भीतर]

[मैकबैथ, सीटॉन तथा नक्कारो को बजाते हुए और झंडो को लिये हुए सैनिको का प्रवेश]

मैकबैथ : वाहर की दीवारो पर हमारे झडे फहरा दो। अभी तक सभी यह चिल्ला रहे है कि दुश्मन वढा आ रहा है पर हमारा यह मजबूत किला उन घेरा डालने वालो की हर कोशिश पर हँस रहा है। डालने दो उन्हें घेरा। मत हटाओ उन्हे वहाँ से जब तक भूख-प्यास से स्वय तडप-तडप कर वे मर न जायें। काश! आज उनके साथ अगर हमारी सेनाएँ मिल न जाती तो हम उनका इस

तरह डट कर मुकाबिला करते कि उन्हे यहाँ से सीधे अपने देश इङ्गलैण्ड भाग जाना पडता ।

[भीतर औरतें चिल्लाती है ।]

यह क्या आवाज ?

सीटॉन : कुछ औरते चिल्ला रही है महाराज !

मैकबैथ : अब तो हमारे अन्दर लेशमात्र भी डर नही रह गया है, नही तो एक वक्त था जब कि रात को कोई चीख सुन कर डर से हमारा शरीर ठडा-सा पड जाता था और किसी डरावने किस्से को सुन कर हमारे रोये सीधे खडे हो जाते थे मानो उनमे भी कोई जिन्दगी आ गई हो । अब मै डर को पूरी तरह पी गया हूँ । हमारे हत्या से भरे हुए भावो के साथ जो डर घुसा हुआ है वह अब हमे कभी भी हतोत्साहित नही कर सकता ।

[सीटॉन का पुनः प्रवेश]

यह कौन चिल्लाया ? कहाँ से यह आवाज आई है ?

सीटॉन : मेरे स्वामी ! महारानी का स्वर्गवास हो गया ।

मैकबैथ : हैं ! वह चली गई ? काश ! इसके कुछ दिन बाद ही वह जाती और मै यह सुनता तो उसके लिये ठीक वक़्त भी होता ! हाय ! आज से कल करते हुए जीवन का एक-एक दिन बीत रहा है और हम अपने भाग्य के अनुसार अपनी अन्तिम घडियो की तरफ बढ रहे है। बीती हुई घड़ियाँ पुकारती जाती है—मूर्ख प्राणियो ! तुम सब अपनी कब्रो की ओर बढ रहे हो । तब, बुझ जाने दो। बुझ जाओ ओ जीवन के टिमटिमाते दीप ! बुझ जाओ ! क्या है जीवन ? केवल एक चलती हुई छाया ! ठीक उसी अभिनेता की तरह जो कुछ क्षणो के लिये रगमच पर आ कर हँसता-रोता है और फिर हमेशा के लिये सामने से चला जाता है। प्राणी

का यह जीवन मूर्खों की कही हुई वह कहानी है जिसमे ध्वनि और भावनाएँ है पर हाय ! क्या अस्तित्व है उनका ?

[एक दूत का प्रवेश]

तुम भी अपनी जीभ हिलाने आये हो न ? कहो, तुरन्त कहो क्या कहने आये हो ।

दूत : मेरे दयालु महाराज ! मै वही कहना चाहता हूँ जो मैने देखा है पर मै नही जानता कि उसे कैसे कहूँ ।

मैकवैथ : हाँ-हाँ, कहो ।

दूत : स्वामी, जब मै पहाडी पर खडा हो कर पहरा दे रहा था तो ज्यो ही मैने वरनम वन की ओर देखा तो मुझे लगा कि पूरा वन उठा चला आ रहा है ।

मैकवैथ : झूठ ! गुलाम कही के !

दूत : नही महाराज ! अगर मेरी वात सच न हो तो मै आपका कोई भी दण्ड सहने के लिये तैय्यार हूँ । महल से तीन मील की दूरी मे देखिये । मै सच कहता हूँ स्वामी ! वरनम चला आ रहा है ।

मैकवैथ : अगर तुम्हारी वात झूठ निकली तो समझ लो पहला पेड जो भी हमारी आँखों के सामने आयेगा उसी पर हम तुम्हे जीवित ही लटका देगे और उस वक्त तक रहने देगे जब तक कि भूख-प्यास से तड़प-तडप कर तुम मर न जाओ और अगर तुम्हारी वात सच निकली तो तुम हमारे साथ यही व्यवहार करना, हमे कोई शिकायत नही होगी ।

ओह ! हम अपने इरादो से लडखडा रहे है । लगता है कि उन पिशाचो की वाते ठीक निकल रही है कि 'डरो नही मैकवैथ ! जब तक वरनम वन डन्सीनेन की ओर आता दिखाई न पडे तब तक मत डरना ।' वन डन्सीनेन की ओर बढा चला आ रहा है ।

हाथो मे हथियार ले लो और दुश्मन से टकरा जाओ मैकबैथ। जाओ। जो कुछ भी वह कह रहा है अगर उसने सचमुच देखा है तो फिर उससे छिप कर कहाँ दूर भाग सकते हो ? फिर यहाँ महल मे किस लिये बैठे हो ?

ओह ! अब मै इस जीवन से, इस सारी दुनिया से पूरी तरह ऊब गया हूँ और चाहता हूँ, काश ! यह सारी दुनिया एक साथ ही टूक-टूक हो कर बिखर जाये। इसमे प्रलय आ जाये।

खतरे की घंटी बजा दो। ओ हवा ! जोर से तूफानी हो कर बहो। आ जाओ, ओ प्रलय की आग ! हम वीरो की तरह कवच पहन कर सामना करेगे।

[प्रस्थान]

दृश्य ६

[डन्सीनेन। राजमहल के सामने एक मैदान]

[नक्कारो की गूँज के साथ फहराते हुए झंडे। मैलकॉम, वृद्ध सिवार्ड, मैकडफ और उनकी सेनाएँ पेड़ो की डालियाँ ले कर प्रवेश करती है।]

मैलकॉम : हम लोग अब राजमहल के बहुत निकट पहुँच चुके है। अब सामने लगे हुए इन डालियो के पर्दो को गिरा दो और अपनी पूरी ताकत के साथ सामने आ जाओ।

आओ मेरे सुयोग्य चाचा ! आप अपने वीर पुत्र के साथ आक्रमण करते समय सबसे आगे वाली टुकडी का सचालन करेगे और शेष का अपनी योजना के अनुकूल हम लोग करेगे।

सिवार्ड : अच्छा, अलविदा ! आज रात को ही मैकबैथ की सेना से सामना है। यदि हमने उन्हे रणभूमि से भगा नही दिया तो हम प्रण करते है कि जीवित रह कर वापिस नही आयेगे।

मैकडफ़ : रण-दुन्दुभि बजने दो। खून और मौत के दूतो की तरह बिगुलो को जोर-जोर से पुकारने दो।

[सभी जाते हैं।]

दृश्य ७

[रणभूमि का दूसरा भाग। युद्ध की चीत्कार। मैकबैथ का प्रवेश]

मैकबैथ : उन्होने मुझे चारो तरफ से इस तरह घेर लिया है मानो किसी खूंटे से बाँध दिया हो। सब तरफ दुश्मन है। मै कही भाग भी तो नही सकता। लेकिन क्यों ? क्यो भागूं ? मै एक रीछ की तरह बहादुरी के साथ लडूंगा। कौन है ऐसा जो औरत की कोख से नही जन्मा है ? उसी से मुझे डरना चाहिये नही तो और कौन मेरा क्या बिगाड सकता है ?

[नवयुवक सिवार्ड का प्रवेश]

युवक सिवार्ड : क्या नाम है तेरा ?

मैकबैथ : हमारा नाम ? डर जायेगा तू सुन कर उसे।

युवक सिवार्ड : कभी नही, नरक के दैत्यो के-से भयानक से भयानक नाम से अपने को क्यों न पुकार मै कभी नही डर सकता। बता, क्या नाम है तेरा ?

मैकबैथ : तो सुन, मैकबैथ !

युवक सिवार्ड : ओ, शैतान भी इससे अधिक घृणित नाम मेरे कानो को नही सुना सकता था।

मैकबैथ : न ! न ! न ! यह कह कि इससे अधिक डराने वाला नाम नही सुना सकता था।

युवक सिवार्ड : झूठ, झूठ बोलता है तू ओ घृणित अत्याचारी ! मै अपनी तलवार की धार पर जो कुछ भी तू कह रहा है उसे अभी

झूठ सावित करता हूँ।

[वे दोनों लडते है और युवक सिवार्ड मारा जाता है।]

मैकबैथ : जा! तू औरत की कोख से जन्मा था न? जो भी औरत की कोख से जन्मा तलवार या कोई भी हथियार ले कर युद्ध करने आयेगा मै उस पर हँसूगा और फिर घृणा से मुँह फेर लूंगा।

[युद्ध की चीत्कार। मैकडफ का प्रवेश]

मैकडफ़ : इधर से ही आवाज आई है। ओ चाण्डाल! अपना चेहरा तो दिखा। अगर तू मेरी तलवार के अलावा किसी दूसरे के हाथो मारा गया तो मेरी स्त्री और मेरे नन्हे-से बच्चो की प्रेतात्मा वदले के लिये फिर भी भटकती हुई मुझे चैन की नीद नही सोने देगी। मै इन गरीव सैनिको पर हाथ नही उठा सकता जो हमसे लडने के लिये भाले और तलवार उठाने के लिये किराये पर रखे गये है। या तो चाण्डाल! तेरा खून पी कर यह मेरी तलवार तुझे हमेशा के लिये जमीन पर सुला देगी या कायरो की तरह विना कोई वीरता का काम किये वापिस म्यान मे चली जायेगी। आह! इस उठती हुई आवाज से मुझे लगता है कि तू वहाँ है। इतने जोर से वजते रण के इस वाजे से लगता है कि कोई सवसे वडा सैनिक वहाँ है और वह तेरे सिवाय और कोई नही हो सकता। आह, मेरे सौभाग्य! ले चल मुझे उधर। इससे अधिक मै तुझसे और कुछ कामना नही करता।

[जाता है। रण की चीत्कार]

[मैलकॉम तथा वृद्ध सिवार्ड का प्रवेश]

सिवार्ड : इधर से आइये स्वामी! विना किसी तरह के विरोध या युद्ध के राजमहल हमारे हाथो मे आ गया है। उस अत्याचारी की प्रजा के लोग दोनो तरफ से लड रहे है। आपके सरदार थेन भी वडी

वहादुरी के साथ लोहा ले रहे है। आज की विजय अपने पक्ष मे ही घोषित हो चुकी है। वस अव वहुत थोडा ही काम करना वाकी है।

मैलकॉम : हमे दुश्मन भी तो ऐसे मिले है जो उलटे हममे ही मिल कर हमारी ओर से लड रहे है।

सिवार्ड : आइये सम्राट ! राजमहल में प्रवेश कीजिये।

[जाते हैं। युद्ध की चीत्कार उसी तरह सुनाई दे रही है।]

दृश्य ८

[रणभूमि का दूसरा भाग। मैकवैथ का प्रवेश]

मैकवैथ : अपनी ही तलवार से अपने आपको मार कर मै क्यो रोम के मूर्ख का-सा काम करूँ ? जव तक मुझे एक भी दुश्मन जीवित दिखाई देगा तव तक मै उन पर आग वरमाऊँगा।

[मैकडफ का प्रवेश]

मैकडफ : आ, ओ ! नरक के कुत्ते ! आ, लौट !

मैकवैथ : ओ तू ? सिर्फ मेरी नजरो के सामने आने से तू ही वचा रह गया है। आ, सामने आ। वैसे तेरे परिवार के खून से तो पहले ही मेरा जी भर गया है।

मैकडफ : इसका जवाव मै कुछ नही दूंगा दुष्ट ! मेरी यह तलवार इसका जवाव देगी। आ, तू कितना वड़ा शैतान है, शब्द नहीं कह सकते। आ।

[वे आपस में लडते हैं।]

मैकवैथ : तू वेकार अपनी ताकत गँवा रहा है मूर्ख ! हाँ, तू अपनी तलवार से मुझे उतनी ही आसानी से धराशायी कर सकता था जितनी आसानी से तू इसी तलवार से हवा को काट सकता है पर अव क्या कर सकता है तू। अपनी इस तलवार को उसके सिर

पर मार जहाँ इसका कुछ असर हो। मेरा जीवन तो किसी जादू के कारण सुरक्षित है और अगर तूने नही सुना हो तो सुन, औरत की कोख से जन्मा कोई भी आदमी मुझे कभी भी नही मार सकता।

मैकडफ : छोड दे भरोसा अपने इस जादू का और जिस भी देवता की पूजा तू करता हो उसे बता दे कि मैकडफ ठीक वक्त से पहले ही अपनी माँ के गर्भ से काट कर निकाल लिया गया था।

मैकबैथ : धिक्कार है तेरी उस जीभ को जो मुझसे ऐसी बाते कह रही है। ओह! इससे हमारे दिल की हिम्मत कुछ गिर रही है। तू गद्दार है। ऐसे गद्दार दोस्तो का, जो हमेशा दुहरी बाते करते है, कभी भी भरोसा नही करना चाहिये। जो कान मे कुछ वायदा करके जाते है और आशा के विरुद्ध काम कुछ दूसरा ही करते है, उन्हे कभी साथ नही रखना चाहिये। मै तुझसे नही लडना चाहता।

मैकडफ : तो फिर कायर! आत्मसमर्पण कर मेरे सामने और दूसरो को तेरे काले चेहरे का तमाशा देखने दे। हम तुझे किसी बहुत बड़े खूनी कैदी की तरह खम्बे से लटका देगे और उस पर लिख देगे कि 'देखो, यहाँ एक चाण्डाल विश्वासघाती लटका हुआ है, देखो उसे।'

मैकबैथ : आत्मसमर्पण और मै ? कभी नही। क्या मै उस छोकरे मैलकॉम के सामने झुक कर जमीन चाटूँगा ? नही, यह कभी नही हो सकता कि कभी भी लोग मेरे जीवन पर थूकने लगे। मै उन्हे कभी भी मुझे धिक्कारने का मौका नही दूँगा चाहे बरनम बन उठा हुआ डन्सीनेन की ओर चला आ रहा है और तू भी औरत की कोख से नही जन्मा है। मै अपनी अन्तिम श्वासो तक लडूँगा। अपनी इस ढाल से अपने शरीर की रक्षा करूँगा। आ मार ओ

मैकडफ ! मार ! धिक्कार है उसे जो हममे से पहले यह कहे कि बस, अब नही ।

[दोनो आपस मे लड़ते हैं । युद्ध की चीत्कार बराबर सुनाई दे रही है ।]

[इधर बाजे बजते हैं । सभी विजय प्राप्त करके रणभूमि से वापिस लौट रहे है । मैलकॉम, वृद्ध सिवार्ड, रौस, लैनोक्स, ऐङ्गस, कैथनिस, मैंटियथ, तथा अन्य सैनिको का नक्कारो की आवाज़ और झंडों के साथ प्रवेश ।]

मैलकॉम : काश ! जो साथी आज हमेशा के लिये हमसे बिछुड़ गये है वे इस समय हमारे बीच मे होते !

सिवार्ड : कुछ को तो बिछुडना ही पडता स्वामी ! लेकिन फिर भी जितने जीवित बच रहे है उन्हे देख कर ही मुझे आश्चर्य्य हो रहा है कि इतने कम बलिदान पर हम इतनी ऊँची विजय कैसे प्राप्त कर पाये ।

मैलकॉम : पर हाँ, मैकडफ कही दिखाई नही दे रहा है और आपका पुत्र भी तो कहाँ है कुछ मालूम नही ।

रौस : आपके पुत्र ने वीरगति प्राप्त की है सेनापति ! अपनी अन्तिम श्वास तक वह एक वीर योद्धा की तरह लडता रहा और जब तक शत्रु के हृदय तक पर अपने पौरुष का सिक्का नही जमा दिया तब तक वह हटा नही । एक सच्चे वीर की तरह वह इस ससार से गया है सेनापति !

सिवार्ड : तो क्या वह इस ससार मे नही है ?

रौस : हाँ सेनापति ! उसका शरीर रणभूमि से बहुत दूर ले आया गया है । इसमे जितने गुण है उन्हे याद करके मत रोइये नही तो क्या आँसुओं का कभी कोई अन्त होगा ?

सिवार्ड : पर यह बताओ मुझे, कि घाव उसकी छाती पर हुए थे या पीठ पर ?

रौस : छाती पर ही हुए थे सेनापति !

सिवार्ड : तो फिर मुझे कोई दुःख नही है। वह ईश्वर के पास पहुँच गया है। यदि जितने मेरे शरीर मे बाल है उतने भी मेरे पुत्र होते तो इससे अधिक गौरवशाली मृत्यु मै उनके लिये कोई नही समझता। तो फिर वह इस ससार को छोड़ कर चला गया ?

मैलकॉम : वस इतना ही नही सेनापति ! उस वीर की दुःखदायी मृत्यु पर मै अभी और आँसू वहाऊँगा।

सिवार्ड : नही, स्वामी ! अब उसके लिये और शोक नही करना चाहिये। वस इतने का ही वह अधिकारी है। वे सभी यही कह रहे है कि एक वीर योद्धा की तरह रणभूमि मे गिरा है वह, तो प्रकृति का सारा ऋण उसने चुका दिया है। इसलिये अब तो यही प्रार्थना कीजिये कि ईश्वर सदा उसे अपने पास रखे।

अब कोई दूसरी अच्छी खबर आती हुई मालूम होती है।

[मैकडफ मैकवैथ का कटा हुआ सिर लिये पुनः प्रवेश करता है।]

मैकडफ : वधाई है सम्राट को ! आज से आप स्कॉटलैण्ड के सम्राट है स्वामी ! देखते नही, दुराचारी का सिर कहाँ है जिसने आपके राज्य को हडपा था ! अब कोई डर नही। चारों ओर आजादी है। साम्राज्य के इन रत्नो के वीच मे मै आपको वैठा देख रहा हूँ जो अपने हृदय मे वही वधाइयाँ लिये हुए है। मै चाहता हूँ कि आप सभी जोर से मेरे साथ आवाज मिला कर कहे—'स्कॉटलैण्ड के सम्राट ! वधाई है।'

[वाजे बजते हैं।]

मैलकॉम : हमारे थेन और साथियो ! हम आप लोगो के हृदय से वहुत आभारी है और चाहते है कि शीघ्र से शीघ्र आप लोगो का ऋण चुकाये। अब से हम आपको 'अर्ल' वनाते है। यह पहला ही अव-

सर है जबकि स्कॉटलैण्ड मे कोई इस पद से सम्मानित हुआ हो। अब बताइये, आगे क्या करना होगा। सलाह दीजिये कि इस नये युग के प्रारम्भ मे क्या-क्या करना चाहिये जैसे जो हमारे साथी उस अत्याचारी के चगुल से छूट कर विदेश चले गये है उन्हे वापिस बुलाना और इस मरे हुए चाण्डाल हत्यारे के निर्दयी साथियो को और उस महारानी बनी हुई पिशाचिनी को पकड कर सामने लाना इत्यादि। लेकिन उसके बारे मे तो यह सुनने मे आया है कि उसने अपने ही हाथो से आत्महत्या कर ली है। इसके अलावा बताइये क्या और आवश्यक रूप से करना चाहिये। जो कुछ भी होगा उसे ईश्वर की कृपा से समय और अवसर के अनुसार हम अवश्य करेगे।

आप सभी लोगों को हम हृदय से धन्यवाद देते है और फिर प्रत्येक को अलग-अलग हम धन्यवाद देते है। हमें विश्वास है कि आप सभी स्कोन हमारा राज्याभिषेक करने अवश्य आयेगे। हम इसके लिये आप सभी को निमन्त्रित करते है।

[बाजे बजते हैं। प्रस्थान]